CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अ ९३/१९

ऊँची अटरिया रंग भरी

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

थालय
वाराणसी-५
9

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

7.2

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी प्रकाशन-१

ऊँची अटरिया रंग भरी

(लोकगीत संग्रह)

अ: 3/19
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

संकलनकर्ता एवं लिपिकार
राधावल्लभ चतुर्वेदी

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ-१

प्रथमावृत्ति] [सन् १९७७ ई०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

UNCHI ATARYA RANG BHARI

ऊँची अटरिया रंग भरी

(स्वरलिपि युक्त लोकगीत)

आम्नाय ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

प्रकाशक :

नरेन्द्र मोहन मेहरोत्रा

उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी

कैसर बाग, लखनऊ-१

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

सर्वाधिकार

उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी

आम्नाय-ग्रन्थालय
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

प्रथमावृत्ति—फरवरी, १९७७

मूल्य रु० २५-००

मुद्रक :

विद्या मन्दिर प्रेस

रानी कटरा, चौक,

लखनऊ-३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

प्रकाशकीय

अपने देश के विभिन्न प्रदेशों के लोकगीतों में, भारत के जनमानस का उल्लास और उसकी आकांक्षाएँ बहुत भावपूर्ण रीति में चित्रित हुई हैं। काव्य की दृष्टि से जो सहज, सुबोध और मार्मिक भावों की धारा उनके द्वारा प्रवाहित हुई है वह अनुपम है। स्वर और लय की दृष्टि से भी ये गीत बहुत ही मनोमोहक हैं। इन गीतों में हमारे अभिजात संगीत के बीज का भी अंशतः दर्शन होता है।

काव्य की दृष्टि से तो इन गीतों का कुछ अध्ययन हुआ है और अंशतः इनके कुछ संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं, परन्तु संगीत की दृष्टि से इनपर बहुत कम कार्य हुआ है। श्री राधावल्लभ चतुर्वेदी, आकाशवाणी, लखनऊ में लोकसंगीत के प्रसार का कार्य कई वर्षों से कर रहे थे। उन्हें उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के लोकगीत के गायकों के सुनने और उनके गीतों को प्रसारित करने का अपूर्व अवसर प्राप्त था। वह केवल प्रसारक के पद के उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं करते थे, वह लोकगीत के मर्मज्ञ और प्रेमी भी थे। अत: लोकगीत के जो भी अच्छे गायक आकाशवाणी में प्रसारण के लिये आते थे, उनके गीतों का वह सुरुचिपूर्ण चयन करते थे, और उन्हें स्वरलिपि में भी निबद्ध किया था। हमारी यह बड़ी इच्छा थी कि इस संग्रह को हम उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की ओर से प्रकाशित करें। दुर्भाग्यवश श्री राधावल्लभ चतुर्वेदी का निधन हो चुका था। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रम्भा चतुर्वेदी और उनकी आत्मजा कुमारी नीलम चतुर्वेदी के सहयोग से यह संग्रह हमें मिला और उन दोनों की इसके प्रकाशन की अनुमति भी हमें प्राप्त हो गयी। हम इन दोनों के बहुत आभारी हैं कि उन्होंने इस सुन्दर रचना को प्रकाशित करने के लिये अकादमी को अपनी अनुमति दी है। यह रचना "ऊँची अटरिया रंग भरी" प्रसिद्ध गान के शीर्षक से प्रकाशित हो रही है। इसमें सरिया, सोहर, अन्नप्राशन, मूँड़न, जनेऊ, विवाह, द्वाराचार, कलेवा, जेवनार, विदाई, चकिया, पनघट, कजरी, चौमासा, चैती, सोहनी, झूला, झूमर, रसिया इत्यादि कई प्रकार के गीत स्वरलिपि में प्रकाशित किये जा रहे हैं। प्रत्येक प्रकार के गीत का पहले संक्षिप्त वर्णन किया गया है उसके बाद वह गीत स्वर और लय में मुद्रित किया गया है।

आशा है संगीत प्रेमी इस संग्रह का स्वागत करेंगे।

दिनांक ५ फरवरी, १९७७

जयदेव सिंह
अध्यक्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधावल्लभ चतुर्वेदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे चाचा

जिसका जीवन न संगीत की तरह ललित रहा हो और न लोकगीतों की तरह स्वाभाविक, ऐसे कलाकार की जीवनी किसी सीमित लेख में अंकित कर पाना मेरे ऐसे सामान्य व्यक्ति के लिए अत्याधिक कठिन है।

लोकगीत संकलनकर्ता एवं उनकी धुनों की स्वरलिपि देने वाले, संगीत शिल्पी राधाबल्लभ के पिता पण्डित टीकाराम चतुर्वेदी अंग्रेजों के जमाने में नाजिर थे। फरमान बरदारी के लिए, वे जितने विनम्र थे, उतने ही घर के सदस्यों पर, अपनी सत्ता और अधिकार को जताने के लिए खूंखार भी।

पंडित टीकाराम चतुर्वेदी की छठी संतान के रूप में, बालक राधाबल्लभ का जन्म, जनवरी १९२१ को मुरादाबाद में हुआ था। स्कूल की उम्र से ही उनकी पीठ पर पिता के कोड़े ऐसे पड़ने लगे, मानो किसी घोड़े को जिन्दगी के मैदान में उतरने की ट्रेनिंग दी जा रही हो। छात्र राधाबल्लभ को किताबों और पिता से समान भय लगता था। वे अपने पिता को परिवार का दरोगा समझते थे। पिता उन्हें पढ़ा-लिखाकर दरोगा बनाना भी चाहते थे। पिता को अपने पुत्र की यह उद्दण्डता पसन्द नहीं थी कि, वह 'संगीत' जैसी औरताना चीज की ओर बचपन से ही लपक जाते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्व० राधावल्लभ के स्वर में बेहद मर्दानगी थी। माँ से विरासत में पाये संगीत के संस्कार, वे निरन्तर अपने खून में विकसित करते रहे। पढ़ाई-लिखाई उनके सामने सजा की तरह रखी गयी थी। इसलिए, वे किताबों से भरे बस्ते को सजा में पाया हुआ बोझ समझते थे। इधर-उधर की किताबें पढ़ने में, उनकी रुचि अधिक थी। अपनी रुचि के अनुसार पढ़ी किताबों से स्वाध्याय तो प्रबल हुआ, लेकिन वे कोई बड़ी डिग्री नहीं ले सके। घर में उन्हें अपना दम घुटता नजर आया तो १८ वर्ष की अवस्था में, घर छोड़कर लखनऊ भाग आये। भागने के पीछे, पिता की निर्मम मारपीट और संगीत के प्रति अतिरिक्त अनुराग, कारण बनकर, उन्हें जोखिम उठाने की ताकत दे रहे थे।

राधावल्लभ के अन्दर सदैव ही एक रूढ़िभंजक, विद्रोही प्रकृति का मनुष्य मचला करता था। अपनी साफगोई और ईमानदारी के कारण, वे प्रारम्भ में तो प्रत्येक मिलने वाले को अत्याधिक विचलित कर देते थे। किन्तु, जो उनको एक बार पहिचान लेता था, वह सदैव के लिए उनका प्रियपात्र बन जाता था। लखनऊ जैसे नगर में, जहाँ के 'लखनौव्वा' मिजाज की पर्तों के भीतर, असलियत पहिचाननी मुश्किल हो जाती है, उन्होंने न केवल अपनी संगीत की शिक्षा पूरी की, बल्कि अपनी प्रतिभा के बल पर, इसी नगर को अपना कार्यक्षेत्र भी बनाया। आगे चलकर, उनका वास्तविक कार्य क्षेत्र 'लोकगीतों' का 'आदिम संसार' बना। किन्तु, लखनऊ पर, वे चारों जानिब से फिदा थे।

राधावल्लभ के पिता की मृत्यु के बाद, युवा भाइयों के (एक भाई को छोड़ कर) परिवार में कन्या-पक्ष प्रबल रहा। उनके साथ दुर्भाग्य इस कदर संलग्न रहा कि भाइयों की धड़ाधड़ अकाल मृत्यु होती रही। भाइयों की विधवाओं, उनकी नादान कन्याओं, अपनी उन बहिनों को जिन्होंने शादी ही नहीं की, और जिन्होंने शादी की व बच्चे नहीं हुए, उन सबकी, उन्होंने अपनी सीमित आय में, असीमित सुख पहुँचाने के निरन्तर प्रयास में, अपनी पत्नी तथा अपनी एकमात्र पुत्री (इन पंक्तियों की लेखिका) को सदा हाशिये पर रखा।

विशाल परिवार के लिए राधावल्लभ जी, का संगीत, रोटी, कपड़ा, जूते, स्कूली-फीस, सिनेमा तथा खाने-पीने की चटपटी चीजों के अलावा, कुछ नहीं था। जबकि वे खुद, केवल संगीत को एक सामाजिक सार्थकता देने के लिए, अपने जिन्दा रहने को जरूरी समझते थे। वे दूसरों की चिन्ता में इतने खोये से रहते थे कि, अपने बारे में सोचने का उन्हें कोई वक्त ही नहीं मिला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुझे (इन पंक्तियों की लेखिका को) पिता जी (राधावल्लभ जी) हमेशा 'बेटा' ही समझते रहे। मैं यह कमी सदैव महसूस करती रही कि, 'पिता' का जैसा प्यार मुझे मिलना चाहिए था—वह नहीं मिला। क्योंकि, मैं उन्हें, 'पिता' भी नहीं कहती थी। 'चाचा' कहकर जीवन भर काम चलाया। परिवार में बड़ी दीदियों के कारण, मैं उन्हें 'चाचा' कहकर ही अपने ज्यादा करीब पाती थी। 'पिता' कहते ही या तो शेष परिवार से, मैं अलग हो जाती थी, या फिर वे 'सम्बन्धों के समाजवाद' में गड़बड़ पाते थे। इसलिए, दीदियों का दिया हुआ 'चाचा' सम्बोधन, आज भी मुझे 'पिता' से भी अधिक स्फुरण देता है। भले ही दीदियों के लिए चाचा का मतलब सिर्फ 'चाचा' हो।

शरारती वे (चाचा) मरते दम तक रहे। मुझे ऐसा लगता है, जैसे "चाचा' (राधावल्लभ जी) की 'मृत्यु' भी, उनके द्वारा माँ के और मेरे साथ की गयी, एक शरारत है। वे देवताओं का सारा श्रेय किसी इन्सान को देना चाहते थे। इससे चीजों और सम्बन्धों को समझने के उनके भिन्न दृष्टिकोण का पता चलता था।

बचपन में एक बार मेरे दादाजी ने "चाचा" को ठाकुर जी की पूजा का काम सौंपा। जाड़ों के दिन थे। पेड़ धीरे-धीरे अपने पत्तों को त्यागते जा रहे थे। दादाजी चाहते थे कि अपने कुछ संस्कार पुत्र पर त्यागता जाऊँ—सो भगवान की प्रतिमा को नहलाने, आरती उतारने और भोग लगाने तक का सारा काम 'चाचा' के भरोसे छोड़ दिया गया। जिस दिन जाड़ा कस कर पड़ रहा होता वे दादाजी से पूछते—'क्या आज भी भगवान को नहलाकर आरती उतारूँ?'

प्रश्न सुनकर मूर्तिपूजक दादा जी के मन पर बहुत ठेस पहुँचती। वे चाचा को 'मूर्ख' और 'नास्तिक' कहकर फटकारते। एक ऐसी ही किसी ठंडी-सी, हड्डियां कंपाने वाली सुबह को "चाचा" ने, आरती उतारकर जलती हुई बत्तियों सहित भगवान की आलमारी को पूरी तरह बन्द कर दिया। थोड़ी देर में घर भर में आग लगने का हल्ला हो गया। आलमारी जलकर पूरी तरह राख हो गयी। क्रोधी दादा जी के क्रोध का पारावार नहीं था। चाचा की पिटाई हुई। पिटते हुए उन्होंने कहा "मैंने तो, देवताओं को जाड़ा न लगे, इसलिए जलती हुई आरती छोड़कर आलमारी बन्द की थी।"

हर बात के लिए 'चाचा' का एक अलग ही तर्क हुआ करता। वे सही अर्थों में आदमी होने को बहुत अहमियत देते थे। इसीलिए उनके मित्रों में, उनके शिष्यों और परिचितों में, उनके प्रति आज भी अपार स्नेह भाव व श्रद्धा है। उनके सुख दुख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के प्रति रुचि लेने में कई प्रतिष्ठित लोग रहे हैं। जिन्हें वे मित्र व हितैषी के रूप में आदर की दृष्टि से देखते थे। वे गुणियों की कृपा और स्नेह से प्रभावित होते थे, तथा दुष्टों की 'प्रियवाणी' से अत्यन्त भयाकुल। उन्होंने अनेक निर्धन छात्रों को, अपनी ट्यूशनों के पैसों से चुपके-चुपके सहायता पहुँचायी। इस बात का पता शेष परिवार को तब लगा जब उनकी मृत्यु के बाद, इस तरह के सर्वथा अज्ञात-अपरिचित छात्र संवेदना प्रकट करने, हमारे पास आये। वे अपनी सामर्थ्य से अधिक दयालु प्रकृति के थे, शायद इसीलिए वे कभी अव्यावहारिक व कड़वे नहीं देखे गये।

खाने-पीने की चीजों का 'चाचा' को भारी शौक था। मेहमाननवाजी उनकी कमजोरी थी। उद्दाम शालीनता से रहने का उन्हें मर्ज था। आत्मविश्वास उनमें गजब का था। किसी की भी बुद्धि और गुण के, वे बड़े कायल थे। कुनबा जोड़ने का उन्हें बेहद शौक था।

'चाचा' के सहकर्मी और अवधी के सुप्रसिद्ध कवि एवं व्यंग्यकार श्री चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका' के शब्दों में—

"राधाबल्लभ जी की नियुक्ति आकाशवाणी लखनऊ में 'पंचायतघर' में लोक संगीतकार के पद पर हुई थी। इस प्रकार हम एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में आये। मैं उन्हें लोक रचनायें देता और वे उन्हें लोक स्वर देकर प्रसारित करते।

सुगम संगीत तथा लोक संगीत में तो राधाबल्लभ जी प्रवीण थे ही—शास्त्रीय संगीत में भी पारंगत थे। उनके संरक्षण में 'पंचायत घर' के लोकगीतों की धूम मच गयी। नये पुराने लोकगीत कभी एकल स्वर में, कभी युगल गान तथा कभी सामूहिक गान के रूप में प्रस्तुत किये जाते थे। परिमार्जित कंठ और शास्त्रीय संगीत के अगाध ज्ञान के कारण भी उनकी कला में चार चाँद लग गये थे। शब्दों के भावानुसार शास्त्रीय स्वर देने में, उन्हें महारत हासिल थी। 'जय जय लछिमी गनेस' 'नाचत नटराज आज', 'बाजत बांसुरी मृदंग' इत्यादि मेरे द्वारा रचित ध्रुव पदों को, जो स्वर उन्होंने प्रदान किये थे, वे अब भी बहुत से श्रोताओं तथा कलाकारों के कानों में गूंजते रहते हैं। उनके गाये हुए गीत जब भी आकाशवाणी से प्रसारित होते हैं—सम्पूर्ण व्यक्तित्व समेटे हुए उनकी काया परिचितों के मध्य साकार हो उठती है। शास्त्रीय संगीत के वे ऐसे पंडित थे कि बड़े-बड़े नामी कलाकारों का एक भी स्वर गलत लगने पर, वह रिहर्सल के समय स्टूडियो में ही, उन्हें टोक देते थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

याद्दाश्त इतनी अच्छी थी कि वर्षों पूर्व गाये हुए गाने भी, उनके स्मृति-पटल पर अंकित रहते थे ।

जितने अच्छे कलाकार थे, उतने ही अच्छे वे इंसान भी थे । राधाबल्लभ जी स्पष्टवादी, परिश्रमी, संवेदनशील, हंसमुख तथा विनोदप्रिय व्यक्ति थे । कुछ वर्षों पूर्व, जब मैं अस्वस्थ पड़ा था, तब वे स्वयं अस्वस्थ होते हुए भी, मुझे देखने आते और देव, बिहारी, पद्माकार, रत्नाकर, तथा अनेक कवियों शायरों की ललित रचनाएँ सुनाकर, मुझे मानसिक स्वस्थता प्रदान करने का मांगलिक प्रयास किया करते थे ।

उनके निधन से आकाशवाणी ने एक ऐसा कलाकार खो दिया है, जिसकी पूर्ति असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है । मित्र मण्डली से एक अच्छा मित्र, कलाकारों से एक अच्छा सहयोगी और इन्सानों से एक अच्छा इन्सान बिछुड़ गया है ।''

'चाचा' के जीवन काल में ही, उनकी प्रतिभा को, गाँवों की जनता और शहरों के संस्कारित श्रोताओं की प्रियता प्राप्त हो गयी थी । अपनी संगीत साधना पर उन्होंने कभी भी भौतिक साधनहीनता को हावी नहीं होने दिया । कभी-कभी अपनी आर्थिक विपन्नता में, जिस रईसी का बोध वे परिवार पर छिड़कते थे, उस वजह से उनकी परेशानियाँ अच्छी खासी बढ़ जाती थीं । लेकिन, उनके व्यक्तित्व का सबसे मजेदार पहलू भी यही था कि, वे कष्ट और बेचैनियों में से ही अपने धैर्य की खुराक वसूलते थे । मन में संगीत की समृद्धि और उदात्तता को संजोय हुए, 'लालकुआं' के जिस फटीचर इलाके में, उन दिनों रहते थे, उसके सम्बन्ध में लखनऊ से प्रकाशित होने वाली, तत्कालीन प्रतिष्ठित पत्रिका 'वर्तिका' में, ''लोक कलाकार राधाबल्लभ'' शीर्षक से स्व० नंदराम जी ने एक लेख लिखा था, जिसके एक अंश को मैं यहां उद्धरित कर रही हूं । इससे उनकी तत्कालिक स्थिति का ज्ञान पाठकों को हो जायेगा ।

''आज के समाज में अभी भी गायकों को जितना ऊँचा दर्जा दिया जाना चाहिए, वह नहीं मिल रहा है ।

संगीत, कोई ४–६ दिन में पारंगत कर देने की कला नहीं है । साधक, मन-प्राण से, रागों की गहरायी में डूबकर उसकी थाह लेता है । किन्तु, इतना सब करने के बाद भी सितम क्या होता है । कलाकार को गुजारे के लिए, कला के साथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बलात्कार करना पड़ता है। पूँजीवादी व्यवस्था के सामने जाकर, दरवाजे पर भीख माँगना होता है, और कलाकार राधाबल्लभ भी इसके शिकार हैं।

यह सही है कि डॉ० राजेन्द्र प्रसाद से लेकर फकीर तक ने इस जन कलाकार को सुना और सिर धुना है। लेकिन, इससे राधाबल्लभ की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हुई है। इसी कारण वह लखनऊ नगर में, लालकुएं की एक गन्दी गली में, दो कमरों में पूरी गृहस्थी के साथ जीवन यापन के लिए विवश हैं। कभी उस गली को पार कर उनके घर जाइए, तो उत्तर भारत का यह श्रेष्ठ लोक संगीतज्ञ क्षमा माँगते हुए कहेगा—'भाई माफ कीजिएगा, मेरे यहाँ बैठने को यह टूटा तख्त है, जरा पीछे होकर आराम से बैठ जाइए।' क्षण भर के लिए उस जगह की कल्पना कीजिए जहाँ लड़कों का हुड़दंग, मेहतरों की कांय-कांय और मोटरों की पों-पों से रियाज करते कलाकार की सारी तन्मयता टूक-टूक हो जाती है।

लेकिन कठिनाईयों से जूझना राधाबल्लभ जी की अपनी विशेषता है, अपना व्यक्तित्व रहा है। भयंकर आर्थिक संकटों और अड़चनों के बावजूद भी, राधाबल्लभ "बल्लभी 'सारंग' को सिद्ध करने के संकल्प में लगे हैं। एक ओर आर्थिक भार का दबाव, मजबूरियाँ, और कला को अपने उच्च स्थान से गिराकर बाज़ारू बना देने का चौतरफा दबाव; दूसरी ओर संगीत की महान परंपरा को निर्भीकतापूर्वक ऊँचा और ऊँचा ले जाने की तमन्ना, उनके नेत्रों में बेचैनी की लपट बन कर जलती रहती है। यही कारण है कि, वे खोये-खोये से रहते हैं। वह बड़े-बड़े जलसों में गाते हैं, रेडियो पर गाते हैं और सीलोनी कलाकारों के आमंत्रण पर सीलोन जाने की भी सोच रहे हैं। लेकिन, उनको संतोष नहीं है। कितने दुख की बात है कि, वर्तमान उत्तर-प्रदेश की सरकार, इस सिरमौर गायक के महत्व की ओर ध्यान नहीं दे रही है।

जब कभी आप उनके घर जायेंगे, तब नीलम अपनी तोतली भाषा में उत्तर देगी 'ताता दी है नहीं, तही दये है.........।' और कोई नहीं कह सकता कि वे कहाँ गये हैं। आपको यही सोचकर संतोष करना पड़ेगा कि कहीं महफिल जुड़ गयी होगी, और अब चौबे जी को न दिन की सुधि और न रात की।

४० वर्ष में राधाबल्लभ जी को अपने उस भविष्य पर विश्वास है, जब मनुष्य मुक्त होगा, कला पूंजी की दासी न होगी और गायक नये विहान का गौरव मुक्त गीत गायेगा।".........लेकिन ऐसा कब होगा.........???"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'चाचा' के अनेक शिष्य हैं। वे आज भी बड़ी श्रद्धा और लगन से उनसे प्राप्त शिक्षा का उपयोग करने की दिशा में सचेष्ठ हैं। उन्हीं में से एक योग्य-शिष्य श्री श्याम किशोर रस्तोगी भी हैं। उन्होंने बताया:—

"राधाबल्लभ जी का संगीत के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ से संगीत विशारद की उपाधि पाकर भी लोक-संगीत के प्रति उनका मोह जारी रहा। उन्होंने अथक परिश्रम करके उत्तर-प्रदेश के लोकगीतों का संकलन किया। अपनी सूक्ष्म दृष्टि से लोकधुनों को उनके शुद्ध रूप में श्रोताओं के सम्मुख रखकर, उन्हें, उनका उचित स्थान प्रदान किया। अवध के लोकगीतों पर उन्होंने विशेष रूप से चिंतन व मनन किया था और उन्हें स्वरबद्ध करके आगामी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भी कर दिया है। यूं तो राधाबल्लभ जी ध्रुपद, धमार, खयाल, ठुमरी, गज़ल आदि सभी शैलियों में निष्णात गायक रहे, किन्तु लोकगीतों के क्षेत्र में उनका एकाधिकार सर्वमान्य एवं निर्विवाद है।

संगीत के सिद्धांत-पक्ष पर एक सर्वजन सुलभ किन्तु सूक्ष्मग्राही एवम् प्रामाणिक ग्रंथ 'सा रे ग म' लिखकर, विषय प्रतिपादन की दृष्टि से, राधाबल्लभ जी ने एक ऐसा स्तुत्य प्रयास किया है, जिसकी सराहना सभी समीक्षकों ने मुक्तकंठ से की है। 'सा रे ग म' संगीत शिक्षा के क्षेत्र में उनकी एक सुन्दर उपलब्धि है।"

संगीत की शास्त्रीयता और उसकी जटिलता की खराद पर 'चाचा' हमेशा खुद को तराशते रहे। लोकगीतों को रागबद्ध करने में, शास्त्रीय निपुणता की एक बड़ी आवश्यकता को उन्होंने पूरा किया। इस कार्य के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को झोंक देने की लगन, अन्य किसी कलाकार में, उस समय नहीं थी।

लोकगीतों में उस समय न धन था, न प्रतिष्ठा थी। लेकिन, जिस मानवीय सचाई और रिश्तों की गर्मी का आभास उन्हे लोकगीतों के सटीक प्रस्तुतीकरण में होता था, उसकी तुलना, इतिहास के उस क्षण से की जा सकती है, जब 'बुद्ध' को अपनी बात प्रकट करने के लिए, 'संस्कृत' की अपेक्षा 'पाली' जैसी जनभाषा, माध्यम के रूप में ज्यादा उचित लगी थी। क्योंकि, लोकगीतों में देहात के नगण्य, दलित और अभावग्रस्त स्त्री-पुरुषों का वह जीवन-दर्शन नत्थी होता है, जो किसी भी कला के शास्त्रीय स्वरूप में नहीं होता है। अतः, लोकगीतों में वह 'आदिम ऊष्मा', भाषा के ताजा और यथार्थ, कलेवर में आज भी मौजूद है, जो 'जनभाषा' के स्वरूप को पनपाने के लिए खाद, पानी का काम करती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोकगीत एक तरह से किसी भी देश के अलिखित दस्तावेजों की तरह होते हैं। उनमें घटनाओं का बड़ा ही कलात्मक और अतिरंजित वर्णन होता है। लेकिन, वे यथार्थ से कभी भी कटे हुए नहीं होते।

उत्तर-प्रदेश के लोकगीतों की ग्रामीण संवेदना को, अपने तर्जे-बयां से "चाचा" जी ने इतना व्यापक बनाया कि, लोक कलाकारों की प्रतिष्ठा और उनके योगदान के प्रति जनता में चेतना पैदा हुई।

अन्त में सशक्त रूप से यह कटु सत्य कहा जा सकता है कि, चाचा को रुचि-के आत्मिक सुख के अलावा जीवन में और कुछ प्राप्त नहीं हुआ। जबकि, स्वयं लोकगीतों को उनसे बहुत कुछ प्राप्त हुआ है।

मुझे खुशी है कि 'चाचा' द्वारा लिपिबद्ध और स्वरबद्ध लोकगीतों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का यह जो सतप्रयास उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने किया है; उससे उनकी आकांक्षाओं को एक सही आकार मिलेगा, तथा लोकगीतों के प्रेमी संगीतज्ञों एवं, छात्रों को लोकगीतों की धुनों को कण्ठ में उतारने का स्वर्णिम अवसर भी।

५५, माडल हाउसेज़
लक्ष्मी सहाय मार्ग
लखनऊ—२२६००१

नीलम चतुर्वेदी
(आत्मजा—स्व० राधा बल्लम चतुर्वेदी)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

अनुक्रमणिका

संस्कार गीत

१—सरिया

परिभाषा सरिया .. १

१. गीत—हँसत खेलत घर आये .. २
स्वरलिपि ,, ,, .. ३

२—सोहर

परिभाषा सोहर .. ४

१. गीत—कोई कोठे से उतरी भवजिया मनरंजना .. ५
स्वरलिपि ,, ,, ,, ,, .. ६

२. गीत—गंगा जमुना के बीच तिवैया एक तप करे .. ७
स्वरलिपि ,, ,, ,, ,, .. ८

६. गीत—धिया बिन कोख न सोहै .. ९
स्वरलिपि ,, ,, .. १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४. चलौ गयौ लखिया बन कूँ .. १२
स्वरलिपि " " ... १३
५. गीत—चैतहि के तिथि नौमी त नौबत बाजे हो .. १४
स्वरलिपि " " " " .. १५
६. गीत—छापक पेड़ छेउलिया से पतवन गहबर हो .. १६
स्वरलिपि " " " " .. १७
७. गीत—मोरे आँगन राजा चन्दन के बिरवा रे .. १८
स्वरलिपि " " " ... १९
८. गीत—राजा हम कोइका मनावे न जैबें .. २०
स्वरलिपि " " " .. २१

३—अन्नप्राशन

परिभाषा अन्नप्राशन २२
१. गीत—आज मोरे लीपन पोतन अन्नप्राशन हो ... २३
स्वरलिपि " " " " .. २४

४—मूड़न

परिभाषा मूड़न गीत २५
१. गीत—झगरै नउआ मूड़न की बेरिया .. २६
स्वरलिपि " " " .. २७

५—जनेऊ

परिभाषा जनेऊ गीत २८
१. आओ सखी सब मंगल गायें .. २९
स्वरलिपि " " .. ३०
२. गीत—गंगा के नीरे तीरे छेउल केर बिरवा ... ३१
स्वरलिपि " " " .. ३२
३. गीत—नदिया किनारे बरुआ फिरै .. ३४
स्वरलिपि " " .. ३५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४. गीत—हाथ दुनैया कुस पैंती .. ३७
स्वरलिपि ,, ,, ,, .. ३८

६—विवाह गीत

परिभाषा विवाह गीत ३९

१. गीत (बुन्देल खण्डी) ऊँची अटरिया रंग भरी .. ४०
स्वरलिपि ,, ,, .. ४१
२. गीत—बाजत आवैला ढोल दमामा .. ४३
स्वरलिपि ,, ,, .. ४४
३. गीत—मामा सुघर बर ढूंढ़ो रे मामा .. ४६
स्वरलिपि ,, ,, ... ४७
४. गीत—सावन सुगना में घीयु गुर पालेयु .. ४९
स्वरलिपि ,, ,, .. ५०
५. गीत—हरे हरे बाँस कटाओ मोरे बाबुल ... ५२
स्वरलिपि ,, ,, ... ५३

७—बन्ना

परिभाषा बन्ना ५५

१. गीत—केसरिया बन्ना बागों में आया ... ५६
स्वरलिपि ,, ,, ... ५७
२. गीत—परदे के भीतर कर लो री ... ५९
स्वरलिपि ,, ,, ... ६०
३. गीत—इन गलियन ह्वैके लैयो जी ... ६२
४. गीत—बन्ना पहिने बसंती चीरा रे ... ६३
स्वरलिपि ,, ,, ... ६४
५. गीत—बन्ने के नैना जादू बान ... ६५
स्वरलिपि ,, ,, ... ६६
६. गीत—राम पै जदुआ कोई मत डारो ... ६७
स्वरलिपि ,, ,, ... ६८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७. गीत—श्याम बने हैं बन्ना दुलहा जी ... ६९
स्वरलिपि ,, ,, ... ७०

८. गीत—सिया समाज सुहाग सुन्दरीं ... ७२
स्वरलिपि ,, ,, ... ७३

८—टोना

परिभाषा टोना ७४

१. गीत—माई री मैं टोना करि हौं ... ७५
स्वरलिपि ,, ,, ... ७६

९—द्वारचार

परिभाषा द्वारचार ७७

१. गीत—द्वार पै आयी बरात सखी री ... ७८
स्वरलिपि ,, ,, .. ७९

१०—कलेवा

परिभाषा कलेवा ८१

१. गीत—आये करन कलेवा चारो कुँवर राजा जनकपुरी .. ८२
स्वरलिपि ,, ,, ... ८३

२. गीत—कीरत गोद गोपाल लिये मुख चूमत .. ८४
स्वरलिपि ,, ,, .. ८५

११—गारी

परिभाषा गारी ८७

१. गीत—घर घर बाजत बधउआ आये हैं लाला .. ८८
स्वरलिपि ,, ,, ... ८९

२. गीत—जनकपुरी के नारी रे गावें हरि को गारी जी ... ९०
स्वरलिपि ,, ,, .. ९१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२—ज्यौनार

परिभाषा ज्यौनार ... ९३

१. गीत—जब ही गोपाल चले मधुबन को ... ९४

स्वरलिपि " " ... ९५

१३—बिदा-गीत

परिभाषा बिदा गीत ... ९६

१. गीत—अरी अरी बेटी पियारी रानी ... ९७

स्वरलिपि " " ... ९८

२. गीत—खाय लेहु खाय लेहु दहिया सेरे भात ... १००

स्वरलिपि " " ... १०१

३. गीत—निबिया के पेड़ जिन काटेउ मोरे बाबुल ... १०३

स्वरलिपि " " ... १०४

४. गीत—हमारी दुलारी हो बेटी आँखी केरी पुतरिया ... १०६

स्वरलिपि " " ... १०७

१४—सुहाग-गीत

परिभाषा सुहाग-गीत ... १०९

१. गीत—आज सुहाग की रात चन्दा तुम उइहो ... ११०

स्वरलिपि " " ... १११

दिनचर्या गीत

१५—खेत रखवाली-गीत

परिभाषा खेत रखवाली गीत ... ११३

१. गीत—अपने सिवनवाँ में रचल्यू मचनवाँ ... ११४

स्वरलिपि " " ... ११५

१६—चकिया-गीत

परिभाषा चकिया गीत ... ११७

१. गीत—गैले विदेसवा ककस जिया बेधिब हो ... ११८

स्वरलिपि " " ... ११९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१७—पनघट-गीत

परिभाषा पनघट गीत १२१

१. गीत—(बुन्देलखण्डी, नदिया लौं हमरे सँग चलो ... १२२
स्वरलिपि „ „ ... १२३

२. गीत—(बुन्देलखण्डी) ननद भौजइया दोऊ पनियाँ को निकरी १२४
स्वरलिपि „ „ ... १२५

१८—सीला बीनने का गीत

परिभाषा सीला बीनना १२७

१. गीत—सासू की बीनी डलरिया रे ... १२८
स्वलिपि „ „ ... १२९

ऋतु सम्बन्धी गीत

१९—कजरी

परिभाषा कजरी १३०

१. गीत—अरे रामा सावन मास सुहावन ... १३१
स्वरलिपि „ „ ... १३२

२. गीत—कान्हा तेरी बाँकी चितवनिया ... १३४
स्वरलिपि „ „ ... १३५

३. गीत—कैसे खेले जैबू सावन मां कजरिया ... १३६
स्वरलिपि „ „ ... १३७

४. गीत—कौन रंग मुगवा कवन रंग मोतिया ... १३८
स्वरलिपि „ „ ... १३९

५. गीत—घेरि घेरि आई सावन की बदरिया ना ... १४०
स्वरलिपि „ „ ... १४१

६. गीत—नहीं आये सजना हमार ... १४३
स्वरलिपि „ „ ... १४४

७. गीत—बदरिया बरसै रस की बूँद ... १४६
स्वरलिपि „ „ ... १४७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८. गीत—सखियाँ झूलन चली फुलबगियन ... १४९
स्वरलिपि " " ... १५०

२०—चौमासा

परिभाषा चौमासा १५१
१. गीत—प्रथम मास असाढ़ हे सखी ... १५२
स्वरलिपि " " ... १५३

२१—चन्द्रावली

परिभाषा चन्द्रावली १५४
१. गीत—ननद भावज पानी कूँ गयी रे ... १५५
स्वरलिपि " " ... १५८

२२—चैती

परिभाषा चैती १५९
१. गीत—हथवा लगत कुम्हलाय गैलो रामा ... १६०
स्वरलिपि " " ... १६१

२३—मल्हार

परिभाषा मल्हार १६३
१. गीत—अरी भैना उठी है घटा घनघोर ... १६४
स्वरलिपि " " ... १६५

२४—राछौर

परिभाषा राछौर १६७
१. गीत—कहाँ से उमही रे कारी बदरिया ... १६८
स्वरलिपि " " ... १६९

२५—सावन

परिभाषा सावन १७०
१. गीत—अबकी सावन सैंया घर से न निकसो ... १७१
स्वरलिपि " " ... १७२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२६—सोहनी

परिभाषा सोहनी १७५

१. गीत—एक सुधि आइगैले नैहर की ... १७६
स्वरलिपि „ „ ... १७७

२७—हिंडोला

परिभाषा हिंडोला (झूला) १७६

१. गीत—झूला धीरे झुलावो, सुकुमारी सिया हैं ... १८०
स्वरलिपि „ „ ... १८१

२. गीत—पड़े रे हिंडोले नौलख बाग में जी ... १८३
स्वरलिपि „ „ ... १८४

उत्सव गीत

२८—उलारा

परिभाषा उलारा १८६

१. गीत—गिरधारी लाल गिरधारी लाल नख पै गिरधर गिरा धरे १८७
स्वरलिपि „ „ ... १८८

२९—कहरा

परिभाषा कहरा १९०

१. गीत—पिया ऊंची रे अटरिया तोरी देखन चली ... १९१
स्वरलिपि „ „ ... १९२

२. गीत—बालू रेतिया डगर चलब कैसे ... १९४
स्वरलिपि „ „ ... १९५

३. गीत—मोरे मालिक श्री भगवान, सोच मन काहे का करी ... १९७
स्वरलिपि „ „ ... १९८

४. गीत—हो कजरवा काहे दिये हो, नैना कजरारे ... २००
स्वरलिपि „ „ ... २०१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३०—घाटौ

परिभाषा घाटौ ... २०३

१. गीत—रामा चैइत अयोध्या ... २०४

स्वरलिपि „ „ ... २०५

३१—चौताल

परिभाषा चौताल ... २११

१. गीत—दृग रेख कजर धोइ डारै बिना मदुराई ... २१२

स्वरलिपि „ „ ... २१३

३२—झूमर

परिभाषा झूमर ... २१६

१. गीत—कंहवाँ ते आवैले कुँवर कन्हैया ऐ झूमर हो ... २१७

स्वरलिपि „ „ ... २१८

२. गीत—मचौ फाग घनघोर आज होरी झूमरी ... २२०

स्वरलिपि „ „ ... २२१

३३—देवी गीत

परिभाषा देवी गीत ... २२२

१. गीत—उड़ि जाऊ रे सुगनवाँ गंगा पार ... २२३

स्वरलिपि „ „ ... २२४

२. गीत—कामना पूरन करो माई ... २२६

स्वरलिपि „ „ ... २२७

३ गीत—कैसे के दरशन पाऊँ री माई संकरी दुअरिया ... २२८

स्वरलिपि „ „ ... २२९

४. गीत—झूमत झूमत मैया अइली देव घरवा ... २३०

स्वरलिपि „ „ ... २३१

५. गीत— निबिया की डार मैया डालैलो हिंडलवा ... २३३

स्वरलिपि „ „ ... २३४

६. गीत— भुइयाँ मनावन चली मलिनियाँ ... २३६

स्वरलिपि „ „ ... २३७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७.	गीत—मइया गढ़ पै बेला	...	२३८
	स्वरलिपि „ „	...	२३९
८.	गीत—मोर महरानी विंध्याचल की रानी	...	२४०
	स्वरलिपि „ „	...	२४१
९.	गीत—लिखि लिखि चिठिया असुरा पठावै	...	२४२
	स्वरलिपि „ „	...	२४३

३४—धमार

	परिभाषा धमार		२४५
१.	गीत—आयो रे रितुराज, आज ये होरी खेलन आयो	...	२४६
	स्वरलिपि „ „	...	२४७
२.	गीत—जमुना तट श्याम खिलैं होरी	...	२५०
	स्वरलिपि „ „	...	२५१
३.	गीत—बाजै बाजै बंसी, मुरचंग, संख	...	२५३
	स्वरलिपि „ „	...	२५४

३५—डेढ़ताल

	परिभाषा डेढ़ताल		२५६
१.	गीत—सखी फागुन मास नियरायें	...	२५७
	स्वरलिपि „ „	...	२५८

३६—मेला गीत

	परिभाषा मेला गीत		२६२
१.	गीत—आज मोहे रघुबर की सुधि आयी	...	२६३
	स्वरलिपि „ „	...	२६४
२.	गीत—मैया की ऊँची नीची सुन्दर लहरिया	...	२६५
	स्वरलिपि „ „	...	२६६
३.	गीत—मैं तो चली बद्रीनाथ	...	२६७
	स्वरलिपि „ „	...	२६८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४. गीत—रघुवर संग जाब, हम ना अवध मा रहिबै ... २६९
स्वरलिपि " " ... २७०

३७—रसिया

परिभाषा रसिया

१. गीत—अपनौं बृज देखन कौ आय जैयो ... २७३
स्वरलिपि " " ... २७४

२. गीत—आज बिरज मै होरी है, रे रसिया ... २७६
स्वरलिपि " " ... २७७

३. गीत—छूम छूम छननन ननन ... २७८
स्वरलिपि " " ... २७९

४. गीत—जसोदा तेरे लाला ने माटी खायी ... २८१
स्वरलिपि " " ... २८२

५. गीत—तेरी अधिक अनोखी चाल, नन्द के छलबलिया ... २८३
स्वरलिपि " " ... २८४

६. गीत—बन गये नन्दलाल लिलिहारी ... २८४
स्वरलिपि " " ... २८६

७. गीत—बिन विद्या भारत देश ... २९७
स्वरलिपि " " ... २९०

८. गीत—मत मारो दृगन की चोट रसिया ... २९१
स्वरलिपि " " ... २९३

९. गीत—मोसौं मोहन प्यारे बोल ... २९६
स्वरलिपि " " ... २९७

१०. गीत—मोपै कैसी रे मोहनी डारी रे ... २९९
स्वरलिपि " " ... ३००

११. गीत—राधा की छवि देख मचलि गयौ साँवरिया ... २०२
स्वरलिपि " " ... ३०३

३८—लंगुरिया

परिभाषा लंगुरिया ३०५

१. गीत—फिर कबहू न मैली होय लंगुरिया ... ३०६
स्वरलिपि " " ... ३०७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३९—होली

परिभाषा होली ... ३०६

१. गीत—डगर मोरी छोड़ो श्याक ... ३१०
स्वरलिपि " " ... ३११

२. गीत—ब्रज में हरि होरी मचायी ... ३१३
स्वरलिपि " " ... ३१४

३. गीत—मैं तो खेलूँगी कान्हा तो से होरी बरजोरी ... ३१८
स्वरलिपि " " ... ३१९

४. गीत—मोरी भीजै रेशम चूनर हो ... ३२१
स्वरलिपि " " ... ३२२

५. गीत—रंग डारी गिरधारी चुनरिया ... ३२४
स्वरलिपि " " ... ३२५

६. गीत—लाला तुम रोको न बाट हमारी ... ३२७
स्वरलिपि " " ... ३२८

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरिया

'सरिया' अवध की एक अत्यन्त लोकप्रिय धुन है। इसमें गाये जाने वाले गीतों का मुख्य विषय माँ बनने वाली स्त्री की प्रसव पीड़ा है।

प्रसव पीड़ा से लेकर, सन्तान उत्पन्न होने तक के काल का कभी करुण और कभी कटाक्षपूर्ण वर्णन के साथ ही इन गीतों में आने वाली सन्तान के स्वागत की उल्लासपूर्ण ललक, 'सरिया' का विशिष्ट आकर्षण है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरिया

हँसत खेलत घर आये, कहाँ सरि खेलि आयेऊ मोरे लाल।

एक पग धरिऊ देहिरि पर, दूसर पलंग पर,
लीन्है गरवा लगाय, कहो घना वेदना मोरे लाल ॥

लाज शरम केरी बात, सकुच केरी बात पुरुष आगे,
कहा कहौं मोरे लाल।

बाम अंग मोरा फरकै, दाहिन मोरा कसकै
मरहू पँजरवा कै पीर, सुघर दाई चाहिए मोरे लाल ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरिया (कहरवा)

स्थाई

—	म	म	म	म	म	म	म	मग	रेग	ग	सा	ऩी	सा	रे	रे
ऽ	हँस	त	खे	ल	त	घ	र	आऽ	ऽऽ	ये	क	हाँ	ऽ	स	रि
×				०				×				०			
—	रे	—	म	ग	ग	रे	रे	सा	—	सा	सा	ऩी	सा	रे	रे
ऽ	खे	ऽ	लि	आ	येऽ	मो	रे	ला	ऽ	ल	क	हाँ	ऽ	स	रि
×				०				×				०			
—	रे	—	म	ग	ग	रे	रे	सा	—	—	स	—	—	—	—
ऽ	खे	ऽ	लि	आ	येऽ	मो	रे	ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

—	सा	सा	सा	ऩी	सा	रे	सा	रे	—	रे	सा	ऩी	सा	रे	सा
ऽ	एक	प	ग	ध	रि	न	दे	हे	री	प	र	दू	स	र	प
×				०				×				०			
रे	रे	रे	सा	—	म	म	म	म	म	म	म	मग	रेग	ग	सा
लं	ग	प	र	ऽ	ली	न्हें	ऽ	ग	र	वा	ल	गाऽ	ऽऽ	य	क
×				०				×				०			
ऩी	सा	रे	रे	—	रे	—	म	ग	—	रे	रे	सा	—	—	सा
हौं	ऽ	घ	ना	ऽ	बे	ऽ	द	ना	ऽ	मो	रे	ला	ऽ	ऽ	ल
×				०				×				०			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ भी इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर

'सरिया' की ही भाँति 'सोहर' भी अवध की एक प्रमुख लोकधुन है, जिसे बालक के जन्म के अवसर पर गाया जाता है। इसे स्त्रियाँ समवेत् स्वरों में गाती हैं। इसमें सन्तान के जन्म के अवसर पर होने वाले उछाह का वर्णन रहता है। भाषा में आँचलिक परिवर्तनों के होते हुए भी मूलभाव सर्वत्र एक ही रहता है—आनन्द और उल्लास का भाव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर मनरजना

कोई कोठे से उतरी भवजिया मनरजना ।
कोई छोटी ननद मुख हेरे ।। अहो मनरजना

भाभी जो तेरे हुइहै होरिलवा । मनरजना
तब कहा हमै तुम दैहो ।। अहो मनरजना

ऐ बीबी जो तोरे हुइहै भतीजा । मनरजना
तोहे दूंगी गले की तिलरी ।। अहो मनरजना

कोई भोर होत पौ फाटै । मनरजना
कोई होरिल शब्द सुनावै ।। अहो मनरजना

राजा धीरे शहनाई बजवैयो । मनरजना
मोरी छोटी ननद नहीं जानै ।। अहो मनरजना

कोई द्वारै पै ठाढ़ी ननदिया । मनरजना
भाभी लाओ गले की तिलरी ।। अहो मनरजना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर मनरजना (कहरवा)

														ग	म
														को	ई
प	प	—	नि	ध	प	—	धप	म	ग	प	—	—	—	नी	नी
को	ठे	ऽ	से	उत	री	ऽ	भऽ	व	जि	या	ऽ	ऽ	ऽ	को	ई
×				०				×				०			
ध	नी	—	सा	नी	ध	—	प	म	ग	प	—	—	—	म	प
को	ठे	ऽ	से	उत	री	ऽ	भ	व	जि	या	ऽ	ऽ	ऽ	म	न
×				०				×				०			
म	ग	म	—	—	—	सा	नी	स	ग	—	स	ग	म	प	धप
र	ज	ना	ऽ	ऽ	ऽ	को	ई	छो	टी	ऽ	न	न	द	मु	खऽ
×				०				×				०			
म	ग	—	ग	रे	—	म	ग	रे	रे	सा	—	—	—		
हे	रे	ऽ	अ	हो	ऽ	म	न	र	ज	ना	ऽ	ऽ	ऽ		
×				०				×				०			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ इसी प्रकार गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर

गंगा जमुनवा के बीच तिवैया एक तप करै हो,
गंगा अपनी लैहर हमै देतिऊ तो मझधार डूबित हो ॥

की तोहे सास ससुर दुख नैहर दूर बसै,
तेवई की तोरे हरि परदेस कवन दुख हवै हो,

ना मोहे सास ससुर दुख नाही नैहर दूर बसै गंगा ॥
ना मोरे हरि परदेस कोख दुख डूबौ हो ॥

जाऊ तिवैया घर अपनै हम ना लैहर देबै हो,
आज के नवमे महिनवा होरिल तोरे हुइहै हो ॥

गहबर पियरी चढ़ैबै होरिल जब हुइहै हो,
देहु भगीरथ पूत जगत जस गावै हो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (कहरवा)

—	म	म	म	ग	म	प	म	प	—	प	म	ग	म	प	प
ऽ	गं	गा	ज	मु	न	वा	के	बी	ऽ	च	ति	वै	या	ऐ	क
×				०				×				०			
प	ध॒	प	म	ग॒	—	सा	सा	—	सासा	सा	रे	ग	ग	म	ग
त	प	क	रैं	हो	ऽ	गं	गा	ऽ	अप	नी	लै	ह	र	ह	मैं
×				०				×				०			
म	—	म	म	रे	म	ध॒	प	ग॒	—	रे	रे	सा	—	—	—
दे	ऽ	तिऊ	तौ	म	झ	धा	र	डू	ऽ	बि	त	हो	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

—	प	प	ध	नी	—	सां	नी	सां	—	सां	रें	नी॒	—	ध	प
ऽ	की	तो	हे	सा	ऽ	स	स	सु	र	दु	ख	नै	ऽ	ह	र
×				०				×				०			
ग	म	प	ध॒	प	—	प	प	—	प	प	प	प	नी॒	ध॒	प
दू	ऽ	र	ब	से	ऽ	ऐ	हो	ऽ	की	तो	रे	ह	रि	प	र
×				०				×				०			
म	—	म	ग॒	रे	रे	ग॒	म	ग॒	—	रे	—	सा	—	—	—
दे	ऽ	स	क	व	न	दु	ख	डू	ऽ	बै	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ अन्तरे की तरह गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (बुन्देलखंडी)

धिया बिन कोख न सोहै,
ललन बिन सोहर रे महाराज ॥

ललना तो भये हैं ससुर जू के भागे,
सासू जू के भागे,
हमारौ जामै का लागै महाराज ॥

ललना तो भये हैं जेठ जू के भागे,
जिठानी के भागे,
हमारौ जामै का लागै महाराज ॥

ललना तो भये हैं देवर जू के भागे,
दिवरानी के भागे,
हमारौ जामै का लागै महाराज ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (बुन्देलखंडी) दादरा

स्थाई

ध़ सा —	सा सा —	सा रे —	ग — म	रे ग सा
धि या ऽ	बि न ऽ	को ऽ ऽ	ख ऽ न	सो ऽ है
×	०	×	०	×
— — रे	ग म ग	रे सा —	— ध़ ध़नी	सा — रे
ऽ ऽ ल	ल न ऽ	बिं न ऽ	ऽ सो हर	रे ऽ ऽ
०	×	०	×	०
ग रे —	सा — —	ग — ग	ग म ग	रे सां —
म हा ऽ	रा ऽ ऽ	ज ऽ ल	ल न ऽ	वि न ऽ
×	०	×	०	×
— ध़ ध़नी	सा — रे	ग रे —	सा — —	— — —
ऽ सो हर	रे ऽ ऽ	म हा ऽ	रा ऽ ऽ	ऽ ऽ ज
०	×	०	×	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध़	ध़	स	—	सा	—	रे	रे	ग	—	म	—
ल	ल	ना	ऽ	तो	ऽ	भ	ये	हैं	—	स	—
×			०			×			०		
म	ग	ग	सा	सा	—	रे	—	ग	—	म	—
सु	र	जू	ऽ	के	ऽ	भा	ऽ	गैं	ऽ	सा	ऽ
×			०			×			०		
म	ग	ग	सा	सा	—	रे	—	ग	—	म	—
सू	ऽ	जू	ऽ	के	ऽ	भा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
ग	म	ग	रे	सा	—	—	नी	ध	ध़	स	नी
मा	रीं	ऽ	जा	मैं	ऽ	ऽ	का	ऽ	ला	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
सा	—	रे	ग	रे	—	सा	—	—	ग	—	ग
गैं	ऽ	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ह
×			०			×			०		

टीप : गीत के शेष अंतरे उपरोक्त स्वरों में गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (ब्रज) कहरवा

चलौ गयौ लखिया बन कूँ,
सोबड़ में छोड़ी अपनी नार ।। चलौ गयौ……

लाल तेरे चाचा मै बुलाय दऊँ
जौ तक आवै तेरो बाप ।। चलौ गयौ …

लाल तेरे ताऊ मै बुलाय दऊँ,
जौ तक आवै तेरो बाप ।। चलौ गयौ …

लाल तेरे मामा मै बुलाय दऊँ,
जौ तक आवै तेरो बाप ।। चलौ गयौ……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (ब्रज) कहरवा

स्थाई

			रे
			च
रे — रे ग	रे सा रे ग	रे सा सा —	— — — —
लो ऽ ग यो	ल खि या ऽ	ब न कूं ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
— सा नी	सा सा रे ग	रे सा रे ग	रे सा सा —
ऽ ऽ सो ऽ	ब ड़ मै ऽ	छो ऽ ड़ी ऽ	अ प नी ऽ
×	०	×	०
स प़ — रे	रे — रें ग		
ना र ऽ च	लो ऽ ग यो		
×	०		

टीप : शेष गीत, उपरोक्त स्वरों में गाया जायेगा। यह गीत मध्यम को स्वर मानकर गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (चाचर)

चैतहि के तिथि नौमी त नौबत बाजै हो ॥
बाजे दशरथ राज दुआर कौशिल्या रानी मंगल हो ॥

सुनहु रे सखियाँ सहेलरी मिलजुल चालहु हो ।
जहाँ राज के जन्में हैं राम करिया न्यौछावर हो ॥

जो ये मंगल गाय से गाय सुनावै हो ।
से तो तुलसी जगत तर जाय अमर पद पावै हो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सोहर (चाचर)

म	—	—	म	—	म	—	रे	म	—	प	—	ध	—
चैं	ऽ	ऽ	त	ऽ	ही	ऽ	के	ऽ	ऽ	ति	ऽ	थि	ऽ
×			२				०			३			
प	म	—	प	—	म	—	रे	म	—	प	—	ध	—
नौ	ऽ	ऽ	मी	ऽ	त	ऽ	नौ	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
×			२				०			३			
प	म	—	प	—	म	—	ग	रे	सा	रे	—	ग	—
बा	ऽ	ऽ	जै	ऽ	इ	ऽ	हो	ऽ	ऽ	बा	ऽ	जे	ऽ
×			२				०			३			
रे	सा	—	रे	—	सा	—	ध	सा	—	रे	—	ग	—
द	श	ऽ	र	ऽ	थ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	दु	ऽ
×			२				०			३			
रे	सा	ऽ	रे	—	सा	—	ध़	सा	—	रे	—	ग	—
आ	ऽ	ऽ	र	ऽ	कौ	ऽ	शि	ल्या	ऽ	रा	ऽ	नी	ऽ
×			२				०			३			
रे	सा	—	रे	—	सा	—	सा	—	—	—	—	—	—
मं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ल	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (दूसरा प्रकार)

छापक पेड़ छेउलिया से पतवन गहबर हो।
एहो तेहि तर ठाढ़ी हरिनिया, हरिना बाट जोहत हो॥

चरतै चरत हरिनवा, तौ हरिनी से पूछैं हो।
हरनी, का तोर चरहा झुरान कि पानी बिन मुरझै हो॥

ना मोर चरहा झुरान, न पानी बिन मुरझहु हो।
हरिना, आज राजा जी कै छटी, तुहै मार डरिहै हो॥

मचिया बैठी कौसिल्या रानी, हरनी अरज करै हो।
रानी मसुआ तो सिजई रसौंइया, खलरिया हमै देतिऊ हो॥

पेड़वा से टगवै खलरिया, तौ मन समुझाइब हो।
रानी हेर फेर देखब खलरिया, जमुक हरना जीतंइ हो॥

जाहु हरिनी घर अपनै, खलरिया नाहीं देबै हो।
हरिनी खलरी कै खंजरी मंड़ैहौ, तो रामा मोरे खेलिहै हो॥

जब-जब बाजै खंजरिया, सबद सुन अनकै हो।
हरिनी ठाढ़ी ढ़कुरिया कै बीच, हरिनका बिसूरै हो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (दूसरा प्रकार) कहरवा

— ऩी सा ऩी	धा ऩी सा रे	— ऩीऩी सा ऩी	धा ऩी सा रे
ऽ छा प क	पे ऽ ऽ छे	ऽ उलि या से	प त व न
×	०	×	०
— सासा रे ऩी	सा — ग ग	म पम ग मग	रे सा ग ग
ऽ गह व र	हो ऽ ऐ हो	ते हिऽ त रऽ	हा ऽ ए हो
×	०	×	०
म पम ग मग	रे ऩी सा रे	— ऩीऩी सा ऩी	ध ऩी सा रे
ते हिऽ त रऽ	ठा ऽ ड़ी ह	ऽ रिनि या ह	रि ना बा ट
×	०	×	०
सा रें नी सा	— — — —		
जो ह त हो	ऽ ऽ ऽ ऽ		
×	०		

टीप : सम्पूर्ण गीत उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर

मोरे आंगन राजा चंदन के विरवा रे।

ओहि चढ़ि बोले हो कागा से बचन सुहावन हो।
एहो की तोहे माय पठायो कै सगे बीरनवा हो।।

ना हम हरिजी पठावा न नैहर ते आवा हो।
आज के नवमै महिनवा होरिल तोरे हुइहै हो।।

चुप रहु कागा तू चुप रहु बैरिन न सुनै हो।
ऐहो एक तो बिटिया मोरे कोख, दूजै हरि वारुन हो।।

आठ-नौ मास लागे होरिल जनम भये हो।
एहो बाजन लागे आनन्द बधैया, उठन लागे सोहर हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (कहरवा)

स्थाई

— सा सा सा	नी सा रेग म	गरे रे ग रे	सा सा रेग म
ऽ मो रे आं	ग न राऽ जा	ऽऽ चं दन कै	त्रि र वाऽ रे
×	०	×	०

अन्तरा

गरे रेरे रे गरे	सा — रेग म	गरे रे रे गरे	सा सा रेग म
ऽऽ ओही च ढ़िऽ	बो ऽ लेऽ हो	ऽऽ का गा सेऽ	ब च नऽ सु
×	०	×	०
गरे रे ग रे	स नीध धनी सा	— ध नी ध	प — धनी सा
ऽऽ हा व न	हो ऽऽ ऐऽ हो	ऽ की तो हे	मा ऽ यऽ प
×	०	×	०
— ध नी ध	प — धनी सा	नीध ध नी ध	प — — —
ऽ ठा यो कै	स — गेऽ बी	ऽऽ र न वा	हो ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

टीप : गीत के शेष अंतरे भी उपरोक्त स्वरों में गाये जायेंगे ।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर

राजा हम कोउ का मनावै ना जंवे,

सासू जो अैहै चरुआ चढ़ैहै,
उई नेग चार मंगिहै हम देबै न करबै,

रिसाय चलि जैहैं मनावै न जैबै ॥

जिठानी जो अैहै पियरी पिसैहै,
उई नेग चार मंगिहै हम देबै ना करिबै,

रिसाय चलि जैहै मनावै न करबै ॥

ननदी जो अैहै सतिया धरैहै,
उई नेग चार मंगिहै हम देबै न करबै ॥

रिसाय चलि जैहै मनावै न जैबै ॥

देवरा जो अैहै बंसिया बजैहै,
उई नेग चार मंगिहै, हम देबै न करबै ॥

रिसाय चले जैहैं मनावै न करबै ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (कहरवा)

		रे	ध़ रा
सा सा ग —	मप प — म	म ग — स	रे — रे —
ऽ जा हम ऽ	कोई का ऽ म	ना वै ऽ न	जै ऽ बै ऽ
×	०	×	०

अन्तरा

।		। ।	
सा ग — म	प — प —	म म — रे	म — ग म
सा सू ऽ जो	औ ऽ है ऽ	चरु ऽ आ च	ढ़ ऽ है उई
×	०	×	०
म म म ग	मप प — म	म ग — सा	रे — रे ध़
ने ऽग चा ऽर	मंगि है ऽ हम	दे वै ऽ न	कर वै ऽ रि
×	०	×	०
सा सा ग ग	मप प — म	म़ ग — सा	रे — रे —
सा य च लि	जैऽ हैं ऽ म	ना वै ऽ ना	जै ऽ वै ऽ
×	०	×	०

टीप : पूरे सोहर की अगली पंक्तियां अन्तरे के ही स्वर में गायी जायगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्नप्राशन

यह एक प्रमुख संस्कार गीत है। यह अन्नप्राशन के अवसर पर गाया जाता है। जब बच्चा पाँच-छः महीने का होता है, तब ससमारोह उसे खीर चखायी जाती है। इस संस्कार को अन्नप्राशन कहते हैं। उत्सव के बाद बच्चे को अन्न से बनी चीजें चखाई जाती हैं। यह धुन प्रायः सभी स्थानों पर समान रूप से लोकप्रिय है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्नप्राशन

आज मोरे लीपन पोतन और अन्नप्राशन हो ॥
सासू अरगन नेवतेहू परगन, नैहर सासुर हो ॥

अरगन आयेनि परगन और, ननिआउरि और, आजियाउरि हो ॥
सासू एक नाहीं आये, बिरन भैया कइस जियरा बोधब हो ॥

सासू मैंटिहि आपन भैया, ननद आपन देवरा हो ॥
सासू छतिया जे मोरी फहरानि, मैंकेहि उठि मैंटौ हो ॥

झमक के चढ़ल्यू अटरिया, खिरिकियन झांकेउ हो ॥
ननदी जनु भैया आवै, पहुनैया पगड़िया फैहरावै हो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्नप्राशन (कहरवा)

-- नी सा नी	धा नी सा रे	-- नी सा नी	धा नी सा रे
ऽ आज मो रे	ली ऽ प न	ऽ पो त न	औ र अ न्न
×	०	×	०
-- सा रे नी	सा -- ग ग	म पम ग मग	रे सा ग ग
ऽ प्रा श न	हो ऽ सा सू	अ रऽ ग नऽ	हाँ ऽ सा सू
×	०	×	०
म पम ग मग	रे नी सा रे	— नीनी सा नी	ध नी सा रे
अ रऽ ग नऽ	न्यो ऽ ते हू	ऽ पर ग न	नै ऽ ह र
×	०	×	०
सा रे नी सा	— — — —		
सा सु र हो	ऽ ऽ ऽ ऽ		
×	०		

टीप : पूरा गीत उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूड़न गीत

यह भी एक संस्कार गीत है। इसे स्त्रियाँ सामूहिक रूप से गाती हैं। जब पहली बार बालक के सिर से बाल उतारे जाते हैं, तब यह गीत गाया जाता है। बाल उतारने से पहले नाई अपने नेग के लिए आत्मीयता पूर्ण आग्रह करता है—झगड़ता है। उस्तरा चलाते समय बच्चा रोये नहीं, इसलिए उसके मुंह में लड्डू दे दिया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूड़न गीत

झगरै नऊआ मूड़न की बेरिया ।।

नाज भरी डलिया न छुइहौं, हाथे से ना लैहौं; एको पउआ ।।

चांदी कै छुरा, कटोरी कांसे की, तिहिया डारो रुपैया ।।

पांय पैंजनिया, कमर करधनिया, सोहै सोनै के खड़ुआ ।।

विलम्ब होत लखि लाल मगन भये, खांय ढुनैया कै लड़ुआ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूड़न गीत (कहरवा)

स्थाई

रेग सारे ग म	मग रेग — रे	सा नी ध प	ध सा सा —
हांऽ ऽऽ झग ड़े	नऊ ऽऽ आ मू	ड़ न की ऽ	वे रि या ऽ
×	×	×	×

अन्तरा

ध —नी ध प	धसा सा — सा	रेग सारे ग म	मग रेग सा —
ना ऽज भ री	डलि या ऽ न	छुई ऽऽ हौं हा	ऽऽ थेऽ से ऽ
×	×	×	×
प प — प	प ध म ग	गरे ग — सा	रेग सारे ग म
ना लै ऽ हौं	ए ऽ की ऽ	पऊ आ ऽ हा	झऽ गऽ ड़े ऽ
×	×	०	०
मग रेग — रे	सा नी ध प	ध सा सा —	
नऊ ऽऽ आ मू	ड़ न की ऽ	बे रि या ऽ	
×	×	×	

टीप : मध्यम को स्वर मानकर इस गीत की शेष पंक्तियां (अन्तरे) गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत

यह गीत बालक के जनेऊ के अवसर पर गाया जाता है। जनेऊ संस्कार "यज्ञोपवीत संस्कार" के नाम से भी जाना जाता है। इस अवसर पर बटुक विधिवत जनेऊ धारण करता है। प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार के बाद ही बालक विद्याध्ययन के लिए गुरुकुल काशी को प्रस्थान करता था। इस संस्कार गीत को स्त्रियाँ सामूहिक रूप से गाती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत

आवो सखी सब मंगल गायें, आयी जनेऊ की बेला ।।
काशी चारो वेद पढ़न को बरुआ चला अकेला ।।

सुंदर वेदी आंगन सोहत, लहलहात है केला ।।
यज्ञ धूम रहो पूर भवन में, मेहकत है जूही बेला ।।

कांधे जनेऊ, गले मृगछाला, बरुआ बना अलबेला ।।
आंगन गायन, बाहर बाजन, चहु दिश लाग्यो है मेला ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (कहरवा)

स्थाई

	म		
— रं नी सा	रे म प प	— ध म प	ग — रे सा
ऽ आ वो स	खी ऽ स ब	ऽ मं ग ल	गा ऽ यें ऽ
×	०	×	०
— ग रे ग	रे सा रे नी	सा — सा —	सारे ग रेग म
ऽ आ यो ज	ने ऽ ऊ की	वे ऽ ला —	हीऽ ऽ ऽऽ ऽ
×	०	×	०
— ग रे ग	रे सा रे नी	सा — सा —	
ऽ आ यी ज	ने ऽ ऊ की	वे ऽ ला —	
×	०	×	

⊙ गीत की अगली पंक्ति भी इसी प्रकार गायी जायेगी ।

अन्तरा

			रे
— ध ध धप	पध नी ध प	— ध प म	ग ग म म
ऽ सुं द रऽ	वेऽ ऽ दी ऽ	ऽ आं ग न	सो ऽ ह त
×	०	×	०
— ग रे ग	रे सा रे नी	सा — सा —	सारे ग रेग म
ऽ ल ह ल	हा ऽ त हैं	के ऽ ला ऽ	होऽ ऽ ऽऽ ऽ
×	०	×	०
— ग रे ग	रे सा रे नी	सा — सा —	
ऽ ल ह ल	हा ऽ त है	के ऽ ला ऽ	॥ आवो सखी ॥
×	०	×	

टीप : गीत के आगे के अन्तरे भी इसी स्वर लिपि में गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चाचर)

गंगा के तीरे रे तीरे, छिउल केरा बिरवा रे ॥
तातर ठाढ़ी सीतल देई मनमा बिसूरै रे ॥

बारा बरसि केरे लव कुश लागे, परम मनोहर रे ॥
अपने बाबुल अनुहार, जनेऊ के जोग भये रे ॥

ना हियां रानी कौशिल्या; नहिन राजा दशरथ रे ॥
सखिया सहिलिया अयोध्या, भिक्षा का डारै रे ॥

कुटिया से निकसे मुनि बालमीक, सिया समझावै रे ॥
सिया हम डरबै सीख, मनमाख जिन मानहु रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चाचर)

स्थाई

(म) रे म —	रे — सा —	नी — —	ध नी प ध
गं ऽ ऽ	गा ऽ के ऽ	नी ऽ ऽ	रे ऽ रे ऽ
×	२	०	३
सा — —	सा — — —	— — —	— — सा —
ती ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ छे ऽ
×	२	०	३
रे —	म — म —	ध ध —	ध — पध नी
उ ल ऽ	के ऽ रे ऽ	बि र ऽ	वा ऽ ऽऽ ऽ
×	२	०	३
ध — —	— — — —	म — —	रे — सा —
रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

⊙ दूसरी पंक्ति भी उपरोक्त स्वरों में गायी जायेगी।

अन्तरा

ध — —	ध — ध —	ध नी —	ध प प ध
बा ऽ ऽ	रै ऽ ब ऽ	रि स ऽ	के ऽ रे ऽ
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	प	—	प	—	प	—	प	म	—	ध	—	ध़	—
ल	व	ऽ	कु	ऽ	श	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	गं	ऽ
×			२				०			३			
ध	ध	—	ध	नी	ध	प	प	म	—	ध	—	प	—
प	र.	ऽ	म	ऽ	म	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ह	ऽ	र	ऽ
×			२				०			३			
म	रे	—	—	—	—	—							
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
×			२										

टीप : गीत की अन्य पंक्तियाँ, स्थाई की तरह ही गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत

नदिया किनारे बरुआ फिरै, केऊ पार उतारै हो ॥
पठै देऊ नाव नवरिया, बरुआ चढ़ि आवै हो ॥

ना मोरे नाव नवरिया, नाहीं घर खेवट हो ॥
जेकर जनेउआ कै साध, पैइर नदिया आवै हो ॥

नदिया किनारे बरुआ फिरै, केऊ पार उतारै हो ॥
पठै देऊ बाबा नवरिया, बरूआ चढ़ि आवै हो ॥

ना मोरे नाव नवरिया, नाही घर खेवट हो ॥
जेकर जनेऊआ कै साध, पैइर नदिया आवै हो ॥

नोट—इसी प्रकार छठी पंक्ति में 'बाबा' शब्द के स्थान पर चाचा, ताऊ, मामा इत्यादि के नाम, एक के बाद लेकर, गीत बढ़ा कर पूरा किया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चांचर)

स्थाई

म	प	—	नी	—	नी	—	नी	—	—	सा	—	नी	—
न	दि	ऽ	या	ऽ	कि	ऽ	ना	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ब	ऽ
०			३				×			२			
सा	सा	सा	सा	—	सा	—	सा	—	नी	रे	—	रे	—
रु	आ	ऽ	फि	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	को	ऽ	उ	ऽ
०			३				×			२			
रे	—	—	रे	—	ग	रे	सा	—	—	रे	—	सा	—
पा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	उ	ता	ऽ	ऽ	रै	ऽ	ई	ऽ
०			३				×			२			
नी	प	—	—	—	—	—							
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
०			३										

⊙ दूसरी पंक्ति भी स्थाई की ही तरह गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे	—	—	रे	—	रे	—	रे	—	—	रे	—	रे	म
ना	ऽ	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ	ना	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽ
०			३				×			२			
रे	रे	—	सा	—	—	—	—	—	नी़	रे	—	—	—
व	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
०			३				×			२			
रे	—	—	रे	—	ग॒	रे	सा	—	—	सा	नी़	रे	सा
ही	ऽ	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	खे	ऽ	ऽ	व	ऽ	ट	ऽ
०			३				×			२			
नी॒	प़	—	—	—	—	—							
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
०			३										

टीप : स्थाई के स्वरों में आगे का भी भाग गाया जायेगा तथा इसी प्रकार पूरा गीत गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चांचर)

हाथ दुनैया कुस पैंती, त बरुआ बराम्हन,
ठाढ़े बनारस जाय न भिक्षा देउ आजी ॥

इतना बुझाय नही पहि हौ, त बरुआ बराम्हन,
बाबा के गोत बताउ, तौ भिक्षा पहि हौ ॥

गोत तो हमरा बम्हन केरा और पंडित केरा,
कहाँ गये बाबा हमार त जनेऊ दिवावै ॥

टीप : इसी प्रकार चौथी पंक्ति में प्रयुक्त 'बाबा' शब्द के स्थान पर चाचा-चाची, दादा-दादी, मामा-मामी, आदि का गोत्र पूछा जाता है; और गीत बढ़ता चला जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चांचर)

प ध —	सा — सा —	सा रे —	ग — रे —
हा ऽ ऽ	थ ऽ दु ऽ	नै या ऽ	कु ऽ स ऽ
×	२	०	३
स ध —	ध — ध —	सा रे —	ग — रे —
पै ऽ ऽ	ती ऽ त ऽ	ब रु ऽ	आ ऽ ब ऽ
×	२	०	३
स ध —	ध — ध —	ध सा —	सा — सा —
रा ऽ ऽ	म्ह ऽ न ऽ	ठा ऽ ऽ	ड़े ऽ ब ऽ
×	२	०	३
सा रे —	ग — म —	ग — —	रे – सा —
ना ऽ ऽ	र ऽ स ऽ	जा ऽ ऽ	य ऽ त ऽ
×	२	०	३
सा रे —	ग — म ग	सा रे —	रे — — —
भि क्षा ऽ	दे ऽ उ ऽ	मा ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

टीप : पूरा गीत इन्ही स्वरों में गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत

विवाह गीत के अन्तर्गत विभिन्न वैवाहिक संस्कारों के समय गाये जाने वाले गीत आते हैं, जैसे द्वारचार, कलेवा, ज्योनार, गारी आदि।

'विवाह गीत' शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले गीतों में बेटी के लिए मां-बाप द्वारा वर ढूंढ़ने की चिंता के अतिरिक्त, विवाह के अवसर पर बारात के आने, और उसके स्वागत आदि के समय की रौनक उत्साह, उमंग और शोर-शराबे का सुंदर चित्रण मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुन्देलखंडी विवाह गीत

ऊँची अटरिया रंग भरी
चंदन जरी रे किवरिया ।।

तापै मामुल राजा पौड़ियो
माई ढुरैं बिजनियाँ ।।

जौनौ लाड़ली बेटी चढ़ि गयी
मामुल सोओ कि जागौ ।।

हम का सोवें बेटी लाड़ली
हमैं सोच तुम्हारो ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुन्देलखंडी विवाह गीत (रूपक)

स्थाई

सा	रे	—	नी	—	सा	—	रे	म	—	प	ध	म	ग
ऊँ	ऽ	ऽ	ची	ऽ	अ	ऽ	ट	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	
×			२		३		×			२		३	
रे	—	—	रे	ग	सा	ऽ	सारे	गम	म	म	—	म	ग
ऽ	ऽ	ऽ	रं	ग	भ	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽ	चं	ऽ	द	न
×			२		३		×			२		३	
सा	रे	—	ग	मग	सा	सा	सा	सा	—	सा	—	—	—
ज	री	ऽ	रे	ऽऽ	कि	ऽ	व	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

⊙ दूसरी कड़ी भी इसी प्रकार गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	ध	—	ध	—	ध	—	ध	ध	नी	ध	—	प	—
जो	ऽ	ऽ	नौ	ऽ	ला	ऽ	ड़	ली	ऽ	वे	ऽ	टी	ऽ
×			२		३		×			२		३	
—	—	—	प	ध	प	—	म	ग	रे	रे	ग	सा	—
ऽ	ऽ	ऽ	च	ढ़ि	ग	ऽ	ई	ऽ	ऽ	मा	ऽ	मु	ल
×			२		३		×			२		३	
सा	रे	—	ग	मग	सा	सा	सा	—	—	सा	—	—	—
सो	औ	ऽ	ऽ	ऽऽ	के	ऽ	जा	ऽ	ऽ	गौ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

टीप : अन्तरे की अन्य कड़ियाँ स्थाई की तरह गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत

बाजत आवैला ढोल दमामा,
उड़त आवैला निशान है ।

झूमत आवैलै इसर महादेउ,
बैंइल पर असवार है ॥

आगे परीछैं गैंली सासू मदागिन,
सरप छोड़ैला फुंकार है ॥

अइसन बउरवा कै गौरा न देबै,
बलू गौरा रहै कुआर रे ॥

धीया लैके उड़बी, धाया लैके बुडबी,
धीया लैके खेलब पताल हे ॥

अैसन बउरवा कै गौरा न देबै,
बलू गौरा रहै कुआर रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (चांचर)

स्थाई

सा	—	—		सा	—	सा	—	रें	सा	—		सा	—	सा	—
बा	ऽ	ऽ		ज	ऽ	त	ऽ	आ	ऽ	ऽ		वै	ऽ	ला	ऽ
×				२				०				३			
रे	म	—		म	—	म	—	प	म	—		म	—	म	—
ढ़ो	ऽ	ऽ		ल	ऽ	द	ऽ	मा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			
ध	ध़	—		ध	—	ध	—	ध	—	—		ध	—	ध	म
उ	ड़	ऽ		त	ऽ	आ	ऽ	वै	ऽ	ऽ		लै	ऽ	नि	ऽ
×				२				०				३			
म	प	—		—	—	प	धनीध	म	—	—		—	—	—	—
शा	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	न	ऽऽऽ	है	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

⊙ दूसरी एवं तीसरी पंक्ति भी इसी प्रकार गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	ध	—	ध	—	ध	—	ध	ध	—	ध	—	ध	म
आ	ऽ	ऽ	गे	ऽ	प	ऽ	री	छे	ऽ	गं	ऽ	ली	ऽ
×			२				०			३			
म	प	—	प	—	प	ध	म	—	—	म	—	प	—
सा	ऽ	ऽ	सू	ऽ	म	ऽ	दा	ऽ	ऽ	गि	ऽ	न	ऽ
×			२				०			३			
नी	नी	—	नी	—	सां	रें	ध	ध	—	म	—	प	—
स	र	ऽ	प	ऽ	छो	ऽ	ड़े	ला	ऽ	फुं	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ध	ध	—	प	—	प	ध	म	—	—	—	—	—	—
का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

टीप : आगे की पंक्ति स्थाई की प्रथम पंक्ति की तरह ही गायो जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत

माया सुघर वर ढूंड़ो रे माया,
माई लैंगी कन्यादान, लाड़ो नैं केस सुखाये।
मामा सुघर वर ढूंडन जैहैं,
जैहैं देस बिदेसु, लाड़ो नैं केस सुखाये ॥

चाचा सुघर वर ढूंडो रे चाचा,
चाची लैंगी कन्यादान, लाड़ो नै केस सुखाये ॥
चाचा सुघर वर ढूंडन जैहैं,
जैहैं सागर पार, लाड़ो नै केस सुखाये ॥

बाबा सुघर वर ढूंडो रे बाबा,
दादी लैंगी कन्यादान, लाड़ो नैं केस सुखाये ॥
बाबा सुघर वर ढूंडके लाये,
बेटी के अनुहार, लाड़ो नैं केस सुखाये ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

विवाह गीत (कहरवा)

स्थाई

			सा —
			मा ऽ
रे ग म ग	रे म ग॒ रे	सा रे सा नी̣	सा रे रे —
मा ऽ ऽ सु	ध र ब र	ढूं ऽ डो रे	मा ऽ मा ऽ
×	×	×	×
— — ध —	नी॒ ध प म	— ग प मग	रे म ग॒ रे
ऽ ऽ मा ऽ	ई ऽ ऽ ऽ	ऽ लैं ऽ गीऽ	क ऽ न्या ऽ
×	×	×	×
सा — — —	सा सा सा नी̣	सा रे सा नी̣	सा रे रे —
दा ऽ ऽ ऽ	ऽन ला ड़ो नै	के ऽ स सु	खा ऽ ये ऽ
×	×	×	×
— — सा —	मा —		
ऽ ऽ मा ऽ	ऽ ऽ		
×	×		

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

			प —
			मा ऽ
ध नी सां नी	ध सां नी ध	प ध प म	प प प —
मा ऽ ऽ सु	ध र ब र	ढूं ऽ ढ न	जै ऽ है ऽ
×	×	×	×
— म ध प	ग — रे ग	रे सा — —	— सा सा नी
ऽ जै ऽ है	दे ऽ स बि	दे ऽ ऽ ऽ	ऽस ला ड़ो
×	×	×	×
सा रे सा नी	सा रे रे —		
के ऽ स सु	खा ऽ ये ऽ		
×	×		

टीप : पूरा गीत उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (चांचर)

सांवन सुगना मे घीयु गुड़ पालेयु,
चैत चना केरी दार रे ॥

अब सुगना तू भयउ सुजुगवा,
बेटी के बर हेर लायहु रे ॥

उड़त-उड़त तू जाये डरे सुगना,
बैठेउ डरिया उनाय रे ॥

डरिया उनाय बैठा पखना फुलाये,
खितिया नजरिया घुमाय रे ॥

जेवर सुगना तू देखेउ सुन्दर,
मैहर-मैहर मुँह जोत रे ॥

जे घर सुगना तू सम्पत देखेउ,
तेहि घर रचेउ बियाहु रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (चांचर)

स्थाई

सा	—	—	सा	—	प	—	प	प	—	प	—	प	ध॒
स	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	सु	ग	ऽ	ना	ऽ	मैं	ऽ
×			२				०			३			
प	प	म	म	—	म	ध॒	प	—	—	ग॒	—	—	—
घी	यु	ऽ	गु	ऽ	ड़	ऽ	पा	ऽ	ऽ	लेयु	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
म	—	—	म	—	म	ध॒	प	—	—	ग॒	—	रे	—
चै	ऽ	ऽ	त	ऽ	च	ऽ	ना	ऽ	ऽ	के	ऽ	री	ऽ
×			२				०			३			
ग	—	—	रे	—	ग॒	रे	सां	—	—	—	—	—	—
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	ग	—	ग	—	ग	—	रे	सा	—	म	—	ध	—
अ	ब	ऽ	सु	ऽ	ग	ऽ	ना	ऽ	ऽ	तू	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
प	प	—	ग	—	ग	रे	सा	सा	—	नी	—	—	—
भ	ये	ऽ	हू	ऽ	सू	ऽ	जु	ग	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	रे	—	ग	—	म	—	ग	रे	—	सा	—	रे	—
वे	ऽ	ऽ	टी	ऽ	कै	ऽ	ब	र	ऽ	है	ऽ	र	ऽ
×			२				०			३			
ग	—	—	रे	ग	रे	—	सा	—	—	—	—	—	—
ला	ऽ	ऽ	य	ऽ	हु	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

टीप : गीत के शेष अन्तरे अर्थात् पूरा गीत इसी प्रकार गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत

हरे - हरे बाँस कटाओ मोरे बाबुल,
ऊँची छावों चौपाल रे ।

सागर ताल खुदाओ मोरे बाबुल,
हाथी पिये जल नीर रे ।।

जैसे जंगल की चिड़िया हो बाबुल,
रात बसैं दिन उड़ि चलैं ।

बाबुल घर हम धीयर बिहायी,
रात बसैं दिन उड़ि चलैं ।।

छोटे बीरन मोरी पकरी पलकिया,
मोरी बैहन कहाँ जाउरे ।

छाड़ो बिरन तुम हमरी पलकिया,
हम परदेसी लोग रे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

विवाह गीत (चांचर)

सा	सा	—	सा	—	प	—	प	—	—	प	—	प	ध॒
ह	रे	ऽ	ह	ऽ	रे	ऽ	बाँ	ऽ	ऽ	स	ऽ	क	।
×			२				०			३			
प	—	म	म	—	म	ध॒	प	—	—	ग॒	—	ग॒	ऽ
टा	ऽ	उ	मो	ऽ	रे	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ऽ	ल	ऽ
×			२				०			३			
म	—	—	म	—	म	ध॒	प	—	—	ग॒	—	रे	—
ऊँ	ऽ	ऽ	ची	ऽ	छा	ऽ	वो	ऽ	ऽ	चौ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग॒	—	—	रे	—	ग॒	रे	सा	—	—	—	—	—	—
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध़	नी	—	सा	—	ग	—	ग	—	—	ग	—	ग	—
सा	ऽ	ऽ	ग	ऽ	र	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ल	ऽ	खु	ऽ
×			२				०			३			
ग	ग	—	म	—	प	—	ग	—	—	म	—	म	—
दा	ओ	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ऽ	ल	ऽ
×			२				०			३			
म रे	—	—	म	—	म	—	प	ध	—	म	—	प	—
ह	ऽ	ऽ	थी	ऽ	पी	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ल	ऽ
×			२				०			३			
ग	—	—	रे	ग	रे	—	सा	—	—	—	—	—	—
नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ भी इसी प्रकार गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

बन्ना नगर क्षेत्र का लोकगीत है। यह ग्राम क्षेत्रों में बहुत कम गाया जाता है। आजकल इस लोकगीत की थोड़ी बहुत प्रथा गाँवों में भी चल गयी है; क्योंकि यह मुगलकाल की देन है, जैसा कि 'बन्ना' शब्द से मालूम पड़ता है। इसलिए इसमें खड़ी बोली अधिक मात्रा में आती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

केसरिया बन्ना बागों में आया ।
आवो जी, आवो जी । होऽ

मेरे हाथ फूलों की डाली, मैं तो
मालिन बनकर आयी,
आवो जी, आवो जी । होऽ

मेरे हाथ चौमुखी दियना, मैं तो
ज्योति बनकर आयी,
आवो जी, आवो जी । होऽ

मेरे हाथ पानों के बीड़े, मैं तो
लाली बनकर आयी,
आवो जी, आवो जी । होऽ

विशेष—'आवो, जी' के स्थान पर 'आवो री' भी गाया जा सकता है, क्योंकि गायन में दोनों का प्रचलन है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

— ध़ ध़ नी	सा — सा सा	सारे गम म म	मग रेग सा —
ऽ के स रि	या ऽ ब न्ना	बाऽ ऽऽ गों में	आऽ ऽऽ या ऽ
×	×	×	×
— प — पध	म — म ग	रे ग ग सा	सारे नी़सा ध़नी़ पध़
ऽ आ ऽ वोऽ	जी ऽ आ ऽ	वो ऊ जी ऽ	होऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

— प प प	— ध म —	मप धप म ग	गम मग गप प
ऽ मे रे हा	ऽ थ फू ऽ	लौंऽ ऽ ऽ की ऽ	डाऽ लीऽ मैंऽ तो
×	×	×	×
— गम गरे सा	सारे — ग मग	सारे — सा —	— प — पध
ऽ माऽ ऽलि न	बन ऽ क रऽ	आऽ ऽ ई ऽ	ऽ आ ऽ वोऽ
×	×	×	×
म — म ग	रे ग ग सा	सारे ऩीसा धऩी प़ध़	— ऩी ध ऩी
जी ऽ आ ऽ	वो ऽ जी ऽ	होऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ	ऽ के र
×	×	×	×

टी : गीत के शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना बुन्देलखण्डी (दादरा)

परदे भीतर कर लो री,
लगि जैहै नजरिया ॥

जे बनरा बाबुल जू के प्यारे,
अम्माँ के नैयनों के तारे री ॥ लगि जैहै—

जे बनरा आजुल जू के प्यारे,
आजी के नैयनों के तारे री ॥ लगि जैहै—

जे बनरा काका जू के प्यारे,
काकी के नैयनों के तारे री ॥ लगि जैहै—

टीप : इसी प्रकार अन्य सम्बन्धियों का नाम ले लेकर गीत को और बढ़ाया जा सकता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (दादरा)

स्थाई

—	—	ग	ग	ग	म	रे	ग	—	सा	—	—
ऽ	ऽ	प	र	दे	ऽ	भी	ऽ	ऽ	तर	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
—	—	ग	रे	ग	—	म	—	—	ग	ग	—
ऽ	ऽ	क	ऽ	ल्लो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ल	ग	ऽ
×			०			×			०		
सा	सा	रे	—	—	सा	—	नी़	ध़	नी़	सा	—
जै	ऽ	है	ऽ	ऽ	न	ऽ	ज	ऽ	रि	या	ऽ
×			०			×			०		

अंतरा

											नी़ जे
सा	ध़	नी़	स	—	—	ग	—	—	म	म	—
ऽ	ब	न	रा	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ल	ऽ
×			०			×			०		
ग	—	रे	सा	—	गरे	सा	नी़	सा	नी़	सा	नी़
जू	ऽ	के	प्या	ऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जे
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	ध़	नी़	सा	—	—	ग	—	—	म	म	—
ऽ	व	न	रा	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ल	ऽ
×			०			×			०		
ग	—	रे	सा	—	गरे	सा	नी़	सा	सा	प	प
जू	ऽ	के	प्या	ऽ	ऽऽ	रं	ऽ	ऽ	अ	ऽ	म्मा
×			०			×			०		
—	प	ध	म	रे ग	—	सा	सा	—	—	—	ग
ऽ	के	ऽ	नैं	ऽ	ऽ	नौं	के	ऽ	ऽ	ऽ	ता
×			०			×			०		
रे	ग	—	म	म	—	ग	ग	—	सा	—	र
ऽ	रे	ऽ	री	ऽ	ऽ	ल	गि	ऽ	जै	ऽ	है
×			०			×			०		
—	सा	—	नी़	ध़	नी़	सा	—	—	—	—	ग
ऽ	न	ऽ	ज	ऽ	र	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
×			०			×			०		

टीप : शेष अन्तरे भी उपरोक्त स्वरों में ही, इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना बुन्देलखण्डी (दादरा)

इन गलियन हैके लैयो जी रघुनाथ बना कों ॥

शीश सोहै रेशम की पगिया,
कलगी मैं अतर लगैयो जी ॥ रघुनाथ—

कान बनै के कुण्डल सोहै,
चुन्नी पै अतर लगैयो जी ॥ रघुनाथ—

अंग बनै के जामा सोहै,
पटकै मैं अतर लगैयो जी ॥ रघुनाथ—

हाथ बनै के कंगना सोहै,
लटकन पै अतर लगैयो जी ॥ रघुनाथ—

टीप : यह बन्ना 'परदे के भीतर कर लो री' बन्ने की धुन पर गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

बन्ना पैहने बसंती चीरा रे ।

शीश सोहै रेशम की पगिया,
कलगी में लागे मोती हीरा रे ।

कान बनै के कुण्डल सोहै,
कुण्डल मैं लागे मोती हीरा रे ।

अंग बनै के जामा सोहै,
पटके मैं लागे मोती हीरा रे ।

हाथ बनै के कंगना सोहै,
लटकन मैं लागे मोती हीरा रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

— — रे म	ग सा — नी	ध़ नी सा रे	ग — म —
ऽ ऽ ब न्ना	पैंह ने ऽ ब	स ऽ ती ऽ	ची ऽ रा ऽ
×	×	×	×

— रेग सा रे	
ऽ रेऽ ऽ ऽ	
×	

अन्तरा

— सा — नी	ध़ नी सा रे	ग ग म —	ग ग सा —
ऽ शी ऽश सो	हे ऽ रे ऽ	श म की ऽ	प गि या ऽ
×	×	×	×
— प प म	पध मध प म	— ग — सा	सारे गम म म
ऽ कल गी मैं	लाऽ गेऽ मो ती	ऽ ही ऽ रा	रेऽ ऽऽ मो ती
×	×	×	×

— ग — सा	सारे गम रे म
ऽ ही ऽ रा ऽ	रेऽ ऽऽ ब न्ना
×	×

टीप : गीत की अन्य पंक्तियां (अन्तरे) इसी प्रकार गायी जायेंगी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

बन्ने के नैना जादू वान, मैं वारी जाऊँ।

शीश सौहे रेशम की पगिया,
मोर पंखा की फैहरान ।। मैं वारी जाऊँ ....।

कान बनै के कुण्डल सोहै,
मोतियन की चमकान ।। मैं वारी जाऊँ ....।

श्याम बदन पर पियरो जामा,
मुनि मन हरत लुमान ।। मैं वारी जाऊँ ....।

संग सोहै राजौ की बेटी,
रुकमिन वाम बखान ।। मैं वारी जाऊँ .. ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

— ग ग ग	ग सारे ग म	मग रेग सासा सानि़	सा रेग नि़ सा
ऽ ब न्नें के	नें नाऽ जा दू	बाऽ ऽऽ ऽ,न मैं ऽ	वा रीऽ जा ऊँ
×	×	×	×

सानि़ धनि़ ध नि़	सा रेग नि़ सा
हाँऽ ऽऽ ऽ मैं	वा रीऽ जा ऊँ
×	×

अन्तरा

— ध़ -,ध -,नि़	सा रेग नि़ सा	— ग -,ग -,म	मग रेग नि़ सा
ऽ शी ऽश ऽसो	हे ऽऽ रे ऽ	ऽ शम ऽकी ऽऽ	पऽ गिऽ या ऽ
×	×	×	×

— ग ग ग	ग सारे ग म	मग रेग सामा सानि़	सा रेग नि़ सा
ऽ मो र पं	खा कीऽ फै है	राऽ ऽऽ ऽ,न मैंऽ	वा रीऽ जा ऊँ
×	×	×	

सानि़ धनि़ ध नि़	सा रेग नि़ सा
हाँऽ ऽऽ ऽ मैं	वा ऽरी जा ऊँ
×	×

टीप : गीत के शेष अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

राम पै जदुआ कोई मत डारो।

खड़ी खड़ी बरजे रानी सुनैना,
सब सखी सैना निवारो॥

दुलहिन सिया रूप गुन आगरि,
बन्ना जग उजियारो॥

गौतम नारी अहिल्या तारी,
मुनिमख को रखवारो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

सा
रा

सा	रे (ग)	सा	नी	—	प़	ऩी	ऩी	सा	सा	रेग	म	ग	—	सा	—
ऽ	म	पै	ऽ	ऽ	ज	दु	आ	को	ई	मऽ	त	डा	ऽ	रो	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

—	—	—	—	ग	ग	ग	म	प	प	प	—	ध	म	—	म
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ख	ड़ी	ख	ड़ी	ब	र	जे	ऽ	रा	नी	ऽ	सु
×				×				×				×			
मध	पम	गम	रेग	ग	ग	ग	ग	ग	म	—	पम	ग	—	सा	—
नँऽ	ऽऽ	नाऽ	ऽऽ	स	ब	स	खी	सै	ना	ऽ	निऽ	वा	ऽ	रो	—
×				×				×				×			

टीप : गीत के शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

श्याम बने हैं बन्ना दुलहा जी,
रुकमिन दुलहिन बन आयी ॥

रतन खम्ब से परत भाँवरी,
सुरन बधू मंगल गायी ॥

मंगल कलश द्वार पै साजे,
बाज रही है शहनायी ॥

कान्हा के सोहे पीत पीताम्बर,
रुकमिन कै चुनरी लहरायी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (चांचर)

स्थाई

स	ग	—	म	—	प	—	ग	म	—	ग	—	सा	—
श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	ब	ऽ	ने	हैं	ऽ	ब	ऽ	न्ना	ऽ
×			२				०			३			
सा	रे	—	रे	—	नी	—	सा	—	—	—	—	—	—
दु	ल	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
प	सां	—	सां	—	प	—	प	ध	—	प	—	म	—
रु	क	ऽ	मि	ऽ	न	ऽ	दु	ल	ऽ	हि	ऽ	न	ऽ
×			२				०			३			
					म	म							
म	प	—	ग	—	ग	—	प	—	—	—	—	—	—
ब	न	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	—	प	—	प	—	प	ध	—	प	—	म	—
र	त	ऽ	न	ऽ	ख	ऽ	ऽ	म्ब	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
म	प	—	ग	—	सा	—	ग	ग	—	प	—	—	—
प	र	ऽ	त	ऽ	भां	—	ऽ	व	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
प	सां	—	सां	—	प	—	प	ध	—	प	—	म	—
सु	र	ऽ	न	ऽ	ब	ऽ	धू	ऽ	ऽ	मं	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
म	प	—	ग	—	ग	—	प	—	—	—	—	—	—
ग	ल	ऽ	गा	ऽ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

टीप : गीत के शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

सिया समाज सुहाग सुन्दरी,
रघुबर आये जनक की नगरी ॥

जुरि आयीं रनिवास जनक के,
एक से एक रूप गुन आगरि ॥

मिथिलापुर तोरन से शोभित,
धाम-धाम धरे कंचन घट री ॥

मोर मुकुट सिर लसत मनोहर,
अलकावलि मुख शशि पर बिखरी ॥

रूप अनूप लखौं रघुबर को,
थकित भयी सब नवल नागरी ॥

श्याम गौर लखि सुन्दर जोड़ी,
रानी सुनैना मोह लयी री ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

अस्थाई

सा	रे	सा	ग	ग	—	ग	ग	ग	म	प	प	प	ध	म	ग
सि	या	ऽ	स	मा	ऽ	ज	सु	हा	ऽ	ग	सु	ऽ	न्द	री	ऽ
×				×				×				×			
ग	म	प	प	प	ध	पध	नीसां	नी	नी	ध	म	प	ध	म	ग
र	घु	ब	र	आ	ऽ	येऽ	ऽऽ	ज	न	क	की	न	ग	री	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

नी	नी	नी	नी	नी	—	नी	प	पध	नीसां	सां	सां	नी	रेंगं	सं	—
जु	रि	आ	ऽ	यीं	ऽ	र	न	वाऽ	ऽऽ	स	ज	न	क	के	ऽ
×				×				×				×			
नी	—	नी	प	प	ध	नी	सां	नी	नी	ध	म	प	ध	म	ग
ए	ऽ	क	से	ए	ऽ	क	रू	ऽ	प	गु	न	आ	ऽ	ग	रि
×				×				×				×			

टीप : गीत के शेष अन्तरे अर्थात आगे की पंक्तियाँ भी इसी प्रकार गयी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टोना

यह घुड़चढ़ी और कलेवा के समय गाया जाता है। इसे स्त्रियाँ सामूहिक रूप से गाती हैं। तरह-तरह के टोनों का वर्णन करके, इस बात पर बल दिया जाता है कि, वर परायी स्त्रियों की ओर न जाये और अपनी पत्नी से ही प्रेम करे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टोना (बुन्देलखण्डी)

माई री मैं टोना करिहौं ।
कौआ की जीबैं, कबूतर के पखना, उड़त चिरैया के नैन री ॥
इन तीनन को तबीज बनैगो, बांधौ बनै के नैन री ॥ मैं टोना .....
नैनन में बांध, बना नैन ना चलैहै, तके न पराई नार रे ॥ मैं टोना .....

कौआ की जीबैं, कबूतर के पखना, उड़त चिरैया के नैन रे ॥ मैं टोना .....
इन तीनन कौ तबीज बनैगौ, बांधो बनै के हाथ रे ॥ मैं टोना .....
हाथन मैं बांध बन्ना हाथ न चलैहै, छुये न पराई नार रे ॥ मैं टोना .....

कौआ की जीबैं, कबूतर के पखना, उड़त चिरैया के नैन रे ॥ मैं टोना ......
इन तीनन कौ तबीज बनैगौ, बांधौ बनैके पांय रे ॥ मैं टोना .....
पायन मैं बांध बन्ना पांय न चलैहै, चढ़े न पराई सेज रे ॥ मैं टोना .....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टोना (कहरवा)

स्थाई

—	ग	रे	ग	म	—	ग	—	सा	—	रे	—	ऩी	—	सा	—
ऽ	मा	ऽ	ई	री	ऽ	मैं	ऽ	टो	ऽ	ना	ऽ	क	रि	हौं	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

ऩी	सा	ध़	ऩी	सा	—	ग	ग	म	—	ग	रे	सा	गरे	सा	—
को	ऽ	आ	की	जी	ऽ	बै	क	वू	ऽ	तर	के	प	खऽ	ना	ऽ
×				×				×				×			
प	प	प	धप	मग	रेग	सा	सा	—	ग	रे	ग	म	—	ग	—
उ	ड़	त	चिऽ	रैंऽ	ऽऽ	या	के	ऽ	नैं	ऽ	न	री	ऽ	मैं	ऽ
×				×				×				×			
सा	—	रे	—	ऩी	—	सा	—								
टो	ऽ	ना	ऽ	क	रि	हौं	ऽ								
×				×											

टीप : शेष गीत इसी प्रकार के स्वरों में गाया जायेगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारचार

यह उस समय का गीत है जब बरात वधू के द्वार पर पहुँचती है। इसमें बरात के स्वागत में दौड़-दौड़ कर किये जाने वाले आयोजनों और दूल्हे को देखने को लालायित स्त्रियों की मनोदशा का वर्णन मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारचार

द्वार पै आयी बरात सखी री,
सब मिलि गावो द्वारचार री ॥

मंगल चौक पुरावो सखी री,
कंचन कलश धरावो सखी री ॥

चौमुख दियना जरावो सखी री,
दुलहा की आरती उतारो सखी री ॥

ई समधी का दुआर से निकार री,
टुक-टुक चितवैं हमार गली आयके ॥

खोखन-खोखन दुधव्रा पियाई री
नीकी तरह राखेऊ हमार बेटी बारी री ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्रचार (चांचर)

स्थाई

प	—	—	प	—	ध	प	म	ग	—	रे	—	सा	—
द्वा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	पै	ऽ	आ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ब	ऽ
×			२				०			३			
रे	सा	—	सा	—	सा	—	रे	ग	—	म	—	ग	—
रा	ऽ	ऽ	त	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
रे	रे	—	रे	—	सा	—	रे	सा	—	ऩी	—	प़	—
स	ब	ऽ	मि	ऽ	ल	ऽ	गा	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ध़	सा	—	सा	—	सा	—	रे	रे	—	सा	—	—	—
द्वा	ऽ	ऽ	र	ऽ	चा	ऽ	ऽ	र	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

टीप : गीत की दूसरी कड़ी भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	—	—	ध	—	नी̱	—	ध	—	—	प	—	ध	प
चौ	ऽ	ऽ	मु	ऽ	ख	ऽ	दि	य	ऽ	ना	ऽ	ज	ऽ
×			२				०			३			
म	ग	—	रे	—	सा	—	रे	ग	—	म	—	ग	—
रा	ऽ	ऽ	वो	ऽ	स	ऽ	खी̱	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
रे	रे	—	रे	—	सा	—	रे	सा	—	ऩ	—	प़	—
दु	ल	ऽ	हा	ऽ	की	ऽ	आ	र	ऽ	त	ऽ	उ	ऽ
×			२				०			३			
ध़	सा	—	सा	—	सा	—	रे	रे	—	सा	—	—	—
ता	ऽ	ऽ	रो	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

टीप : अंतरे की शेष पंक्तियाँ भी इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा

विवाह के बाद जब वर अपने सहबोला के साथ कलेवा करने आता है, तब स्त्रियाँ समवेत् स्वरों में यह गीत गाती हैं। इसमें वर-वधू का सरस एवं परिहास सौन्दर्य का वर्णन होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा

आये करन कलेवा चारों कुंवर राजा जनकपुरी।
राम लछमन सोहैं भरत शत्रुहन पै चवर ढुरी ॥
सोभा बनैइ न बरनत जनकपुरी लागै इन्द्रपुरी।
राजा जनक परोसैं रानी लिये झारी रतन जड़ी ॥
धन्य भाग जनक के प्रेम मगन सुध बुध बिसरी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा (चांचर)

म	—	म	ग	सा	रे	—	म	—	म	ग	रे	(रे)सा	—
आ	ऽ	ये	ऽ	क	र	ऽ	न	ऽ	क	ऽ	ले	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
सा	—	—	—	—	—	—	म	—	म	—	म	प	धप
वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ये	ऽ	क	र	ऽऽ
३				×			२				०		
ग	—	म	—	प	ध	—	पध	नी	ध	नी	प	ध	—
न	ऽ	क	ऽ	ले	ऽ	ऽ	वाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चा	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
प	ध	ग	—	म	म	—	प	—	मं	—	प	प	—
रौ	ऽ	कुं	ऽ	व	र	ऽ	रा	ऽ	जा	ऽ	ज	न	ऽ
३				×			२				०		
प	ध	ग	—	म	—	—							
क	ऽ	पु	ऽ	री	ऽ	ऽ							
३				×									

टीप : गीत की शेष पंक्तियां भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा

कीरत गोद गोपाल लिए मुख चूमत,
मोद बढ़ायो कि हाँ जी ।

रूप की राशि मयंक मुखी, मोरी राधा के रूप
लजायो कि हाँ जी ।

नाम तो उनके सुनो घनश्याम कि, जबसे गरब
घर आयो कि हाँ जी ।

नाम तो हमनै सुनै वसुदेव कहाँ तोरे,
आँगन आयो कि हाँ जी ।

गोरस सिंधु बहे घर भीतर, दोनों
हाथ लुटायो कि हाँ जी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा (चांचर)

स्थाई

ग म —	प प —	ग — —	सा — सा रे
की ऽ ऽ	र ऽ त ऽ	गो ऽ ऽ	द ऽ गो ऽ
×	२	०	३
नी — —	सा — नी —	सा — —	प — प —
पा ऽ ऽ	ल ऽ लि ऽ	ए ऽ ऽ	मु ऽ ख ऽ
×	२	०	३
म प —	नी — नी —	सा — —	सा — सा —
चू ऽ ऽ	म ऽ त ऽ	मो ऽ ऽ	द ऽ ब ऽ
×	२	०	३
सा रे —	सा — सा नी	सा — —	ग — — —
ढ़ा ऽ ऽ	यो ऽ कि ऽ	हाँ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

टीप : गीत की दूसरी कड़ी भी इसी तरह गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	—	—	प	—	प	—	प	ध	—	म	—	म	—
ना	ऽ	ऽ	म	ऽ	तो	ऽ	उ	न	ऽ	के	ऽ	सु	ऽ
×			२				०			३			
म	प	ध	म	—	ग	—	म	—	ग	प	—	प	—
नौ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	न	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	सु	ऽ
×			२				०			३			
म	प	ध	म	—	ग	—	म	—	ग	प	—	प	—
नौ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	न	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	किं	ऽ
×			२				०			३			
ग	ग	—	ग	—	ग	—	ग	ग	—	म	ग	म	—
ज	ब	ऽ	से	ऽ	ग	ऽ	र	ब	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ
×			२				०			३			
रे	म	—	ग	—	सा	—	रे	नी	—	सा	—	—	—
आ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	के	ऽ	हाँ	ऽ	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

टीप : शेष अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी

'गारी' बहुत ही प्रचलित और प्रसिद्ध लोकगीत है। यह ज्यौनार के समय गायी जाती है। वर तथा उसके सगे-सम्बन्धियों को चुन-चुन कर गालियाँ दी जाती हैं। 'गारी' गाने वालियों के साथ-साथ 'गारी' सुनने वाले भी इसमें विशेष रस लेते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी

घर घर बाजत वधउआ आये हैं लाला,

सगरे बरतिया जेवन बैठे,
ढ़ाई सेर के खउआ ।। आये हैं लाला……

मड़ये तर समधी जी बैठे
जैसे बरात के नउआ ।। आये हैं लाला……

समधी हमरे ऐसे बोलैं,
जैसे बोलै कउआ ।। आये हैं लाला……

हमरे समधी ऐसे लागैं,
जैसे लागै हउआ ।। आये हैं लाला……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी (ताल—कहरवा)

स्थाई

— रे रे स	रेग मग रे रे	सा सा — सा	ऩी सा रे रे
ऽ घर घ र	बऽ जऽ त ब	धऽ आ ऽ आ	ये है ला ला
×	×	×	×

अन्तरा

— रेरे रे सा	रे म म —	— म म म	म — रेग —
ऽ सब ही ब	र ति या ऽ	ऽ जै व न	बै ऽ ठेऽ ऽ
×	×	×	×
— रे रे स	रेग मग रे रे	सा सा — स	ऩी सा रे रे
ऽ ढ़ा ई से	ऽऽ रऽ के ऽ	खऊ आ ऽ आ	ये हैं ला ला
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे की तरह ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी

जनकपुरी के नर नारी श्री हरि को गावै गारी जी,
सिया राम से बनी ॥
बड़ भागी राजा दशरथ जी, तिनके पुत्र तुम चारी जी,
सिया राम से बनी ॥
कैसे बांट बनै हरि प्यारो, मइया तीन तिहारी जी,
सिया राम से बनी ॥
गोरे दशरथ गोरी कौशिल्या, गोरे सब सरदारी जी,
सिया राम से बनी ॥
लछमन भरत कुटुंम से न्यारे, कैसी सूरत कारी जी,
सिया राम से बनी ॥
राजकुंवरि राजन संग जावै, बनी जगत की रीती जी,
सिया राम से बनी ॥
रिशियन के क्यों संग सिधारी भगिनी बुआ तुम्हारी जी,
सिया राम से बनी ॥
क्रोधवन्त ह्व लक्ष्मण बोले, कर अँखियाँ रतनारी जी,
सिया राम से बनी ॥
जनकपुरी मैं आय राम नै नीची करी हमारी जी,
सिया राम से बनी ॥
हँस हँस रामचन्द्र समुझावैं, सुन लछमन व्रतधारी जी,
सिया राम से बनी ॥
इन गारिन कौ विलग न मानौ, गारी प्रेम पियारी जी,
सिया राम से बनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी (कहरवा)

स्थाई

म	म	म	म	म	—	म	—	ग	म	ग	रे	रे	प	प	म
ज	न	क	पु	री	ऽ	के	ऽ	न	र	ना	ऽ	री	ऽ	श्री	ऽ
×				×				×				×			
ग	म	म	ग	रे	ग	ग	रे	ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	सा	ऩी
ह	र	को	ऽ	गा	ऽ	बै	ऽ	गा	ऽ	री	ऽ	जी	ऽ	सि	या
×				×				×				×			
ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	—	—								
रा	ऽम	से	बं	नी	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प प प प	प — प म	म ध ध प	ग प म —
ब ड़ भा ऽ	गी ऽ रा ऽ	जा ऽ द श	र थ जी ऽ
×	×	×	×
म म म ग	रे ग रे ग	नी़ सा रे ग॒	रे — सा नी़
ति न के पु	ऽ त्र तु म	चा ऽ री ऽ	जी ऽ सि या
×	×	×	×
नी़ सा रे ग॒	रे — — —		
रा ऽम से ब	नी ऽ ऽ ऽ		
×	×	×	×
म — म —	म — म म	ग म ग रे	रे प प म
कै ऽ से ऽ	बाँ ऽ र ब	नै ऽ ह रि	ला ऽ रो ऽ
×	×	×	×
ग म म ग	रे ग ग रे	नी़ सा रे ग॒	रे — सा नी़
म इ या ऽ	ती ऽ न ति	नी ऽ ऽ ऽ	ज़ी ऽ सि या
×	×	×	×
नी़ सा रे ग	रे — — —		
रा ऽम से ब	नी ऽ ऽ ऽ		
×	×		

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अन्तरे की तरह गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यौनार

बरातियों सहित वर जब खाना खाने कन्यापक्ष के यहाँ आता है, तब यह गीत स्त्रियाँ सामूहिक रूप से गाती हैं। इसमें विविध व्यंजनों की संख्या एवं स्वाद का अतिरंजित वर्णन होता है। विवाह के अवसर पर यह लोकगीत प्रायः सभी अंचलों में गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यौनार

जब ही गोपाल चले मधुबन को, घर अंगना न सुहाये जी।
हो लाला घर अंगना न सुहाये जी ।।

नाव नाव गोपिन चढ़ि आयीं, कृष्ण गरुड़ चढ़ि आये जी ।
हो लाला कृष्ण गरुड़ चढ़ि आये जी ।।

उतर पड़े जमना जी के तीरे, द्वादश तिलक लगाये जी।
हो लाला द्वादश तिलक लगाये जी ।।

छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन, लुचई और सुहारी जी ।
हो लाला लुचई और सुहारी जी ।।

दाल-भात, मैदा की पूरी, चटनी और अचारी जी ।
हो लाला चटनी और अचारी जी ।।

रामजी जेवैं लखन जी से पूछें, कैसी बनी तरकारी जी।
हो लाला कैसी बनी तरकारी जी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यौनार (कहरवा)

— रेरे रे रे	सा नी ध प	ध सा सा सा	रे रे सा —
ऽ जब ही गो	पा ऽ ल च	ले ऽ म धु	व न को ऽ
×	×	×	×
— ध सा रे	ग — सा रे	ग मग रे सा	सा — — —
ऽ घर अं ग	ना ऽ न सु	हा ऽऽ ये ऽ	जी हो ला ला
×	×	×	×
— पध ध प	म ग सा रे	ग मग रे सा	सा — — —
ऽ घर अं ग	ना ऽ ना सु	हा ऽऽ ये ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

टीप : शेष गीत की पंक्तियाँ भी उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत

बेटी की विदा के समय गाया जाने वाला यह गीत बड़ा ही मर्मस्पर्शी है।

लाड़-प्यार से पाली गयी बेटी के अपनी आँखों से दूर चले जाने की कल्पना से, विह्वल मां-बाप की मनोदशा के साथ-साथ, विदा होती हुई बेटी के मन की व्यथा का भी मार्मिक चित्रण ही इन गीतों की अपनी विशेषता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत

अरी अरी बेटी पियारी रानी, तोरी बोली भली,
तोरी बचन भली ।।
ऐसे बपैया घर छौड़ के बेटी कँहवाँ चली,
हो बेटी कँहवाँ चली,

जैसे बनाकी कोयलिया उड़ बांगा गयी,
फुल बगिया गयी ।
तैसे बपैया घर छोड़के अब मैं ससुररिया चली ।
सुसरिया चली ।।

छोड़वा चढे भैया आगे खड़े, हाथे तीर कमान ।
हाथे तीर कमान ।
रोके बहन की डगरिया बहन मोरी कँहवा चली
बहन कँहवाँ चली ।।

जानै दे मैया जाने दे, बाबा लगन धरी ।
आम्मा साज करी ।।
एँहों में काज पिरोजन, बिरन तोरे बेटा भये,
तोरे बेटा भये ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत (चांचर)

स्थाई

सा सा —	सा — सा प	प — —	सा — सा प
अ री ऽ	अ ऽ री ऽ	वे ऽ ऽ	टी ऽ पि ऽ
×	२	०	३
प — —	म — ग —	रे सा —	सा — सा रे
या ऽ ऽ	री ऽ रा ऽ	नी ऽ ऽ	तो ऽ री ऽ
×	२	०	३
म ग —	रे — सा —	न ध —	सा — सा रे
वो ऽ ऽ	ली ऽ म ऽ	ली ऽ ऽ	तो ऽ री ऽ
×	२	०	३
ग म ग	रे — सा —	सा — —	— — — —
ब च न	ऽ ऽ भ ऽ	ली ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	

टीप : गीत की अगली पंक्ति भी उपरोक्त स्वरों में गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध — —	ध — ध —	ध न —	सां — सां रें
जँ ऽ ऽ	से ऽ ब ऽ	ना ऽ ऽ	की ऽ को ऽ
×	२	०	३
ध सां —	नी — ध —	प — —	ध — नी —
य ली ऽ	या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	उ ऽ ड़ ऽ
×	२	०	३
धप ध —	ग — म —	प — —	म — ग
वाऽ ध —	गौ ऽ ग ऽ	यी ऽ ऽ	फु ऽ ल ऽ
×	२	०	३
रे ग —	म — प —	प — —	— — — —
व गि ऽ	यां ऽ ग ऽ	यी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

टीप : अंतरे की दूसरी कड़ी स्थाई की तरह गायी जायेगी। शेष गीत उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गाया जायेगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदागीत

खाय लेहु खाय लेहु दहिया सेरे भात,
तोहरी बिदा हो बेटी बड़ी भिनसार ॥

बिरना कलेउआ अम्मा हँसी खुसी देउ,
हमरा कलेउआ अम्मा दीन्हेउ रिसियाय ॥

हम और बिरना अम्मा जन्मैं एक सँग,
खेलऊ एक सँग अम्मा खायेऊ एक साथ,

बिरना के दीन्हेउ अम्मा बाबा केरे राज,
हमका बिहायेऊ अम्मा अति बड़ी दूर ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विदा गीत (चांचर—१४ मात्रा)

स्थाई

ध़ नी —	ध़ — प —	ध़ सा —	सा — सा रे
ख य ऽ	ले ऽ हु ऽ	खा य ऽ	ले ऽ हु ऽ
×	२	०	३
गग म ग	रे गा रे सा	सा — —	सा — सा रे
दहि या ऽ	से ऽ रे ऽ	भा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ त
×	२	०	३
म म —	म — म प	म ग —	सा — सा रे
तो ऽ ऽ	री ऽ बी ऽ	दा हो ऽ	बे ऽ टी ऽ
×	२	०	३
ग म ग	रे ग सा —	सा — —	— — — सा
ब ड़े ऽ	भि ऽ न ऽ	सा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	—		प	—	प	ध	मम	म	—		म	—	म	प
वि	र	ऽ		ना	ऽ	क	ऽ	ले	आ	ऽ		अ॒	ऽ	मा	ऽ
×				२				०				३			
ग	म	ग		सा	—	सा	रे	ग	—	—		—	—	—	रे
हं	सी	ऽ		खु	ऽ	सी	ऽ	दे	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	उ
×				२				०				३			
म	म	—		म	—	म	प	मम	ग	—		सा	—	सा	रे
ह	म	ऽ		रा	ऽ	का	ऽ	लेउ	आ	ऽ		अ॒	ऽ	मा	ऽ
×				२				०				३			
ग	म	ग		रे	ग	सा	—	सा	—	—		—	—	सा	—
दी	न्हे	उ		रि	ऽ	सि	ऽ	या	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	य
×				२				०				३			

गीत : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदागीत

निविया कै नेड़ जिन काटेउ मोरे बाबुल।
निबिया चिरैया कै बसेर॥

बिटियउ केउ जिन दुख देउ बाबुल।
बिटिया चिरैया की नाई।

जैसे जंगल की चिड़या हो बाबुल,
राति बसै दिन उड़ि चलै,

बाबुल घर हम धियर बिहानी
रात बसै दिन उड़ि चलैं॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत (चांचर)

सा	सा	—	सा	—	प	—	प	प	—	सा	—	प	—
नि	बि	ऽ	या	ऽ	के	ऽ	पे	ड़	ऽ	जि	ऽ	न	ऽ
×							०			३			
प	प(ध)	—	म	—	ग	—	रे	सा	—	सा	—	म	—
का	टो	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ	वा	ऽ	ऽ	बु	ऽ	ल	ऽ
×			२				०			३			
म	म	—	म	—	म	प	म	ग	—	रे	—	ग	—
नि	बि	ऽ	या	ऽ	चि	ऽ	रै	या	ऽ	कैं	ऽ	ब	ऽ
×			२				०			३			
ग	रे	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	रे
से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा सा —	ध़ — सा —	सा सा —	म — म —
वि टि ऽ	य ऽ उ ऽ	के उ ऽ	जि ऽ न ऽ
×	२	०	३
म म —	म — ग —	रे — —	स — — —
दु ख ऽ	दे ऽ उ ऽ	वा ऽ ऽ	वु ऽ ल ऽ
×	२	०	३
म म —	म — म —	म ग —	रे — ग —
वि टि ऽ	या ऽ चि ऽ	रै ऽ ऽ	या ऽ कै ऽ
×	२	०	३
रे — —	— — — —	— — —	— — —
ना ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ई
×	२	०	३

टीप : गीत का शेष अंश उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदागीत (बिहार राज्य का)

हमरी दुलारी हो बेटी आँखी केरी पुतरिया।
आज छोड़िहौ हो बेटी अपनी नगरिया॥

रोवत माई हो बाबा अपना रे दुअरवा।
आज सपन भैले बेटी तोहरी रे सुरतिया॥

रोवत लहुरे हो भैया आँखी धर बहियाँ।
कैसे देख बहिनी तोहरी सुरतिया॥

रोवत सखिया सहेलिया ओही पनघटवा।
कैसे भरबा सखी तोहरे बिन गगरिया॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत (रूपक)

स्थाई

म	म	—	म	—	म	ग
ह	म	ऽ	र	ऽ	दु	ऽ
×					३	
म	प	धप	म	—	म	ग
ला	री	होऽ	वे	ऽऽ	टी	ऽ
×			२		३	
ध	प	—	गप	मग	रे	सा
आँ	खी	ऽ	केऽ	रीऽ	पु	ऽ
×			२		३	
रेप	म॒	ग	रे	—	—	—
तऽ	री	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३	

⊙ गीत की दूसरी पंक्ति भी उपरोक्त स्वरों में गायी जायेगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	—	—	ध	—	ध	—
रो	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
×			२		३	
(म) प	(म) प	धनी	म	—	म	ग
मा	ई	होऽ	बा	ऽ	बा	ऽ
×			२		३	
म	प	—	गप	मग	रे	सा
अ	प	ऽ	नाऽ	रेऽ	दु	ऽ
×			२		३	
रेप	म	ग	रे	—	—	—
अऽ	र	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३	

टीप : अंतरे की दूसरीं पंक्ति स्थाई की तरह ही गायी जायेगी। शेष पंक्तियाँ अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहाग गीत

इन गीतों का मुख्य भाव वधू के ससुराल पहुँचने पर प्रिय से प्रथम मिलन का औत्सुक्य, सुखानुभूति की कल्पना, आकाँक्षा-पूर्ण उछाह, आशंकाजनित भाव भी है। प्रेम, रोमांच, आकांक्षा, आशंका और अधीरता आदि भावों की इन्द्रधनुषी छवियों का बड़ा ही मोहक वर्णन इस तरह के गीतों में मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहाग-गीत

आजँ सुहागं की रात चन्दा तुम उइहौ ॥
चंदा तुम उइहौ सरूज निजँ उइहौ ॥
आज करहू बँड़ी रात ॥

मेरे हिरदै विरंस जिन किहौ, मुरंग जिन बोलेऊ ॥
मोरी छतियां बिरहजिन जायेऊ, तू पाँनहि फाटेऊ ॥
आंज करहू बड़ी रात ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहाग गीत (कहरवा)

स्थाई

— (नी नी नी	नी — सं रें	संनी (सां) — नी	ध प म ग
ऽ आ ज सु	हा ऽ ग की	राऽ ऽ ऽत चं	दा ऽ तु म
×	×	×	×
म प प नी	ध प म ग	म प प —	धनी धप धनी सां
उई हो ऽ चं	दा ऽ तु म	उ इ हो ऽ	होऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
×	×	×	×
— — — नी	नी — नी नी	नी सां — सां	प नी सां रें
ऽ ऽ ऽ चं	दा ऽ तु म	उई हो ऽ सा	स ज जि न
×	×	×	×
नी ध प —	धनी धप धनी सां	— नी नी नी	नी नी सां र
उ ई हो ऽ	होऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	ऽ आ ज क	र हू बा
×	×	×	×
सांनी (सां) — नी	ध प म ग	म प प —	धनी धप धनी सां
राऽ ऽ ऽत चं	दा ऽ तु	उई ऽ हो ऽ	होऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

— — नी नी	नी- नी — नी	ध सां नी ध	प प — नी
ऽ ऽ मो रे	हिर दै ऽ बि	. जि न	कि हो ऽ मु
×	×	×	×
ध प म ग	म प — नी	ध प म ग	म प प —
रु ग जिं न	बो ले ऊ मु	रु ग जि न	बो ऽ ले ऊ
×	×	×	×

गीत की दूसरी पंक्ति भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेगी।

धनी धप धनी सां	— नी नी नी	नी नी सां रें	सांनी (सां) — नी
हांऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	ऽ आ क	र हू ब ड़ी	राऽ ऽ ऽत च
×	×	×	×
ध प म ग	म प प —		
दा ऽ तु ग	उ इ हो ऽ		
×	×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेत रखवाली-गीत

यह गाना खेत में खड़े अनाज की रखवाली करते समय गाया जाता है। पक्षियों के झुंड के झुंड खेत में जब दाना चुगने के लिए आते हैं, तब खाली टीन जोर से बजा कर उन्हें भगाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेत रखवाली गीत

अपनें सिवनम में रचल्यू मचनवाँ,
नित उठ पैहरा देऊँ रे ॥

जो कोई होतै हमरा संघाती,
बारी-बारी पैहरा देतिउ रे ॥

लैंहरा पै लैहरा आवै गिलैंरा,
चिड़िया चुन-चुन जाती रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेत रखाने का गीत (कहरवा)

स्थाई

सां सां सां सां	सां — सां सां	नी सांनी ध प	ध नी ध —
अ प नै सि	व न वां में	र चऽ ल्यू म	च न वां ऽ
×	×	×	×
ध नी ध प	म ग रे सा	रे सा सा —	— — — —
नि त उ ठ	पैं ह रा ऽ	दे ऊँ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×
ध — — नी	प नी ध प	ध नी ध प	म ग रे सा
हो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	नि त उ ठ	पैं ह रा ऽ
×	×	×	×
रे रे सा —	— — — —		
दे उ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सां — — —	रें गं — —	रे स नी प	ध प — —
हो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×
ध — ध ध	ध नी प —	ध नी सां रे	सां नी सां —
जो ऽ को ई	हो ऽ तं ऽ	ह म रा सं	घा ऽ ती ऽ
×	×	×	×
नी सां नी सां	ध नी ध प	प नी ध —	— — — —
बा री बा री	पै ह रा ऽ	दे तिउ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×
सां — — —	रें गं — —	रें सां नी प	ध प — —
हो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पक्तियाँ भी इन्ही स्वरो में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चकिया गीत

यह गीत, गाँवों की स्त्रियाँ अपने घर में या किसी के यहाँ मजदूरी पर चक्की पीसते समय गाती हैं। गीत के शब्दों, भावों एवं स्वरों में इतना तन्मय हो जाती हैं कि एक ही बैठक में ढेरों अनाज पीस डालती हैं। गीत के भाव एवं स्वर पिसाई के समय के कठिन श्रम को भी महसूस नहीं होने देते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चकिया गीत

गैले विदेसवा कक्कस जिया बोधबि हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु॥

बहला बयार पुरवैया तो सिखचन डोलत हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु॥

अँगुरिन मंगिया नकरबू नयन बिच काजर हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु॥

अस कहि जियरा बोधँबू कि हरिघर बाटे हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु॥

होतिऊ मैं जल की मछरिया जलहि बीच रहती हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु॥

हरि अउते असननवा चरन छुई लेतिउ हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चकिया गीत (चांचर)

स्थाई

ध — —	ध — सां रें	नी नी —	ध — प —
गैं ऽ ऽ	लैं ऽ त्रि ऽ	दे स ऽ	दा ऽ क ऽ
×	२	०	३
प ध —	म — म —	म प —	ध सां नी ध
क स ऽ	जि ऽ या ऽ	बो ऽ ऽ	ध ऽ बि ऽ
×	२	०	३
प — —	— — — —	म म ग	रे गा सा —
हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	अ रे ऽ	रा ऽ मा ऽ
×	२	०	३
सा रे —	रे — रे —		
मो रा ऽ	प्र ऽ भू ऽ		
×	२		

⊙ गीत की दूसरी पंक्ति भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

रे ग —	सा — सा —	रे म —	प — प ध
अं गु ऽ	रि ऽ न ऽ	में गि ऽ	या ऽ नि ऽ
×	२	०	३
म प —	प — नी —	नी नी ध	प ध म —
क र ऽ	बू ऽ न ऽ	य न ऽ	बि ऽ च
×	२	०	३
म प ऽ	ध सां नी ध	प — —	नी — नी —
का ऽ ऽ	ज ऽ र ऽ	हो ऽ ऽ	हो ऽ न ऽ
×	२	०	३
नी नी ध	प ध म —	म प ऽ	ध सां नी ध
य न ऽ	बि ऽ च ऽ	का ऽ ऽ	ज ऽ र ऽ
×	२	०	३
प — —	प — — —	म म ग	रे ग स —
हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	अ रे ऽ	स ऽ मा ऽ
×	२	०	३
सा रे —	रे — रे —		
मो रा ऽ	प्र ऽ भू ऽ		
×	२	०	३

टीप : गीत की अगली पंक्ति स्थाई के स्वरों में गायी जायेगी । और शेष अंतरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पनघट गीत

यह एक प्रसिद्ध बुन्देलखंडी लोकगीत है। पानी भरने के लिए पनघट को जाती और पनघट पर पानी भरते समय स्त्रियाँ इसे सामूहिक रूप से गाती हैं। गीत के शब्द एवं स्वरों में तन्मय स्त्रियाँ पानी भरने के समस्त श्रम को भुलाये रहती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुन्देलखण्डी पनघट गीत

नदिया लौं हमारे सँग चलौ ।।

जा नदिया चोरवा लगत है,
ढ़ार तरवरिया बाँधें चलौ ।। नदिया ··

कंचन थार में जिउना परौसौ,
एजी तुम जैओ, हम ठाड़े रहैं ।। नदिया····

झंझन गड़आ गंगाजल पानी,
एजी तुम पीवौ, हम ठाड़े रहैं ।। नदिया·····

फुलन की सेज, मौंती झल्लर को तकिया,
एजी तुम सोवौ, हम विजुना डोलैं ।। नदिया · ·

भोर भई परदेसिया भागौ,
एजी परदेसिया नहयां काहू को मीत ।। नदिया····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुन्देलखण्डी पनघट गीत (कहरवा)

स्थाई

सा रे
न दि

रे रे — रे	रे — रे ग	सा रे — रे	सा — सा रे
या लौं ऽ ह	मा ऽ रे ऽ	सं ग ऽ च	लौ ऽ न दि
×	×	×	×

ऩी ऩी ऩी ऩी	सा रे ग स
या लौ ह मा	रे ऽ सं ग
×	×

अन्तरा

ऩी ऩी ऩी ऩी	स — ऩी स	गम रे — सा	रे रे सा —
जा ऽ न दि	या ऽ मैं ऽ	चोर व ऽ ल	ग त है
×	×	×	×
म म म म	म म म ग	रे ग — रे	सा सा सा रे
ढा र त र	व रि या ऽ	बा धे ऽ ऽ	च लौ न दि
×	×	×	×
नी नी नी नी	सा — नी सा	ग रे सा सा	
या लौं ऽ ह	मा ऽ रे ऽ	सं ग च लौ	
×	×	×	

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पनघट गीत (बुन्देलखण्डी)

ननद भौजइया दोऊ पनियाँ को निकरी,
सिर गगरी हाथ लेज ।। मोरी गुइयाँ ।
सासू ने भर लई, ननदिया ने भर लई,
सो हमरी रही उतराय ।। मोरी गुइयाँ ।
सासू ने मारी ननदिया ने कूटी,
तो देवरा ने दई निकार ।। मोरी गुइयाँ ।
बे गयीं बे गयीं मैंके की गलियाँ,
तो बे गयीं पहड़िया की ओट । मोरी गुइयाँ ।
बारा बरस पाछे राजा पिया आये,
तो बैठें हैं पैर दुआर ।। मोरी गुइयाँ ।
पीलो हो पीलो मोरे राजा से बेटा,
सो रच देहौं दूजौ बियाहु । मोरी गुइयाँ ।
जेलो हो, जेलो मोरे राजा के भैया,
सो दूजी भौजइया ले आऊँ ।। मोरी गुइयाँ ।
माँय जो फेंकी जो झन-झन झारी,
समुन्दर बहौ दूधौ भात ।। मोरी गुइयाँ ।
लैहों लैहों री मोरी नवल दोलइया,
सो लैहौं कमल जैसो फूल ।। मोरी गुइयाँ ।
कौन बस तोरी नवल दुलैया,
सो कैसी परै पोसाक ।। मोरी गुइयाँ ।
सासू ने डाली है चनन पलुकिया,
सो ससुरा पलट दोऊ पाँव ।। मोरी गुइयाँ ।
कौना ने मारी भैना, कौना ने कूटी,
सो कौमा ने दई है निकार ।। मोरी गुइयाँ ।
माँय पठैदो मैंके की गलियाँ,
सो बहना पठैओ ससुराल ।। मोरी गुइयाँ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पनघट गीत (रूपक)

स्थाई

रे	ग	—	रे	—	ग	—	म	प	धप	म	—	ग	रे
न	न	ऽ	द	ऽ	भी	ऽ	जै	इया	ऽऽ	दो	ऽ	ऊ	ऽ
×			२		३		×			२		३	
रे	ग	—	म	—	ग	—	सा	—	—	स	—	ऩी	—
प	नि	ऽ	याँ	ऽ	कौं	ऽ	नि	क	ऽ	रीं	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा	रे	—	ग	—	म	—	ग	—	मा	रे	—	ऩी	—
सि	र	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	री	ऽ	ऽ	हा	ऽ	थ	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा	—	—	—	—	—	—	—	सा	सा	रे	—	ऩी	सा
ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	मो	री	—	गुंइ	या
×			२		३		×			२		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

				सा	ग	—	रे	—	ग	—	म	प	—
				सा	ऽ	ऽ	सू	ऽ	ने	ऽ	भ	र	ऽ
				×			२		३		×		
य	—	ग	रे	रे	ग	—	म	—	ग	—	सा	—	—
ल	ऽ	ई	न	न	दि	ऽ	या	ऽ	ने	ऽ	भ	र	ऽ
२		३		×			२		३		×		
ऩी	—	—	—	मा	रे	—	ग	—	म	—	ग	रे	रे
ल	ऽ	ई	ऽ	हृ	म	ऽ	री	ऽ	र	ऽ	ही	ऽ	उ
१		३		×			२		३		×		
नी	स	—	—	स	—	—	—	सा	रे	—	नी—	—	सा
त	रा	ऽ	ऽ	य	ऽ	ऽ	ऽ	मो	री	ऽ	गुँइ	ऽ	यां
२		३		×			२		३		×		

गीत : गीत की शेष पंक्तियाँ अंतरे के उपरोक्त स्वरों में इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीला बीनना

खेत काटते समय अनाज की बाली एवं उसके दाने खेतों मे गिर जाते है। अतः खेत कटने के बाद, गिरे हुए अनाज को महिलायें बीनने जाती हैं। इस अनाज बीनने को सीला बीनना कहते हैं। सीला बीनते समय उनका मन न ऊबे इसलिए सीला बीनने के साथ-साथगाती भी जाती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीला बीनने का गीत

सासू की बीनी डलरिया रे,
सीला बीनैं जाऊँ ।।

अंगना मा बोलैं सौना चिरैया,
बन मा कुहुक रहे मोरवा रैं ।।
सीला बीनै जाऊँ ।।

अबकी सावन मा सतरंग चुनरी,
मैंका रँगा दे सँवरिया रे ।।
सीला बीनै जाऊँ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीला बीनने का गीत (कहरवा)

स्थाई

ध़ सा — सा	सा सा सा सा	रे प म —	ग — सा सा
सा सू ऽ की	बी नी ऽ ड	ल रि या ऽ	रे ऽ सी ऽ
×	×	×	×
रे ग — रे	सा — सा —		
ला बी ऽ नै	जा ऽ ऊँ ऽ		
×	×	×	

अन्तरा

म म — गरे	रे ग ग स	सा रे — नी	सा — सा —
अंग ना ऽ माऽ	बो ऽ ले ऽ	सौ ना चि ऽ	रै ऽ या ऽ
×	×	×	×
ध़ सा — सा	सा सा सा सा	रे प म —	ग — सा सा
बन मा ऽ कु	हु क र हे	मो र वा ऽ	रे ऽ सी ऽ
×	×	×	×
रे ग — रे	सा — सा —		
ला बी ऽ नै	जा ऽ ऊँ ऽ		
×	×		

टीप : गीत की अन्य पंक्तियाँ अन्तरे के ही स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी

'कजरी' ऋतु गीत है। कजरी, मुख्यतया सावन मास का गीत है, यूँ यह वर्षा ऋतु में कभी भी गाया जा सकता है और गाया भी जाता है। सावन के महीने में अधिकांश स्त्रियाँ अपने मैके में होती हैं। अपने मैके में होने के कारण वह पूर्ण स्वाधीनता का अनुभव करती हुई, सरस गीत गाती हैं।

कजरी गायन की अनेक शैलियाँ प्रचलित हैं, कुछ में ठुमरी अंग विशेष रूप से परिलक्षित होता है। शैली के साथ-साथ इसको गाये जाने के अवसरों में भी वैविध्य है। कजरी कभी झूले पर बैठकर गायी जाती हैं और कभी स्त्रियां मेले के लिए गोल बना कर चलते हुए गाती हैं। इस प्रकार की प्रथा मिर्जापुर और बनारस के गाँवों में अधिक है।

कजरियों में अधिकतर वर्षा ऋतु का ही वर्णन होता है। शृंगार इन गीतों का प्रधान रस है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (अवध की धुन पर)

अरे रामा सांवन मास सुहावन,
सब सखी गावैं काजरी ।।

झूला पड़ा कदम की डारी,
झूलैं सब बृज की नारी, रामा।
अरे रामा गावै राग मल्हार,
सो दै तारी रे हारी ।। सब सखी ... ...

घन उमड़ घुमड़ कर बरसै,
छबि देख देख जिया तरसै, रामा।
अरे रामा अजहुं न आये श्याम,
हिये दुख भारी रे हारी ।। सब सखी ... ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (कहरवा)

स्थाई

रे	नी	सा	रे	ग	—	म	म	म	प	म	ग	रे	—	ग	ग
ब	रे	रा	मा	सा	ऽ	व	न	मा	ऽ	स	सु	हा	ऽ	व	न
×				×				×				×			
रे	रे	सा	सा	सा	रे	सारे	ग	रे	ध	—	नी	सा	—	—	—
स	ब	स	खी	गा	ऽ	वेऽ	ऽ	ऽ	का	ऽ	ज	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

सा रे
झू ला

ग म — म	रे ग सा रे	ग — म —	— — म ग
प ड़ा ऽ क	द म की ऽ	डा ऽ ली ऽ	ऽ ऽ झू ऽ
×	×	×	×
म प प प	म प ग रे	रे ग म ग	रे —
लें ऽ स व	वृ ज की ऽ	ना ऽ री ऽ	रा ऽ मा ऽ
×	×	×	×
रे नी सा रे	ग — म म	म प म ग	रे — ग ग
अ रे रा मा	गा ऽ यें ऽ	रा ऽ ग म	ल्हा ऽ र सो
×	×	×	×
रे — सा सा	सा रे सारे ग	रे — ध नी	सा — — —
दे ऽ दे ऽ	ता ऽ रीऽ ऽ	रे ऽ हा ऽ	री ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्जापुरी कजरी

कन्हा तोरी बाँकी चितवनियाँ,
ऐरे साँवरिया ।

मदभरे सुरंग रसीले नैयनवाँ,
भौंहैं तोरी तनल कमनियाँ,
ऐरे साँवरिया ।।

मोर मुकुट और कानन कुंडल,
सिर सोहै लटकनियाँ,
ऐरे साँवरिया ।।

अंग-अंग राजत आभूषण,
कटि सौहै करधनियाँ,
ऐरे साँवरिया ।।

संग मा सोहै नवल नारि एक,
रुकमिन नाम बखनियाँ,
ऐरे साँवरिया ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्ज़ापुरी कजरी (कहरवा)

स्थाई

रे ग म पध	ग म रे ग	नी़ सा नी़ प़	नी सा रेग म
का न्हा तो रीऽ	वाँ की चि त	व नि याँ ऽ	ऐ रे साँऽ ऽ
×	×	×	×
ग — सा —			
व रि या ऽ			
×			

अंतरा

रे रें म म	प प प प	म — प प	मध पध म गरे
म द भ रे	सु रं ग र	सी ऽ ले नैं	यऽ नऽ वा ऽऽ
×	×	×	×
रे ग ग पध	ग म रे ग	नी़ सा नी़ प़	नी़ सा रेग म
भौं हैं तो रीऽ	त न ल क	म नि याँ ऽ	ऐ रे साँऽ ऽ
×			
ग — सा —			
व रि या ऽ			
×			

टीप : गीत की पंक्तियां अन्तरे के ही स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्जापुरी कजरी

कैसे खेलै जैबू सांवन मा कजरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी ॥

तू तो जात हौ अकेली, केऊ संग ना सहेली,
कत्तौ भूलि जैहौ रहिया-डगरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी ॥

एक तो सांवन की अंधेरी, बदरा घेरि बेरी-बेरी,
दूजे चमकै लागी बैरिन बिजुरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी ॥

कयल्यू सोरहो श्रंगार बदरा दिहलिस बिगार,
भीज गैलै मोरी धानी रे चुनरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी ॥

कैसे खेलब हम कजरिया, मोरी भीजी रे चुनरिवा,
ननदी ताना मारे कहिहै फुहुरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्ज़ापुरी कजरी—कहरवा

स्थाई

सा	—	सा	—	सा	रे	रे	प	प	—	म	—	ग	—	ग	ग
कै	ऽ	से	ऽ	खे	ऽ	लै	ऽ	जै	ऽ	बू	ऽ	सां	ऽ	व	न
×				×				×				×			
रे	—	सा	—	सा	रे	रे	ग	सा	—	ऩी	प़	प़	ऩी	ऩी	—
मा	ऽ	क	ऽ	ज	ऽ	रि	ऽ	या	ऽ	ब	ऽ	द	रि	या	ऽ
×				×				×				×			
नी	स	रे	ग	सा	रे	ग	म	ग	—		—	सा	—	—	—
घे	ऽ	रि	ऽ	आ	ऽ	यी	ऽ	न	ऽ	न	ऽ	दी	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

अंतरा

सा	—	सा	—	रे	—	—	रे	म	—	म	—	प	—	प	—
तू	ऽ	तो	ऽ	जा	ऽ	ऽ	त	हो	ऽ	अ	ऽ	के	ऽ	ली	ऽ
×				×				×				×			

टीप—शेष गीत इसी प्रकार गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी

कौन रंग मुंगवा कवन रंग मोतिया,
कवन हो रंगना ननदी तोर बिरना ।।

लाल रंग मुंगवा, सबज रंग मोतिया,
सांवर हो रंगना, ननदी तोर बिरन ।।

कहाँ सोहै मुंगधा कहाँ रे सोहै मोतिया,
कहाँ रे सोहै ना ननदी तोर बिरना ।।

सीस सोहै मुंगवा, बेसर सोहै मोतिया,
सेजरिया सोहै ना ननदी तोर बिरना ।।

टूटि जैहैं मुंगवा, दरिक जैहैं मोतिया,
बिछुड़ि हो जैहै ना ननदी तोर बिरना ।।

बीन लैवै मुंगदा, बटोर लैवै मोतिया,
मनाय हो लैवै ना ननदी तोर बिरना ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (कहरवा)

सां	सां	सां	सां	सां	सां	नी	ध	प	ध	ध	प	म	ग	रे	(	मा
को	न	रं	ग	मुं	ग	वा	क	व	न	रं	ग	मो	ति	या		क
×				×				×				×				
सारे	रेग	रे	सा	सारे	गम		मग		—	रे	रेग	रे	सा	सा	)	—
वन	होऽ	रं	ग	नाऽ	ऽऽ	न	नऽ	ढी	ऽ	तो	रेऽ	ब्रि	र	ना		
×				×				×				×				

टीप—कोष्ठक के भीतर वाली कड़ी दो बार गायी जायेगी। गीत की शेष पंक्तियाँ भी उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्ज़ापुरी कजरी

घेरि घेरि आयी सावन की बदरिया ना।

पानी बरसै बड़ी जोर, सूझै नाहीं चारों ओर,
जिया कांपे मोरा, चमकैला बिजुरिया ना ॥

एक तो सांवन की अंधेरी, बदरा घेरि घेरी-घेरी,
डर लागे मोहे, सूनी बा अटरिया ना ॥

जब से गये बन माली, पतिया एकौ न डारी,
मोहे याद आवै निसदिन सांवरिया ना ॥

जब से गैलै हो बिदेस, दोन्है एकौ न संदेस,
बेगी आवो, मोरी बीतेला उमरिया ना ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्ज़ापुरी कजरी (दादरा)

स्थायी

ग	रे	ग	सा	—	सा	रे	ग	रे	ग	—	ग
घे	ऽ	रि	घे	ऽ	रि	आ	ऽ	यी	सा	ऽ	वन
०			×			०			×		
सा	—	सा	रेऽ	—	रे	सा	—	—	सा	—	—
की	ऽ	ब	दरि	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
०			×			०			×		
ग	—	ग	ग	ग	ग	म	ग	म	रे	ग	—
हो	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
०			×			०			×		
सा	—	रे	ग	म	ग	सा	रे	सा	सा	—	—
हो	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
०			×			०			×		
ग	—	म	प	प	—	प	—	—	प	—	—
हो	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
०			×			०			×		
ग	—	म	प	घ	—	म	प	—	म	ग	रे
हों	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
०			×			०			×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	—	ग	गग	—	ग	ग	ग	—	म	—	म
पा	ऽ	नी	बर	ऽ	से	ब	ड़ी	ऽ	जो	ऽ	र
०			×			०			×		
ग	सा	रे	ग	—	म	रे	—	ग	सा	—	स
सू	ऽ	झे	ना	ऽ	ही	चा	ऽ	रो	ओ	ऽ	र
०			×			०			×		
ग	रे	ग	सा	—	सा	रे	ग	रे	गऽ	—	ग
जि	या	ऽऽ	कां	ऽ	पै	मो	ऽ	र	चम	ऽ	के
०			×			०			×		
सा	—	सा	रे	—	—	सा	—	—	सा	—	—
ला	ऽ	बि	जु	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
०			×			०			×		

टीप : मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए। गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्ज़ापुरी कजरी

नहीं आये सजना हमार,
सांवनिवाँ आइ गइले ननदी ।

सावन बहरिया छायी चहुँ ओरिया,
सांवनवाँ आइ गइले ननदी ।।

चुये मोरी मड़ई उसार,
सांवनवाँ आई गइले ननदी ।

बोलेली कोयलिया अमवा की डरिया,
सांवनवाँ आइ गइले ननदी ।।

हुलसेला जियरा हमार,
सांवनवाँ आइ गइले ननदी ।।

बादर गरजे बिजुरी चमके,
सांवनवाँ आइ गइले ननदी ।।

डरैला मनुआ हमार,
सांवनवाँ आइ गइले ननदी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्ज़ापुरी कजरी (कहरवा)

स्थाई

प़ प़ध़ ध़सा सा	सा सा रेग सारे	ग गम गरे रेग	सा सा रेग सारे
ना हींऽ आऽ ये	स ज नाऽ हऽ	मा ऽऽ रऽ सांऽ	व न वांऽ ऽऽ
×	×	×	×

ग गम गरे रेग	सा सा सा सा
आ इऽ गेंऽ लेऽ	न न दी ऽ
×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध़ ध़ सा रे	म म म —	प ध पध म	म ग रे ग
साँ व न ब	ह रि या ऽ	छा यी चंऽ हु	ओ रि या सां
×	×	×	×
सा सा रेग सारे	ग गम गरे रेग	सा सा सा प़	
व न बांऽ ऽऽ	आ ईऽ गैंऽ लैंऽ	न न दी ऽ	
×	×	×	×
प़ प़ध़ ध़सा सा	सा सा रेग सारे	ग गम गरे रेग	सा सा रेग सारे
चु येऽ मोऽ री	म ड़ ईऽ उऽ	सा ऽऽ रऽ सांऽ	व न बांऽ ऽऽ
×	×	×	×
ग गम गरे रेग	सा सा सा प़		
आ ईऽ गैंऽ लैंऽ	न न दी ऽ		
×	×	×	

टीप : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी

बदरिया बरसै रस कै बूंद,
किवरिया खोलो री सजनी।

रिमझिम रिमझिम मेहा बरसे, पवन चले झकझोर,
थर-थर कांप रहो अंग मोर॥ किवरिया··· ··· ···

बिरहिन रहिऊ, दुसह दुख काटेउ, लिख-लिख भेज्यो संदेस,
अब तो आवा बिदेसी तोर॥ किवरिया··· ··· ···

लै आयेउँ रस बेंदुली-टिकुली, झुलनी झोंकेदार,
मगही पान, बनारसी ईंगुर, किवरिया··· ··· ···

काहे खड़ीऊ किवरिया रोपे, चितहि-चितहि मुसकाहु,
झिझरिन लखिऊ बतीसी तोर॥ किवरिया··· ··· ···

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (कहरवा)

स्थाई

				म
				व
ग रे सा नी़	सा रे रे —	रे ग रे ग	म प प ध	
द रि या ऽ	ब र से ऽ	र स कै ऽ	बूं ऽ द कि	
×	×	×	×	
म ग म ग	म रेग — पम	ग — सा नी़	सा — — —	
व रि या ऽ	ऽ खोऽ ऽ लोऽ	री ऽ स ज	नी ऽ ऽ ऽ	
×	×	×	×	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे ग सा सा	रे ग — रे	रेग म म म	ग रे ग म
रि म झि म	रि म झि म	मेऽ ऽ हा ऽ	ब र से ऽ
×	×	×	×
प प प प	प — प ध	ग प — म	ग रे सा नी़
प व न च	ले ऽ झ क	झो ऽ ऽ र	थ र थ र
×	×	×	×
सा रे रे रे	रे ग रे ग	म प प ध	म ग म ग
कॉ ऽ प र	हो ऽ अं ग	मो ऽ र कि	व रि या ऽ
×	×	×	×
म रेग — पम	ग — सा नी़	सा — — —	
ऽ खोऽ ऽ लोऽ	री ऽ स ज	नी ऽ ऽ ऽ	
×	×	×	

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त के स्वरों में ही गायी जायेंगी।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनारसी कजरी

सखियाँ झूलन चलीं फुल बगियन,
घिर आयी कारी बदरिया ना ॥

फुलवा बीनैं हरवा गूथैं,
करे सिगरियाँ ना ॥

उमड़ घटा घन चहुँदिश छाये,
परत फुहरिया ना ॥

कारी रैन भयावन लागै,
चमके बिजुरिया ना ॥

कापर करूँ शृंगार मोरी सजनी,
घर नाहीं संवरिया ना ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनारसी कजरी (कहरवा)

स्थाई

ग ग सा रे	ग ग ग म	मग रेग सा सा	सग रेग सा नी
स खि यां ऽ	फू ल न च	लीऽ ऽऽ फु ल	बऽ गिऽ य न
×	×	×	×
प़ नी़ सा रेग	सारे ग ग म	मग रेग स नी़	सा — — —
घि र आ यीऽ	ऽऽ का री ब	दऽ रिऽ या ऽ	ना ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

अन्तरा

रे ग सा —	सारे गम ग —	— म म म	मध पध़ म ग
फु ल वा ऽ	बी ऽ ऽऽ नै ऽ	ऽ ह र वा	गूंऽ ऽऽ धे ऽ
×	×	×	×
प प — म	प प प ध	ग प — म	ग ग सा रे
क रैं ऽ सि	ग रि या ऽ	ना ऽ ऽ हो	स खि या रे
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौमासा

असाढ़, सावन, भादों क्वांर—इन चार महीनों की प्राकृतिक (सुषमा) की पृष्ठभूमि में विरहणी की मनोव्यथा का वर्णन 'चौमासा' गीतों का मुख्य विषय है। हिंडोला, कजरी, मल्हार और सावन की भाँति, यह भी पावस ऋतु का बहुप्रचलित लोकगीत है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौमासा

प्रथम मास असाढ़, हे सखी,
साज चलेलीं जलधार हो ।
उमड़ घुमड़ मेहा बरसन लागे,
भींज गये लाम्बे केस हो ॥

सावन हे सखी शब्द सुहावन,
चहुदिस बरसेला मेह हो ।
दादुर की धुन चहु दिस छायी,
मोर पिया परदेस हो ॥

भादों हें सखी रैन भयावन,
दुजे अँधेरिया रात हो ।
दामिन दमक दमक डरपावै,
निदन सहू मैं कलेस हो ॥

क्वार हे सखी आस मिलन की,
नदिया निर्मल नीर हो ।
मैं बैठी नित पंथ निहारूँ,
श्याम रहे परदेस हो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौमासा (कहरवा)

स्थाई

— रे रे सा	रे — सा सा	म रे रे सा	रे — सा सा
ऽ प्र थ म	मा ऽ स अ	ऽ सा ऽ ढ़	हे ऽ स खी
×	×	×	×
— म भ ग	म प प प	— मप ध प	म ग — —
ऽ सा जि च	लें लैं ज ल	ऽ धाऽ ऽ र	हो ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×
— रे रे म	म पम म गरे	— रे रे ग	सा — नी —
ऽ उम ड़ घु	म ड़ऽ मे हाऽ	ऽ बर स न	ला ऽ गे ऽ
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ भी उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रावली

यह बुंदेलखण्ड का एक अत्यन्त प्रचलित लोकगीत है। प्रसिद्ध 'चन्द्रावली' कथानक को लक्ष्य करके ही इस गीत की रचना की गयी है।

चन्द्रावली इस 'राछरौ' की धुन पर ही गाया जाता है। इसमें झांझ, झीका, चिकारा आदि वाद्यों द्वारा संगत की जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रावली राठौर

ननंद भावज पानी कूं गयी रे।
अरे गयी सखर ताल, लाग्यौ है सावन मास हो॥

भावज उचिकै चलि दई,
रे ननदी पल्ली हो पार॥ लाग्यौ……
डेरा तो पड़े हैं पठान के,
रे दै लई तम्बुअन बीच॥ लाग्यौ……

सरग उड़ती चीलिया,
री जैयौ बाबुल के देश॥ लाग्यौ……
हमरे बाबुल तै यों कहौं,
रे बेटी तुमुआं बीचु॥ लाग्यौ……
हमरे बिरन ते यों कहौ,
रे मैना परी बंदीखान॥ लाग्यौ……

बाबुल सुनि कै रोई परे,
रे मैया खात पछार॥ लाग्यौ……
बिरन सुनि कै रोई परे,
रे भावज खात पछार॥ लाग्यौ……

सरग उड़ते कागुला,
रे जइयो ब्याहै के देस॥ लाग्यौ……
हमरे ससुर ते यों कहो,
रे बहुअल परी बंदीखान॥ लाग्यौ……
हमरे ब्याहे ते यों कहो,
रे गोरी परी बंदीखान॥ लाग्यौ……

ससुर तौ सुनि के रोई परे,
रे सासुल खात पछार॥ लाग्यौ……
ब्याहे बेदरदी हंसि रहे,
रे ऐसी लाऊँ द्वै चारि॥ लाग्यौ……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाबुल हतिया कसि दई,
रे बीरन घुड़िला पलान ।। लाग्यौ......
ब्याहे बेदरदी पालकी,
रे चावे नागर पान ।। लाग्यौ......

बाबुल उतरे खेत में,
रे बीरन वर की हो छाँह ।। लाग्यौ......
ब्याहे बेदरदी बाज़ार में,
रे चावें नागर पान ।। लग्यौ......

हतिया तो लै लै डेढ़ सौ,
रे घुड़िला ओरू न छोरू ।। लाग्यौ......
बेटी ए हमारी छोड़ि दे,
रे कुल कू लगि जाइगौ दागु ।। लाग्यौ...
मैना ए हमारी छोड़ि दे,
रे कुल कू लगि जाइगौ दागु ।। लाग्यौ...

ना लऊँ हतिया डेढ़ सौ,
रे घुड़िला ओरू न छोरू ।। लाग्यौ......
बेटी तिहारी न 'छोड़ूँ',
रे ऐसी मिलबे की नांईं ।। लाग्यौ......
मैना तिहारी न छोड़ूँ,
रे ऐसी मिलबे की नांईं ।। लाग्यौ......

रुपिया तो ले लै ले डेढ़ सौ,
रे गिन्नी ओरू न छोरू ।: लाग्यौ......
ब्याही तो ले लै डेढ़ सौ,
रे क्वांरी ओरू न छोरू ।। लाग्यौ......
बहुअ ऐ हमारी छोड़ि दे,
रे ऐसी मिलबे की नांईं ।। लग्यौ......
गोरी ए हमारी छोड़ि दे,
रे जाकी पतरी कमरि लंबे केस ।।लाग्यौ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ना लऊँ रुपया डेढ़ सौ,
रे गिन्नी ओरू न छोरू ॥ .लाग्यौ......
ना लऊँ ब्याही डेढ़ सौ,
रे क्वांरी ओरू न छोरू ॥ लाग्यौ......
बहू तिहरी नांई दऊँ,
रे ऐसी मिलवे की नांई ॥ लाग्यौ......
गोरी ऐ तिहारी नांई छोड़ूँ,
रे जाकी पतरी कमरि, लंबे केस ॥लाग्यौ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रावली (रूपक)

प	प	—	नी	—	नी	—	सा	सा	—	सा	—	सा	—
न	नं	ऽ	द	ऽ	भ	ऽ	उ	ज	—	पा	ऽ	नो	ऽ
×			२		३		×			२		३	
नीस	रेग	—	ग	—	ग	—	ग	ग	—	ग	—	ग	—
कूंऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ई	ऽ	ऽ	रे	ऽ	भ	रे
×			२		३		×			२		३	
ग	ग	—	ग	—	ग	—	सा	सा	—	ग	रे	सा	—
ग	ऽ	ऽ	ई	ऽ	रे	ऽ	स	र	ऽ	व	ऽ	र	ऽ
×			२		३		×			२		३	
नी़	—	—	—	—	नी़	—	प़	—	—	नी़	—	नी़	—
ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ग्यी	ऽ	है	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा	—	—	रे	—	प	—	ग	—	—	रे	ग	सा	—
सां	ऽ	ऽ	द	ऽ	न	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	स	हो	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा	—	—	सा	—	—	—							
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
×			२		३								

टीप : सम्पूर्ण गीत उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चैती

यह गीत विशेषतया चैत्र मास में ही गाया जाता है। चैती को स्त्री-पुरुष सामूहिक रूप से या अकेले भी गाते हैं।

'चैती' कुछ-कुछ ठुमरी की तरह ही गायी जाती है। इसे चांचर ताल में गाते हैं और बाद में कहरवा ताल में दौड़ होती है, फिर चांचर में आ जाते हैं। यही क्रम चलता रहता है।

ढोलक, सारंगी, मंजीरे आदि वाद्यों के साथ चैती गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चैती

हथवा लगत कुम्हलाय गैलो रामा,
जूही कै फुलवा ।।

बेला मैं तोड़ल्यूं, चमेली मैं तोड़ल्यूं,
तोड़त तोड़त कुम्हलाय गैलो रामा,
जूही कै फुलवा ।।

बेला मैं गूंधल्यूं, चमेलौं मैं गूधल्यूं,
गूंधत गूंधत कुम्हलाय गैलो रामा,
जूही कै फुलवा ।।

हरवा पैहर कै गैल्यूं बजरिया,
सैयां का देखि सरमाय गैलो रामा,
जूही कै फुलवा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चैती (चांचर)

स्थाई

ग ग —	ग — ग म	ग रे —	ग — म —
ह थ ऽ	व ऽ ला ऽ	ग त ऽ	कु ऽ म्ह ऽ
×	२	०	३
ग — ग	सा — ऩी सा	ध़ नी —	रे — — —
ला ऽ य	गैं ऽ लो ऽ	रा ऽ ऽ	मा ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
ऩी सा —	ग — प (प)	म ग —	सा — नी —
जू ऽ ऽ	ही ऽ के ऽ	फु ल ऽ	वा ऽ ऽ
×	२	०	३
प़ ध़ —	सा — सा —	रेग सारे —	ग — म —
ह थ —	वा ऽ ल ऽ	गऽ तऽ ऽ	कु ऽ म्ह ऽ
×	२	०	३
ग — ग	सा सा — —	— — —	— — — —
ल ऽ य	गैं लो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा (बिना ताल वाद्य के)

रे — म — म	प प प — —	— म म — प	— प —
बे ऽ ला ऽ में	तु ड़ ल्यू ऽ ऽ	ऽ च मे ऽ ली	ऽ मैं ऽ
मध पध	(मं) रे		
तुऽ ड़ऽ	ल्यू ऽ		

कहरवा

ग ग ग म	ग रे ग म	ग — सा नीसा	ध़ नी़ रे —
तो ड़ न तो	ड़ त कु म्हं	ला य गं लोऽ	रा ऽ मा ऽ
×	×	×	×
नी़ सा ग प	म ग सा नी	प़ ध़ सा सा	ग रे ग म
जू ऽ ही के	फु ल वा ऽ	ह थ वा ल	ग त कु म्हं
×	×	×	×

चांचर

ग — —	सा — नीं सा	ध़ नी —	रे — — —
ला ऽ य	गं ऽ लों ऽ	रा ऽ ऽ	मा ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त के स्वरों और प्रकार से गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मल्हार

'हिंडोला' और 'कजरी' की भांति 'मल्हार' भी वर्षा काल का प्रमुख लोकगीत है। इस लोकगीत में शृंगार के साथ ही प्रकृति के विभिन्न अंगों का भी बड़ा ही रोचक-काव्यात्मक वर्णन होता है। जिस समय वर्षा की फुहार पड़ रही होती है, उस समय मल्हार की धुन विशेष रूप से गायी जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मल्हार

अरी मैना उठी है घटा घनघोर,
बिजुरी तो चमके जोर से ॥

अम्बर लरजे, बादल गरजे री,
अरी मैना मोर मचावे शोर ॥
बिजुरी तो चमके……

कौन की भीजै चूनरी अरी मैना,
कौन की भीजै सुई पाग ॥
बिजुरी तो चमके……

चम्पाकली की भीजै चूनरी अरी मैना,
नन्हे बीरन की सुई पाग ॥
बिजुरी तो चमके……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मल्हार (कहरवा)

स्थाई

— मम म म	— गग ग रेसा	सा रे सारे ग	— रेग सा सासा
ऽ अरी मैं ना	ऽ उठी है घऽ	टा ऽ घऽ न	ऽ घोऽ र बिजु
×	×	×	×
सा रे सारे ग	— रेसा रे सा	सा मम म म	— गग ग रेसा
री तो चम के	ऽ घोऽ ऽ र	से अरी मैं ना	ऽ उठी है घऽ
×	×	×	×
सा रे सारे ग	— रेग सा सासा	सा रे सारे ग	— रेसा रे सा
टा ऽ घऽ न	ऽ घोऽ र बिजु	री तो चम के	ऽ घोऽ ऽ र
×	×	×	×
सा — — —	— — — —		
से ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		
×	×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

— धा सा सा	सासा रे- सारे ग--	— रेसा रे सा	सा मम म म
ऽ अम् ब र	लर जं बाऽ दल	ऽ गर ऽ जे	री अरी भै ना
×	×	×	×
— ग ग रेसा	सा रे सारे ग	— रेग सा सासा	सा रे सारे ग
ऽ मो र मऽ	चा ऽ वैऽ ऽ	ऽ शोऽ र बिजु	री तो चम के
×	×	×	×
— रेसा रे सा	सा		
ऽ जोऽ ऽ र	से		
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी ।
यह गीत मध्यम को स्वर मानकर गाना चाहिए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राछौर

यह बुंदेलखण्ड का बहुत ही लोकप्रिय गीत है। अवकाश के क्षणों में, विशेषकर पावस की सावनी फुहारों में मस्ती से भरे हुए लोग, इसे सामूहिक रूप से गाते हैं। इसमें भी झांझ, झीका, चिकारा आदि वाद्यों द्वारा संगत की जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राछौर

कहाँ से उमही रे कारी बदरिया,
अरे कहाँ बरस गये मेंह,
बरसौ बीरन के देस में ॥

ससुरे से उमही है कारी बदरिया,
अरे मायकै बरस रहे मेह ॥ बरस गये मेंह

कौना से भरि गये हैं नदिया और नारे,
कौना से भरे बेला ताल ॥ बरस गये मेंह

ससुरे के भरि गये हैं नदिया और नारे,
बाबुल के भरे बेला ताल ॥ बरस गये मेंह

कौना ने छोड़ी है मैली रे कांचरी,
अरे कौना ने छोड़ी है कगार ॥ बरस गये मेंह

सांपन छोड़ी है मैली रे कांचरी,
अरे नदियन छोड़े हैं कगार ॥ बरस गये मेंह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राठौर (रूपक)

प़	प़	—	नी़	—	नी़	—	सां	सां	—	सां	—	सां	—
क	ऽ	ऽ	हाँ	ऽ	सँ	ऽ	ग	म	ऽ	ही	ऽ	है	ऽ
×			२		३		×			२		३	
नी़स	रेग॒	—	ग॒	—	ग॒	—	ग॒	ग	—	ग॒	—	ग॒	ग॒
काऽ	ऽऽ	ऽ	री	ऽ	ब	ऽ	द	रि	ऽ	या	ऽ	अ	रे
×			२		३		×			२		३	
ग॒	—	—	ग॒	—	ग॒	—	सा	सा	—	ग	रे	सा	—
क	ऽ	ऽ	हाँ	ऽ	ब	ऽ	र	स	ऽ	ग	ऽ	ये	ऽ
×			२		३		×			२		३	
नी़	—	—	—	—	नी़	—	प़	प़	—	नी़	-	नी़	—
मे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ह	ऽ	अ	र	ऽ	सो	ऽ	बी	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा़	सा	—	रे	—	प	—	ग	—	—	रे	ग॒	सा	—
र	न	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	सं	मैं	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा	—	—	—	—	—	—							
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
×			२		३								

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। यह गीत मध्यम को स्वर मानकर गाना चाहिए।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सावन

'सावन' एक ऋतु गीत है। वर्षा काल में इसे कभी भी गा सकते हैं। शास्त्रीय संगीत में 'पीलू सावन' एक राग भी है जो इससे बहुत कुछ मिलता-जुलता है। यह दो तरह से गाया जाता है। कुछ लोग पूरे गीत को चांचर ताल में गाते हैं, और कुछ लोग अंतरे के दूसरे भाग को कहरवें में गाकर, फिर चांचर में आ जाते हैं। इसकी धुन चांचर और कहरवा, दोनों तालों में एक सी रहती है, केवल लय का अंतर होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सावन

अबकी सावन सैंया घर से न निकसो,
ना जाओ मोरे महराज रे ॥

घन की चोट अस बदरा जै लागै,
बिजुरी लगै जैसे गाज रे ॥ न जाओ

नागिन फूल सेजरिया जें लागै,
तुम बिन मोरे महराज रे ॥ न जाओ

नैना झुरहै झुन्हौं सावन भावों,
घन सम बिन गुहे केस रे ॥ न जाओ

देखबै न बोलबै बिरह जल डूबी,
घर ही मा होयी बरसात रे ॥ न जाओ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांवन (चांचर)

ग	ग	—	म	—	प	—	ग	म	—	ग॒	रे	ग॒	सा
अ	ब	ऽ	की	ऽ	सां	ऽ	व	न	ऽ	सैं	ऽ	या	ऽ
×			२				०			३			
सा	रे	—	सारे	गम	म	—	मग	रेग	—	सा	—	—	—
ध	र	ऽ	सेऽ	ऽऽ	न	ऽ	निऽ	कऽ	ऽ	सो	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ऩीसा	ग॒	—	सा	—	ऩी	—	सा	सा	—	रे	ग॒	सा	रे
नाऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	वो	ऽ	मो	रे	ऽ	म	ऽ	ह	ऽ
×			२				०			३			
प	—	—	रेम	पध	नी	धप	(म)	—	—	ग	—	—	सा
रा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रें रें —	म — म —	प प —	प — प —
घ न ऽ	की ऽ चो ऽ	ऽ ट ऽ	अ ऽ सं ऽ
×	२	०	३
प ध —	ध — म —	प ध —	पध नीसां — —
ब द ऽ	रा ऽ जें ऽ	ला ऽ ऽ	गंऽ ऽऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
नी नी —	नी — नी —	ध — —	म — म —
बि जु ऽ	रो ऽ ल ऽ	गे ऽ ऽ	जै ऽ से ऽ
×	२	०	३
प — —	रेंम पध नी धप	(म) — —	ग — — सा
गा ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽ जऽ	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
ग — —	म — प —	ग म —	ग रे ग सा
ना ऽ ऽ	बि ऽ न ऽ	फू ऽ ऽ	ल ऽ ऽ से
×	२	०	३
सा रे —	सारे गम म —	मग रेंग —	सा — — —
ज रि ऽ	याऽ ऽऽ जे ऽ	लाऽ ऽऽ ऽ	गे ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नीस ग —	सा — नी सा	सा सा —	रे ग सा रे
तुऽ म ऽ	वि ऽ न ऽ	मो रे ऽ	म ऽ ह ऽ
×	२	०	३
प — —	रेम पध नी धर	(म) — —	ग — — सा
रा ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽ जऽ	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

टीप : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वर में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहनी

यह प्रमुखतः एक विरह गीत है। यह वर्षा काल में, विशेषकर सावन के महीने में गाया जाता है जब ग्राम बालायें सज-धज कर बागों में झूला झूलने को एकत्र होती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहनी

एक सुधि आइ गैलै नैहर की रे,
मोरा बिरना गैहल परदेस हो ॥

सुधि आइ गलं सांवरे सिपैहरा की रे,
एक सुधि आइ गैलै फुलवा की रे ॥

सुधि आइ गैलै बाबा के बगैचा की रे,
एक सुधि आइ गैलै पनघट की रे ॥

सुधि आइ गैलै सखियाँ सहिलियाँ की रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहनी (कहरवा)

स्थाई

म —	प़ ऩी — ऩी	सा — — —	रे ग सा रे
ए ऽ	क सु ऽ धि	आ ऽ ऽ ऽ	गै ऽ लै ऽ
	×	×	×
— ग म ग	रे — सा सा	— — — ध़	ऩी प — —
ऽ नै ऽ ऽ	यर ऽ की रे	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×
— — म —	प़ ऩी — ऩी	सा — — —	रे ग सा रे
ऽ ऽ ए ऽ	क सु ऽ धि	आ ऽ इ ऽ	गै ऽ लै ऽ
×	×	×	×
— ग म ग	रे — सा सा	— — — —	प — प —
ऽ नै ऽ ऽ	यर ऽ की रे	ऽ ऽ ऽ ऽ	मो ऽ रा ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

— — प ध	— प — म	ग — सा रे	— ग — ग
ऽ ऽ त्रि र	ऽ ना ऽ ग	इ ऽ ल ऽ	ऽ प ऽ र
×	×	×	×
म — ग —	— सा — नी़	सा — — —	ध़ नी प़ —
दे ऽ ऽ ऽ	ऽ स ऽ हौ	रे — — —	सु ऽ धि ऽ
×	×	×	×
— — म़ —	प़ नी़ — नी़	सा — सा —	रे ग सा रे
ऽ ऽ आ ऽ	इ गै ऽ लै	सां ऽ व ऽ	रे ऽ सि ऽ
×	×	×	×
— — ग म	ग रे — सा	सा — — —	
ऽ ऽ पै ऽ	ऽ या ऽ की	रे ऽ ऽ ऽ	
×	×	×	

टीप : इस गीत में अंतरा नहीं होता है, इसलिए अन्य कड़ियां भी उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (झूला)

'हिंडोला' पछांह (मेरठ और बुलंदशहर की ओर) के ज़िलों में गाया जाता है। कहीं-कहीं इसे मल्हार भी कहते हैं। इसको अधिकतर औरतें झूला झूलते समय गाती हैं और किसी वाद्य-यंत्र से इसकी संगत नहीं होती है। इसमें 'ऐजी कोई' या 'अम्बे कोई' टेक का प्रयोग होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (झूला)

झूला धीरे से झुलावो, सुकुमारी सिया हैं ॥

झूला कंचन संजोय,
लागी रेशम की डोर,
झोका धीरे से लगावो,
सुकुमारी सिया हैं ॥

छायी घटा घनघोर,
बोले पपीहा औ' मोर,
झूलें अवध किशोर,
सुकुमारी सिया हैं ॥

झूलें सरयू के तीर,
पहिरें रेशम के चीर,
छबि हियरे बसावो,
सुकुमारी सिया हैं ॥

झूलें अवध बिहारी,
और संग पिया प्यारी,
तन-मन बलिहारी,
सुकुमारी सिया हैं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला [झूला] (कहरवा)

स्थाई

नी सा	— रे गरे ऽग	सा रे ग म	गरे ग ऽसा ऽनी
झू ला	ऽ धी रेसें ऽझु	ला वो सु कु	माऽ री ऽसि ऽया
	×	×	×
सा — ग म	प प —प ऽध	(प) — —ग —म	रे ग म (प)
हैं ऽ सु कु	मा री ऽसि ऽया	हैं ऽ ऽसु ऽकु	मा री सि या
×	×	×	×
म ग नी सा			
हैं ऽ झू ला			
×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नी़ सा	— ग गग —म	ग ग— ग मग	म रेग —म —प
झू ला	ऽ कं चन ऽसँ	जो ऽप ला गीऽ	ऽ रेंऽ ऽशम ऽकी
×	×	×	×
म गरे नी़ सा	— रे गरे ऽग	सा रे ग म	गरे ग —मा —नी
डो ऽर झों का	ऽ धी रेसे ऽल	गा वो सु कु	माऽ री ऽसि ऽया
×	×	×	×
सा — नि़ सा			
हैं ऽ झू ला			
×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (झूला)

पड़े रे हिंडोले नौलख बाग में जी।
ऐजी कोई झूलें रानी राज कुंवर ॥ पड़ेरे हिंडोले····

इत मेघवा दल भैंना मेरी लै चढ़ौजी।
ऐजी कोई उत दल पृथवी राजा ॥ पड़ेरे हिंडोले····

उत घन बरसें बड़ी-बड़ी बूंद सें जी।
ऐजी कोई, उत गोलिन बौछार ॥ पड़ेरे हिंडोले····

इत घन गरजै भैंना मेरी धूम सें जी।
ऐजी कोई उत तोपन धधकार ॥ पड़ेरे हिंडोले····

इत बागन में गावें कामिनी जी।
ऐजी कोई उत सूरन हुंकार ॥ पड़ेरे हिंडोले····

इत घन चमके भैंना मेरी दामिनी जी।
ऐजी कोई उत चमकैं तलवार ॥ पड़ेरे हिंडोले····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (कहरवा)

स्थाई

सा रे सा ऩी	ऩी सा सा —	ऩी सा रे ग	— सा — रे
प ड़े रे हिं	डो ऽ ले ऽ	नो ऽ ल ख	ऽ बा ऽ ग
×	×	×	×
ऩी सा सा —	रे म म म	मग रेग सा सा	रे प म म
में ऽ जी ऽ	ऐ जी को ई	झूऽ ऽऽ लैं ऽ	अंम बे को ई
×	×	×	×
मग रेग सा —	ऩीसा रेग रे —	— ग — रेसा	सा रे सा ऩी
झऽ ऽऽ लें ऽ	राऽ ऽऽ नी ऽ	ऽ रा ऽ जऽ	कुं व र हि
×	×	×	×
ऩी सा सा —	ऩी सा रे ग	— सा — रे	ऩी सा सा —
डो ऽ ले ऽ	नी ऽ ल ख	ऽ बा ऽ ग	में ऽ जी ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा रे सा ऩी	ऩी सा सा —	ऩी सा रे ग॒	— सा — रे
इ त मे घ	वा ऽ द ल	भँ ना मे री	ऽ लै ऽ च
×	×	×	×
ऩी सा सा —	रे म म म	मग रेग सा सा	रे प म म
ढ़ौं ऽ जी ऽ	ऐ जी को ई	उऽ तऽ द ल	धऽ बे को ई
×	×	×	×
मग रेग सा सा	ऩीसा रेग रे —	— ग — रेसा	सा रे सा नी
उऽ तऽ द ल	पूऽ वऽ वी ऽ	ऽ रा ऽ जऽ	प ढ़े हिं डो
×	×	×	×
ऩी सा सा —	ऩी सा रे ग॒	— सा — रे	ऩी — सा —
डो ऽ ले ऽ	मो ऽ ल ख	ऽ बा ऽ ग	मैं ऽ जो ऽ
×	×	×	×

टीप : गीत के शेष अंतरे उपरोक्त स्वरों में गाये जायेंगे। यह अंतरे बिलकुल स्थाई की तरह ही हैं मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उलारा

यह गीत होली के अवसर पर गाया जाता है। इसकी विशेषता यह है कि यह समूह गान है, अकेला कभी नहीं गाया जाता। हमेशा 'चौताल' अथवा 'डेढ़ताल' के तुरन्त बाद गाया जाता है। 'उलारा' का अर्थ है उछालना। इसीलिए 'चौताल' अथवा 'डेढ़ताल' गाने के बाद बहुत उल्लासपूर्ण एवं आवेग के साथ यह गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उलारा

गिरधारी लाल, गिरधारी लाल,
नखपै गिरधर गिरा धरे ॥

कंचनपुर है एक ठाउँ,
हो कंचनपुर है एक ठौंउ ॥

बरई की दुकान, बरई की दुकान,
पान लगावैं तमोलिन ॥

हो कूँचै भगवान, कूँचै भगवान,
नखपै गिरधर गिरा धरे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

उलारा (कहरवा)

स्थाई

म म
गि र

म — म म	— म म म	ग — सा —	ग — — ग
धा ऽ री ला	ऽ ल गि र	धा ऽ री ऽ	ला ऽ ऽ ल
×	×	×	×
रे रे रे रे	रे रे रे ग	सा सा — सा	सा — — —
न ख पैं ऽ	गि र व र	गि रा ऽ ध	रे ऽ ऽ ऽ
※	×	×	×

⊙ उपरोक्त स्थाई को कई बार दोहराया जाता है।

अंतरा

														म	—
														कं	ऽ
म	म	म	म	म	—	म	ग	रे	ग	ग	रे	ग	प	प	ध
च	न	पु	र	हैं	ऽ	ए	क	ठा	ऽ	उँ	ऽ	हो	ऽ	कं	ऽ
×				×				×				×			
म	म	म	म	म	—	म	ग	रे	ग	ग	रे	—	—	म	म
च	न	पु	र	हैं	ऽ	ए	क	ठा	ऽ	उँ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	र
×				×				×				×			
म	म	—	म	म	—	म	म	ग	ग	सा	सा	ग	—	—	ग
ई	की	ऽ	दु	का	न	ब	र	ई	की	ऽ	दु	का	ऽ	ऽ	न
×				×				×				×			
रे	—	रे	रे	रे	रे	रे	ग	सा	—	सा	सा	—	—	म	म
पा	ऽ	न	ल	गा	वैं	ऽ	त	मो	ऽ	लि	न	ऽ	ऽ	कूं	ऽ
×				×				×				×			
म	—	म	म	म	ऽम	म	म	ग	—	सा	सा	ग	—	—	ग
वैं	ऽ	भ	ग	वा	ऽन	कूं	ऽ	वैं	ऽ	भ	ग	वा	ऽ	ऽ	न
×				×				×				×			
रे	रे	रे	—	रे	रे	रे	ग	सा	सा	—	सा	सा	—		
नं	ख	पैं	ऽ	पि	ह	ब	र	घि	रां	ऽ	ध	रे	ऽ		
×				×				×				×			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा

'कहरा' गीत कहार लोग गाते हैं। इसके गीतों में शृंगार रस का भाव प्रमुख रहता है। कोई-कोई 'कहरा' 'निर्गुन' की तरह का भी होता है। इसमें झांझ, झीका, हुड़ुक, चिकारा इत्यादि वाद्य बजाये जाते हैं।

मशाल जलाकर कहरा गीत के साथ नृत्य भी होता है, जिसे 'करिंगा' नृत्य कहा जाता है। इस नृत्य में अधिकतर समाज पर व्यंग्य होते हैं या अश्लील भावों का प्रदर्शन होता है। इसको पहले दादरा और फिर कहरवा ताल में गाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा [निर्गुन]

पिया ऊँची रे अटरिया तोरी देखन चली ॥

ऊंची अटरिया, जरद किनरिया,
लागी नाम की डुरिया ॥
चाँद सुरुज सम दियना बरत है,
ता बिच भूली रे डगरिया ॥ पिया ऊँची रे····

आठ मरातिब, दस दरवाजा,
नौ मैं लाग किवरिया ॥
खिरकी बैठ गोरी चितवन लागी,
उपरा झाँप झुपड़िया ॥ पिया ऊँची रे····

कहत कबीर सुनौ भई साधो,
हरि चरनन बलिहरिया ॥
साधु संत मिल सौदा करिहैं,
झीखै मूरख अनरिया ॥ पिया ऊंचीं रे····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (कहरवा)

स्थाई

			सा रें
			पि या
रेम मप ग़ रे	सा ग़ सा नी़	सा सा ग़ रे	ग़ — सा —
ऊँऽ चीऽ रे अ	टरि या तो री	दे ख न च	ली ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×
प प प ध	पध सांनो नीध धप	ग ग म प	गम गम रे ग़ सारे
दे ख न च	लीऽ ऽऽ पिऽ याऽ	दे ख न च	लीऽ ऽऽ पिऽ याऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (दुगुन में)

ऩी — ऩी ऩी	ऩी ऩी ऩी ऩी	सा सा सा सा	सा सा सा —
ऊँ ऽ ची अ	ट रि या ऽ	ज र द कि	न रि या ऽ
×	×	×	×
रे म म म	ग ग रे ग	सा सा सा —	— — — —
ला ऽ गी ना	ऽ म की ऽ	डु रि या ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

⊙ उपरोक्त कड़ियाँ दो बार गायी जायेंगी।

रे — रे रे	म म म म	प प प प	प प प ऽप
चाँ ऽ द सु	रु ज स म	दि य ना ब	र त है ऽऽ
×	×	×	×

⊙ यह कड़ी भी दो बार गायी जायेगी।

— प प प	प नीध पम मग	रेग गसा साग रे	रेम मप ग रे
ऽ ता बि च	भ लीऽ रेऽ डऽ	गरि याऽ पिऽ या	ऊँऽ चीऽ रे म
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ भी उपरोक्त स्वरों (धुन) में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा

बालू रेतिया डगरिया चलब कैसे ।

वाही पनघटवा पै सखिया सहेलरी,
रसरिया बाटैं छोट, भरब कैसे ।।
बालू रेतिया ····

वाही पनघटवा पै, कान्हा ठाड़े,
बासुरिया तान मारैं, जियब कैसे ।।
बालू रेतिया ····

वाही पनघटवा पै, सास ननदिया,
पायल छनकारैं, जाइब कैसे ।।
बालू रेतिया ····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (दादरा)

स्थाई

									सां	—	नी̣
									बा	ऽ	लू
रे	—	रे	सा	—	सनी	ध़	—	ध	प़	—	प
रे	ऽ	ति	या	ऽ	डऽ	ग	ऽ	रि	या	ऽ	च
×			०			×			०		
ध़	—	ध़	स	—	नी̣	मा	—	—	ग	—	ग
ला़	ऽ	बि	कैं	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	हाँ	ऽ	च
×			०			×			०		
ग	ग	गं	ग	—	—	रेग	म	—	ग	रे	ग
ल	ब	ऽ	कैं	ऽ	ऽ	सेऽ	ऽ	ऽ	हाँ	ऽ	च
×			०			×			०		
सा	नी̣	—	सग	रे	ग	सा	—	—	सा	—	नी
ल	ब	ऽ	कैंऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	वा	ऽ	लू
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

अंतरे की पहली कड़ी बिना ताल के गायी जायेगी और दूसरी कड़ी कहरवा ताल में। यही क्रम बराबर चलता रहेगा।

ग — ग ग ग ग म रे — रे — रे रे रे रे रे ग स

बा ऽ ही प न घ ट वा ऽ पै ऽ स खी रे स हे ल री

कहरवा

			सा नी़
			रे ऽ
रेरे रे सा सानी़	ध़ — प़ प़	ध़ ध़ सा नी़	सा — सा नी़
सरि या बा टेऽ	छो ऽ ट भ	र ब कै ऽ	से ऽ बा लू
×	×	×	×
रे रे सा सानी़	ध़ ध़ प़ प़	ध ध सा नी़	सा — सा नी
रे ति या डऽ	ग रि या च	ल व कै ऽ	से ऽ बा लू
×	×	×	×

टीप : इसके पश्चात पुनः सम से दादरा शुरू हो जायगा। गीत की शेष पंक्तियाँ भी इसी प्रकार गायी जायेंगीं। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा

मोरे मालिक श्री भगवान, सोच मन काहे का करी ॥

जहाँ रहै नितरात बसेरा, बधिक लगावत फाँस रे।
कूद काद कै हरिनी निकस गयी,
हरिन कै परिगवा फाँस रे ॥ मोरे मालिक......

ओही पार ते हरिना बोलै, सुन हरिनी मोरी बात रे,
बिधना के घर खरच खुटानै,
बैंच खात मोरा मास रे ॥ मोरे मालिक....

एही पार ते हरिनी पुकारे, सुन बधिका मोरी बात रे,
हमहू का बाँध पिया संग मोरे,
खोजिन मोर अहि बात रे ॥ मोरे मालिक....

इतनै वचन जब सुनै बधिकवा, काट दिहिस गल फाँस रे,
हरिनी बचन जब सुनै बधिकवा,
अपनी धना की सुधि आय रे ॥ मोरे मालिक....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (कहरवा)

स्थाई

सा	रे
मो	रे

ध़	सा	सा	सा	रे	प	म	ग	रे	—	रे	सा	रे	प	म	ग
मा	लि	ऽक	सि		ग	भ	ऽ री	वा	ऽ	न	सो	ऽ	च	म	न
×				×				×				×			

रे	ग	रे	सा	सा	—	सा	रे
का	हे	का	क़	री	ऽ	मो	रे
×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

ग	ग	—	ग	ग	—	ग	ग	सा	रे	रे	ग	सा	—	सा	रे
ज	हाँ	ऽ	र	हैं	ऽ	नि	त	रा	ऽ	त	ब	से	ऽ	रा	ऽ
×				×				×				×			
म	म	म	म	म	ग	ग	रे	रे	—	—	सा	सा	—	—	—
ब	धि	क	ल	गा	ऽ	व	त	फाँ	ऽ	ऽ	स	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
रे	—	रे	रे	म	म	म	—	म	प	प	प	प	प	प	धप
कू	ऽ	दे	का	ऽ	दि	कै	ऽ	ह	रि	नी	नि	क	स	ग	यीऽ
×				×				×				×			

⊙ उपरोक्त कड़ियाँ दो-दो बार गायी जायेंगी।

—	सां	सां	सां	सां	सां	नी	धप	—	प	ध	प	म	ग	सा	रे
ऽ	हरि	ना	के	प	रि	ग	वाऽ	ऽ	फाँ	ऽ	स	रे	ऽ	मो	रे
×				×				×				×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ भी उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा

हो कजरवा काहे दिये हो,
नैना कजरारे ॥

तोहरी धानी रे चुनरिया,
हथवा सोनै की मुंदरिया,
नयनवा रतनारे हो ॥ नैना कजरारे,
हो कजरवा····

तोहरी रे लांबी लांबी केसिया,
दंतवा सोहैं तोहरी मिसिया,
जियरवा काहे जारे हो। नैना कजरारे,
हो कजरवा····

तोहरी बारी रे उमरिया,
तोहरी पतरी रे कमरिया,
पायल झनकोर हो ॥ नैना कजरारे,
हो कजरवा····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (दादरा)

स्थाई

			सारे गम म
			होऽ ऽऽ क
			०
म म मप	ग — म	ग — सा	गरे मग ग
ज र वाऽ	का ऽ हे	दि ऽ ये	होऽ ऽऽ ऽ
×	०	×	०
ग — म	गरे ग स	सा — सा	सारे गम म
नै ऽ ना	कऽ ऽ ज	रा ऽ रे	होऽ ऽऽ क
×	०	×	०

अन्तरा

			म म मग
			तो ह रीऽ
गरे ग सा	गरे ग स	सा सा सा	प प प
धाऽ ऽ नी	रेऽ ऽ चु	न रि या	ह थ वा
×	०	×	०
प — प	ध नी ध	प प प	— —
सो ऽ नै	की ऽ मुं	द रि या	ऽ ऽ
×	०	×	०

⊙ उपरोक्त कड़ियां दो बार गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरवा

															य
															न
मम	म	म	म	ग	सा	ग	—	ग	मग	सा	सा	सा	सा	—	म
यन	वा	र	त	ना	रे	हो	ऽ	नै	नऽ	क	ज	रा	रे	ऽ	न
×				×				×				×			
म	म	—	म	म	म	—	म	म	म	म	म	ग	सा	ग	—
यन	वा	ऽ	न	यन	वा	ऽ	न	यन	वा	र	त	ना	रे	हो	ऽ
×				×				×				×			
ग	मग	सा	सा	सा	सा	—	म	म	म	म	म	ग	सा	ग	—
नै	नऽ	क	ज	रा	रे	ऽ	क	जर	वा	का	हे	दि	ये	हो	ऽ
×				×				×				×			
ग	मग	सा	सा	सा	—	सा									
नै	नाऽ	क	ज	रा	ऽ	रे									
×															

टीप : यहाँ से फिर दादरा शुरू हो जाता है। गीत की शेष पंक्तियाँ अन्तरे की ही तरह गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घाटौ

यह लोकगीत चैत मास में गाया जाता है, विशेषतया रामजन्म पर। घाटौ शास्त्रीय संगीत के ध्रुपद के समान है। इसमें ध्रुपद का गाम्भीर्य है। इसका तीनों सप्तकों [मंद्र, मध्य एवं तार] में विस्तार होता है। इस लोक गीत को जब शत-शत स्त्री-पुरुष मिल कर गाते हैं, तब इसका रस माधुर्य और भी बढ़ जाता है; साथ ही बार-बार सुनने की ललक भी बढ़ती है।

'घाटौ' लोक गीत के अन्दर 'उटियां' यानी ऊंचे स्वरों में 'हो रामा' का जब उच्चारण होता है, तब यह बहुत अच्छा मालूम देता है। इस लोक धुन (गीत) के साथ सौ-सौ जोड़ी झांझ और दस-दस, बीस-बीस ढोलकें बजती हैं। यह पहले चांचर, बाद में कहरवा ताल में गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घाटौ

रामा चैइत अयोध्या।
रामजी जनमि लैं हो रामा,
घरे घरे बाजैला रे बधैया ॥ हो रामा

रामा हाँ, रामा सौने की चवकिया,
राम निहवावैं हो रामा,
सखी सबै डालै ली हो निछावर ॥ हो रामा

रामा हाँ, रामा को सखी डालैली
अंगुठी मुदरिया हो रामा,
कोइ सखी डालैली रतन पदारथ ॥ हो रामा

रामा हाँ, रामा केकई जी डालैली
अंगुठी मुदरिया हो रामा,
कौसिला जी डालैली रतन पदारथ ॥ हो रामा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घाटौ (चांचर)

स्थाई

सा	—	सा	—	रे	ग	—	म	—	—	—	रे	—	—
रा	ऽ	मा	ऽ	चं	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
सा	—	सा	—	रे	ग	—	म	—	—	—	रे	—	—
त	ऽ	अ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ध्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
म	—	म	—	प	—	—	म	—	—	—	म	प	—
रा	ऽ	मा	ऽ	चं	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
म	—	ग	—	रे	—	—	सा	—	—	—	रें	रें	—
त	ऽ	अ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ध्या	ऽ	ऽ	ऽ	रा	म	ऽ
३				×			२				०		
रें	—	रें	—	रें	रें	—	सां	—	नी	—	ध	—	—
बी	ऽ	ज	ऽ	न	मि	ऽ	लै	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ
३				×			२				०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	—	—	—	प	ध	—	प	—	म	—	म	—	—
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	रे	ऽ	ध	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
म	—	—	—	ग	—	—	ग	—	—	—	ग	—	—
रे	ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
रे	—	ग	—	सा	रे	—	सा	—	सां	—	नी	ध	—
रे	ऽ	ब	ऽ	धैं	ऽ	ऽ	या	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
प	—	—	—	प	ध	—	प	—	म	—	म	—	—
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	रे	ऽ	ध	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
म	—	—	—	ग	—	—	ग	—	—	—	ग	—	—
रे	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
रे	—	ग	—	सा	रे	—	सा	—	—	—	—	—	—
रे	ऽ	ब	ऽ	धैं	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३				×			२				०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

⊙ इसका अन्तरा हमेशा सम से और रामा कह कर उठेगा ।

प — —	प — — —	— — —	— — — रे
रा ऽ ऽ	मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
म — —	— — — —	— — —	— — म —
हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	रा ऽ मा ऽ
×	२	०	३
प — —	म — — —	— — —	रे — सा —
सी ऽ ऽ	तै — — —	ऽ ऽ ऽ	की ऽ च ऽ
×	२	०	३
रे म —	म — — —	रें — —	म — म —
व की ऽ	या ऽ ऽ ऽ	ऐ ऽ ऽ	रा ऽ मा ऽ
×	×	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	—	—	म	—	—	—	म	प	—	म	—	ग	—
गो	ऽ	ऽ	नै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	की	ऽ	च	ऽ
×			२				०			३			
रे	रे	—	सा	—	—	—	रें	रें	—	रें	—	रें	—
व	की	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	रा	म	ऽ	नि	ऽ	ह	ऽ
×			२				०			३			
रें	—	—	सा	—	नी	—	ध	—	—	प	—	—	—
वा	ऽ	ऽ	वै	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
प	ध	—	प	—	म	—	म	—	—	म	—	—	—
ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ	स	ऽ	ऽ	वै	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	—	—	ग	—	—	—	ग	—	—	रे	—	ग	—
डा	ऽ	ऽ	लै	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	हो	ऽ	नि	ऽ
×			२				०			३			
सा	रे	—	ससा	—	सां	—	नी	ध	—	प	—	—	—
छा	ऽ	ऽ	वर	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

प ध —	प — म —	म — —	म — — —
ऽ ऽ ऽ	स ऽ खी ऽ	स ऽ ऽ	बैं ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
ग — —	ग — — —	ग — —	रे — ग —
डा ऽ ऽ	लैं ऽ ऽ ऽ	ली ऽ ऽ	हो ऽ लि ऽ
×	२	०	३
सा रे —	मासा — — —		
छा ऽ ऽ	वर ऽ ऽ ऽ		
×	२		

टीप : गीत के शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे। बाद में पूरा गीत कहरवा में भी गाया जायेगा।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घाटौ (क्रमशः) कहरवा

स्थाई

प	—	प	—	—	—	प	रे	म	—	—	—	—	—	म	म
रा	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हाँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	मा
×				×				×				×			
प	—	म	—	—	—	रे	सा	रे	म	म	—	रे	—	म	म
चै	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	त	अ	यो	ऽ	ध्या	ऽ	ऐ	ऽ	रा	म
×				×				×				×			
प	—	म	—	म	प	म	ग	रे	—	सा	—	रें	रें	रें	रें
चै	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	त	अ	यो	ऽ	ध्या	ऽ	रा	म	जी	जा
×				×				×				×			
रें	रें	रें	सा	नी	ध	प	—	प	ध	प	म	म	—	म	—
न	मि	लै	हो	रा	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ध	रे	ध	ऽ	रे	ऽ
×				×				×				×			
ग	—	ग	—	ग	—	रे	ग	सा	रे	सा	सां	नी	ध	प	—
बा	ऽ	जं	ऽ	ला	ऽ	रे	ब	धै	ऽ	या	हो	रा	ऽ	म	ऽ
×				×				×				×			

टीप : गीत के शेष अन्तरे भी कहरवा ताल में इसी प्रकार गाये जायेंगे। कहरवे में भी 'रामा' कह कर ही अन्तरा बदलेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौताल

'चौताल' गीत भी फागुन में ही गाया जाता है। इस गीत का जैसा नाम है वैसा ही इसमें गुण भी है। इसे चार अलग-अलग लयों में गाया जाता है। पहले चांचर में और फिर कहरवे की तीन लय बरती जाती हैं।

चौताल के अधिक प्रकार नहीं मिलते हैं। केवल एक धुन और है, वह भी अधिक अलग नहीं है। लगभग पहली धुन से ही मिलती-जुलती है।

चौताल सहगान के रूप में गाया जाता है। इसमें ढोल, मंजीरा, झांझ, चिकारा आदि वाद्य बजाये जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौताल

दृग रेख कजर धोइ डारौ बिना मदुराई।

श्याम सुन्दर कुबरी के रस बस,
हमरी सुरत बिसरायी॥
गुन गुन बिरह अगिन डर उपजत,
मनुआ मोरा बौरायी॥ बिना मदुराई··· ···

छिन आंगन, छिन जात अटा पै,
श्याम श्याम रट लायी॥
ऐसे निठुर भये मनमोहन,
निसदिन हमै रहै हो सतायी॥ बिना मदुराई······

सांझ सकारे जाय बंसी बट,
नयी-नयी तान सुनायी,
धुन-सुन बिसर जात, गृह कारज,
जियरा मोरा अकुलायी॥ बिना मदुराई··· ···

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौताल (चाचर)

स्थाई

			सा — सा —
			दू ऽ ग ऽ
रे ग —	म — प —	म ग —	रे — सा —
रे ऽ ऽ	ख ऽ क ऽ	ज र ऽ	धो ऽ य ऽ
×	२	०	३
नी़ — —	सा — रे —	रे — —	सा — सा —
डा ऽ ऽ	री ऽ बि ऽ	ना ऽ ऽ	म ऽ दु ऽ
×	२	०	३
नी़ — —	— — — —	सा — —	सा — सा —
रा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ	दू ऽ ग ऽ
×	२	०	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा कहरवा)

म	—	म	म	म	म	म	ग	रे	ग	ग	रे	नी	सा	रे	रे
श्या	ऽ	म	सुं	द	र	कु	ब	री	ऽ	के	ऽ	र	म	ब	स
×				×				×				×			
रे	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे	नी	—	—	—	सा	—	—	—
	म	री	सु	र	त	बि	स	रा	ऽ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

⊙ उपरोक्त कड़ियाँ दो बार गायी जायेंगी।

—	रेरे	रे	ग	म	मप	प	प	प	पध	प	म	मग	रेग	रे	रे
ऽ	गुन	गु	न	बि	रऽ	ह	अ	गि	नऽ	ड	र	उऽ	पऽ	ज	त
×				×				×				×			

⊙ यह कड़ी भी दो बार गायी जायेगी।

कहरवा

—	रेरे	रे	ग	म	मप	प	प	प	पध	प	म	मग	रेग	रे	रे
ऽ	गुन	गु	न	बि	रऽ	ह	अ	गि	नऽ	उ	र	उऽ	पऽ	ज	त
×				×				×				×			

⊙ यह कड़ी भी दो बार गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चांचर

सा	—	सा	—	रे	ग	—	म	—	प	ध	म	ग	—
म	ऽ	न	ऽ	वा	ऽ	ऽ	मो	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
रे	—	सा	—	ऩी	—	—	सा	—	रे	—	रे	—	—
बो	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	यी	ऽ	बि	ऽ	ना	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
सा	—	सा	—	ऩी	—	—	स	—	प	—	प	—	—
म	ऽ	दु	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	बि	ऽ	ना	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
प	—	प	—	प	—	—	प	—	प	—	प	—	—
म	ऽ	दु	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	बि	ऽ	ना	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
प	—	म	—	प	नी॒	नी॒	ध	—	प	—	म	ग	—
म	ऽ	दु	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ
३				×			२				०		
ग॒	—	सा	—										
दृ	ऽ	ग	ऽ										
३													

टीप : गीत के शेष अंतरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर

यह गीत होली के अवसर पर गाया जाता है। इसमें बसंत ऋतु तथा होली की उमंग में राधाकृष्ण अथवा सीताराम के होली खेलने का वर्णन होता है। इसका एक ही प्रकार और मिलता है। इसमें अधिक विविधता नहीं है। इसको कहरवा ताल में गाते हैं। इसे सामूहिक रूप से या अकेले भी गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर

कंहवाँ ते आवैलै कुँवर कन्हैया, ऐ झूमर हो।
कंहवाँ ते आवै मोरा छैया। झूमर हो।

गोकुला ते आवैलै कुँवर कन्हैया। ऐ झूमर हो
मथुरा ते आवै मोरा छैया॥ ऐ झूमर हो

कंहवाँ जे बाजैलै आनंद बधैया। ऐ झूमर हो
कंहवाँ जे बाजै शैहनैया॥ झूमर हो

गोकुला मै बाजैलै आनंद बधैया। ऐ झूमर हो
मथुरा मै बाजै पैजनिया॥ झूमर हो

केहिके जे सोहैला अधर बंसुरिया॥ ऐ झूमर हो
केहिके जे सोहैला पैजनियाँ॥ झूमर हो

कान्हा कै सोहेलै अधर बसुरिया॥ ऐ झूमर हो
राधा जी कै सोहैलं पैजनिया॥ झूमर हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर (कहरवा)

स्थाई

—	सा	सा	सा	रे	म	प	ध	—	प	ध	प	म	ग	रे	सा
ऽ	कह	वाँ	तँ	आ	ऽ	वै	लँ	ऽ	कुँव	र	क	न्है	या	ऐ	झू
×				×				×				×			
ग	रे	ग	—	—	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	सा
म	र	हो	ऽ	ऽ	कंह	वाँ	ते	आऽ	वैऽ	मो	रा	छै	या	ऽ	झू
×				×				×				×			
ग	रे	ग	—	—	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	—
म	र	हो	ऽ	ऽ	कंह	वाँ	ते	आऽ	वैऽ	मो	रा	छै	या	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	सां	सां	सांनी	धनी	रेंसां	नी	ध	—	प	ध	प	म	ग	रे	सा
ऽ	गो	कुला	तेऽ	आऽ	ऽऽ	वैं	लै	ऽ	कुँत्र	र	क	न्हे	या	ऐ	झू
×				×				×				×			
ग	रे	ग	—	—	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	सा
म	र	हो	ऽ	ऽ	मथु	रा	ऽ	आऽ	वैंऽ	मो	रा	छै	या	ऽ	झू
×				×				×				×			
ग	रे	ग	—	—	रे	रे	सा	रेग	मग	मो	रे	सा	सा	—	—
म	र	हो	ऽ	ऽ	मथु	रा	ते	आऽ	वैंऽ	रे	रा	छै	या	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में इसी प्रकार गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर (स्वरचित)

मचौ फाग घनघोर आज होरी झूमरी।

अब चलत रंग चहु ओर ॥ आज होरी झूमरी

गलियन गलियन होत शोर ॥ आज होरी झूमरी

रंग डारत है बरजोर ॥ आज होरी झूमरी

इतसै सखि संग जनक दुलारी ॥आजहोरी झूमरी

और उत सै अवध किशोर ॥ आज होरी झूमरी

बाजत बीन मृदंग झांझ ॥ आज होरी झूमरी

जैसे घन गरजत घन-घोर ॥ आज होरी झूमरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर (कहरवा)

प	प	—	प	—	प	ग	म	पध	सांनी	ध	प	ग	म	प	ध
म	चो	ऽ	फा	ऽ	ग	घ	न	घोऽ	ऽऽ	र	आ	ऽ	ज	हो	री
×				×				×				×			
ग	—	सा	—	सा	—	सा	सा	प़	प़	नी	नी	सा	सा	रे	रे
झू	ऽ	म	ऽ	री	ऽ	अ	ब	च	ल	त	रं	ऽ	ग	च	हु
×				×				×				×			
ग	ग	रे	सा	ध	सा	रे	म	ग	—	सा	—	सा	—	—	—
ओ	ऽ	र	आ	ऽ	ज	हो	री	झू	ऽ	म	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी ।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

भारत की अधिकांश जनता धार्मिक निष्ठा वाली है। प्रायः सभी मांगलिक अवसरों पर देवी गीत गाये जाते हैं। इस गीत के गाते समय भक्तजन श्रद्धा और विश्वास के साथ मनौतियाँ मनाते हैं। देवी की शरण में सब अपने को सुरक्षित समझते हैं। देवी के प्रताप का वर्णन भी इन गीतों में रहता है।

पूजन के समय नवरात्रि के दिनों में 'देवीगीत' विशेषरूप से गाया जाता है। मेले में जाते समय, पूजन की भावना के साथ औरतें झुण्ड में चलती हुई इसे गाती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

उड़ि जाऊ रे सुगनवाँ गँगा पार, खबर लाउ देबिन का ॥

सौनै की थारी मा जिउना परोसल्यो,
उड़ि जाउ रे सुगनवाँ गँगा पार, जिवांय आउ देबिन का ॥

कंचन गड़ुआ गँगाजल पानी,
उड़ि जाउ रे सुगनवाँ गँगा पार पियाइ आउ देबिन का ॥

पाँच पान पचवीरी बनायेउ,
उड़ि जाउ रे सुगनवाँ गँगा पार, खवाय आउ देबिन का ॥

चुन चुन कलियाँ मैं सेजा बिछायेऊ,
उड़ि जाउ रे सुगनवाँ गँगा पार, सुवाय आउ देबिन का ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (कहरवा)

स्थाई

			सा रे
			उ ड़
नी़ नी़ नी नी़	नी़ सा रे ग	रे — — सा	रे प म ग
जा उ रे सु	गन वाँ गं गा	पाऽ ऽर ख	ब र ला उ
×	×	×	×

रे ग रे रे	सा — सा रे
दे ऽ बि न	का ऽ उ ड़
×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

म म — गरे	ग ग — रेस	रे रे - सानि़	सा सा सा रे
सो नै ऽ कीऽ	था री ऽ माऽ	बिउ ना ऽ पऽ	रोस ल्यो उ ड़ि
×	×	×	×
नि़ नि़ नि़ नि़	नि़ सा रे ग॒	रे — — सा	रे प़ म ग
जा उ रे सु	गन वाँ गं गा	पा ऽ ऽर जि	वां ऽ य ऽ
×	×	×	×
रे ग॒ रे सा	सा — सा रे		
दे ऽ वि न	का ऽ उ ड़ि		
×	×		

टीप : मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए। गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

कामना पुरन करौ माई ॥ कि ऐरी देवा

काहे का तोरा भवन बना रे माई,
काहे के चार खम्भे लगेरी माई, ॥ कि ऐरी देवा

सोनें का तोरा भवन बना रे माई,
रूपे के चार खम्भे लगेरी माई ॥ कि ऐरी देवा

काहे की तोरी लुइया डुलैया माई,
काहे के फूलन भरी री माई ॥ कि ऐरी देवा

बाँसे की मोरी लुइया डुलैया माई,
चमेली के फूलन भरे री माई ॥ कि ऐरी देवा

जायी ठाड़े दुआर माई,
दरश देऊ घर का चली माई ॥ कि ऐरी देवी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (कहरवा)

स्थाई

ध
का

नी	ग	रे	ग	सा	रे	रे	म	ग	—	रे	—	स	—	—
ऽ	म	ना	ऽ	पू	र	न	क	रो	ऽ	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ
×				×				×				×		

अन्तरा

प
कि

प	ध	प	—	म	—	—	म	ग	म	रे	ग	सा	रे	रे	म
ऐ	री	दे	ऽ	वा	ऽ	ऽ	का	हे	का	तो	रा	भ	व	न	ब
×				×				×				×			
ग	ग	रे	—	सा	—	—	ध़	नी	ग	रे	ग	सा	रे	—	म
ना	रे	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	का	हे	के	चा	ऽर	ख	म्भे	ऽ	स
×				×				×				×			
ग	ग	रे	—	सा	—	—	—								
गे	री	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×											

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

कैसे के दरशन पाऊँ री, माई संकरी दुअरिया।

माई के दुआरे अंधा पुकारे
देऊ नैन घर जाऊँ री ॥ माई संकरी ····

माई के दुआरे एक कोढ़ी पुकारे,
देऊ काया घर जाऊँ री ॥ माई संकरी ····

माई के दुआरे एक भूखा पूकारे,
देऊ अन्न घर जाऊँ री ॥ माई संकरी ····

माई के दुआरे एक बाँझ पुकारे,
देऊ पूत घर जाऊँ री ॥ माई संकरी ····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (कहरवा)

स्थाई

प	ऩी	—	ऩी	ऩी	सा	रे	ग	रेग	म	ग	—	रे	—	प	म
कै	से	ऽ	के	द	र	श	न	पाऽ	ऽ	ऊं	ऽ	री	ऽ	मा	ई
×				×				×				×			
पध	प	—	म	ग	म	रे	—								
सक	री	ऽ	दु	अ	रि	गा	ऽ								
×				×											

अन्तरा

म	म	म	म	म	प	प	ध	म	म	—	म	मग	रेग	र	—
मा	ई	के	दु	आ	रे	ए	क	अ	न्धा	ऽ	पु	काऽ	ऽऽ	रे	ऽ
×				×				×				×			
प़	नी	ऩी	ऩी	ऩी	सा	रे	ग	रेग	म	ग	—	रे	—	प	म
दे	ऽ	ऊ	नै	ऽ	न	ध	र	जाऽ	ऽ	ऊं	ऽ	री	ऽ	मा	ई
×				×				×				×			

टीप : शेष गीत की पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत [भोजपुरी]

झूमत झूमत मैंया अयली देव घरवा,
चलि भैली मलिया दुआर ॥ ऐ मैया

सूतल बाड़ू कि जागिले मालिन,
हमरो के पनिया पियाऊ ॥ ऐ मैया

एक हाथ लीन्है मैया ढाल तरवरिया,
एक हाथ लीन्है महाखान ॥ ऐ मैया

लड़त लड़त मैया मठ मै समैली,
असुरा कै करली सँघार ॥ ऐ मैया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (कहरवा)

स्थाई

म म म म	म म म ग	म प प प	मप मग रे —
झू म त झू	म त मै या	अय ली दे व	घऽ रऽ वा ऽ
×	×	×	×
म प प प	मप मग रे रे	सा — — सा	रे — प़ प़
च लि भै ली	मऽ लिऽ या दु	आ ऽ ऽ र	ऐ ऽ मै या
×	×	×	×
रे म म म			
ऐ ऽ मै या			
×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

— ध ध ध	मप पध म म	— ध ध ध	मप पध म म
ऽ सू त ल	बाऽ ऽऽ ड़ू कि	ऽ जा गि लै	माऽ ऽऽ लि न
×	×	×	×
म प प प	मप मग रे रे	सा — — सा	रे — प़ प
ह ग रा कैं	पऽ निऽ या पि	य ऽ ऽ हु	ऐ ऽ मैं या
×	×	×	×
रे म म म			
ऐ ऽ मैं या			
×			

टीप : शेष गीत के अंतरे उपरोक्त प्रकार से ही गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत

निबिया कै डार मैया डालैली हिंडोलवा से
झूली झूली ना,
मैया गावै ली गीतिया-से
झूली झूली ना ॥

सूतल बाड़ कि जागिलै मालिन,
बूंदा भरी ना मैका पनिया पियाऊ से
बूंदा भरी ना ॥

कैसे के पनिया पियाउ रे सीतल मैया मोरे बलका,
मैया अजर अमर करो मोरे बलका ॥

दूध पूत होय मालिक मोरे बरदनवा से,
तोरे बलका, मालिन अजर अमर होवै तोरे बलका ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थायी

–	–	सा	रे	रे	म	म	–	प	–	–	प	प	–	प	म
ऽ	ऽ	नि	बि	या	ऽ	कै	ऽ	डा	ऽ	ऽ	र	मै	ऽ	या	ऽ
×				×				×				×			
प	ध	ध	–	ध	–	प	म	प	–	–	प	प	–	प	म
डा	ऽ	लै	ऽ	ली	ऽ	हिं	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ल	वा	ऽ	अ	रे
×				×				×				×			
प	ध	ध	–	ध	–	प	म	प	–	–	म	ग	–	सा	रे
डा	ऽ	लै	ऽ	ली	ऽ	हिं	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ल	वा	ऽ	ऽ	से
×				×				×				×			
ग	–	म	ग	रे	–	सा	सा	सा	–	रे	–	रे	–	रे	ग॒
नू	ऽ	ले	ऽ	झू	ऽ	ले	ऽ	ना	ऽ	मै	ऽ	या	ऽ	ग	ऽ
×				×				×				×			
रे	ग॒	रे	सा	ध़	–	सा	–	–	सा	रे	ग	ग	–	ग	–
ऽ	ऽ	वै	ऽ	ली	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ति	या	ऽ	से	ऽ	झू	ऽ
×				×				×				×			
म	ग	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–				
ले	ऽ	झू	ऽ	लै	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
×				×				×							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	सां	सां	सां	सां	—	नीध	प	प	ध	ध	म	म	प	प	प
ऽ	सू	त	ल	बा	ऽ	ड़ऽ	कि	जा	ऽ	गि	ले	मा	ऽ	लि	न
×				×				×				×			
प	ध	ध	म	म	प	प	प	ग	मग	रे	सा	सा	—	रे	रे
जा	ऽ	गि	ले	मा	ऽ	लि	न	बूँ	दाऽ	भ	री	ना	ऽ	मै	का
×				×				×				×			
रे	रेग	रे	ध़	सा	सा	ग	ग	ग	मग	रे	सा	सा	—	—	—
प	नि	याँ	पि	या	उ	मा	लिन	बूँ	दाऽ	भ	री	ना	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
—	—	सा	रे												
ऽ	ऽ	नि	बि												
×															

टीप : शेष गीत के अन्तरे उपरोक्त प्रकार से गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

भुइयाँ मना बन चली मलिनियां,
लैके हो डलिया भर फूल ।

काहे की तोरी लुइया डुलैया,
काहे के मालिन तोरे फूल ।। काहे के……

बाँसे की मोरी लुइया डुलैया,
बेला और चमेली के फूल ।। बेला……

माँगना होय सो मांग लै मालिन,
जो तेरे मन ही ना समाय । जो तेरे……

दूध पूत मोहे सब कछु दीन्हौं,
मलिया का अम्बार कै देऊ ।। मलिया……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थायी

म म — म	म — म म	प ध प म	म म ग —
भुई याँ ऽ म	ना ऽ व न	च ली ऽ म	लि नि याँ ऽ
×	×	×	×
ग म ग म	रे ग सा रे	ध सा — रे	ग — — मग
लै ऽ के ऽ	हो ऽ डा लि	या भ ऽ र	फू ऽ ऽ लऽ
×	×	×	×
रे — सा —	— — सा रे	ध सा — रे	ग — — मग
लै ऽ के ऽ	ऽ ऽ ड लि	या भ ऽ र	फू ऽ ऽ लऽ
×	×	×	×
रे — सा —			
लै ऽ कें ऽ			
×			

टीप : पूरा गीत उपरोक्त स्वरों में इसी प्रकार गाया जायगा। इस गीत में अंतरा नहीं है, गायक चाहे तो बना सकता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुंदेलखंडी देवीगीत (अचरी)

मैया के गढ़ पै बेला,
अकेली मैं तो सेवा को ठाड़ी ।।

सोने की थारी में भोजन परोसौ,
जेंओ मोरी आदि भवानी ।। अकेली......

कंचन झारी में जल भरी लायरी,
पियो मोरी आदि भवानी ।। अकेली......

चुन-चुन कलियन सेज बिछायी,
पोढ़ो मोरी आदि भवानी ।। अकेली .....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुंदेलखंडी देवीगीत (कहरवा)

स्थाई

ध़ सा — सा	सा रे ग म	ग सा — सा	सा रे ग म
मै या ऽ के	ग ढ़ पै ऽ	बे ला ऽ अ	के ली मैं तो
×	×	×	×
ग सा — सा	रे — सा —		
से वा ऽ की	ठा ऽ ड़ी ऽ		
×	×	×	

अन्तरा

ग सा — सा	रेग म — म	गम प — म	ग रे ग —
सो नै ऽ की	थाऽ री ऽ में	भोऽ जन ऽ प	रो ऽ सौ ऽ
×	×	×	×
ध सा — सा	स रे ग म	ग सा — सा	सा रे ग म
जै ओ मो री	आ ऽ दि म	वा नी ऽ अ	के ली मैं तो
×	×	×	×
ग सा — सा	रे — सा —		
से वा ऽ की	ठा ऽ ड़ी ऽ		
×	×		

टीप : शेष गीत के अन्तरे उपरोक्त स्वरों में इसी प्रकार गाये जायेंगे। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत [अवधी]

मोर महरानी विंध्याचल की रानी,
कड़े मैं झूलैं पालना ।। मोर महरानी …

सोने की थरिया मा जिवना परोस्यौं, ।
मोर महरानी विंध्याचल की रानी,
कड़े मैं जेवैं जैवना ।। मोर महरानी……

कंचन गड़ुआ में जल भर लायी,
मोर महरानी विंध्याचल की रानी,
कड़े मैं पीवैं पीवना ।। मोर महरानी……

फूल नेवारी कै सेजां बिछायेउ,
मोर महरानी विंध्याचल की रानी,
कड़े मैं सोवैं सेजिया ।। मोर महरानी …

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थाई

म — म म	म म — म	पध प — म	ग ग — ग
मो र म ह	रा नी ऽ विं	ध्याऽ चल ऽ की	रा नी ऽ क
×	×	×	×
रे ग रे सा	सा — रे —	ग मग सा सा	सा सा — —
ड़ें में झू लै	पा ऽल ना ऽ	मो रऽ म हा	रा नी ऽ ऽ
×	×	×	×

अंतरा

सा — सा सा	रे म म मे	ग म प म	ग रे ग —
सौं ऽ नै की	थ रि या मैं	जि उ ना प	रो ऽ से ऽ
×	×	×	×

टीप : अन्तरे की दूसरी कड़ी स्थायी की तरह गायी जायेगी। शेष गीत उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

लिख लिख चिठिया जे असुरा पठावै,
ऐ भवानी रे देबिया ॥
सीतला से करबै बियाहु
भवानी रे देबिया ॥

लिख लिख चिठिया सीतला पठावै,
ऐ भवानी रे देबिया ॥
असुरा कै करबै संघार,
ऐ भवानी रे देबिया ॥

हथिया उन्चास आवै घुड़वा पचास,
ऐ भवानी रे देबिया ॥
पैहल खेह उड़ियाय
ऐ भवानी रे देबिया ॥

एक हाथ लीन्हैं मैंया ढ़ार तरवरिया,
ऐ भवानी रे देबिया ॥
एक हाथ लीन्हैं महाखान,
ऐ भवानी रे देबिया ॥

लड़त लड़त मैंया मठ मैं समैली,
ऐ भवानी रे देबिया ॥
असुरा कै करली संघार,
ऐ भवानी रे देबिया ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थाई

– सारे धम म	म प प प	– पध ध म	म प पसां सांध
ऽ लिख लिऽ ख	चि ठि या जे	ऽ असु रा प	ठा वै देऽ बीऽ
×	×	×	×
– पध ध म	मप पध ग सा	सारे ग सारे ग,मग	सा सा सा –
ऽ असु रा प	ठाऽ वेऽ हो भ	वाऽ ऽ नीऽ रेऽऽ	दे बि या ऽ
×	×	×	×
– ध़ सा सा	रेग सारे म म	मप गम रेग सा	सारे ग सारे ग,मग
ऽ सीत ला से	कऽ रिऽ वै बि	याऽ ऽऽ हुऽ भ	वाऽ ऽ नीऽ रे,ऽऽ
×	×	×	×
सा सा सा सा			
दे बि या ऽ			
×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

— सां सां सां	धनी रेंसां नीध प	— पध ध म	म प पसां सांध
ऽ लिख लि ख	चिऽ ठिऽ याऽ जे	ऽ सीत ला प	ठा वै देऽ बीऽ
×	×	×	×
— पध ध म	मप पध ग सा	सारे ग सारे ग,मग	सा सा सा —
ऽ सीत ला प	ठाऽ वेऽ हो भ	वाऽ ऽ नीऽ रे,ऽऽ	दे बि या ऽ
×	×	×	×
— ध़ सा सा	रेग सारे म म	मप गम रेग सा	सारे ग सारे ग,मग
ऽ असु रा के	कऽ रऽ बै सं	घाऽ ऽऽ रऽ भ	वाऽ ऽ नीऽ रे,ऽऽ
×	×	×	×
सा सा सा सा			
दे बि या ऽ			
×			

टीप—गीत की शेष पंक्तियाँ भी उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

यह गीत होली के अवसर पर गाया जाता है। इस गीत की लय अधिकतर द्रुत ही रहती है और बड़ी धूमधाम से गाया जाता है। इसको सौ-सौ, पचास-पचास स्त्री-पुरुष मिलकर गाते हैं। ढ़ोल, मंजीरा, झांझ, झीका चिकारा इत्यादि वाद्ययंत्र इस धुन के साथ बजाये जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार [अवधी]

आयो रे रितुराज, आज ये होरी खेलन आयो ।

बन बन बाग बाग गलियन में,
मधुर सुगंध उड़ायो,
हरियर पात, पिछौरी ऊपर, अमित रंग ढरकायो ।। आज ये………

मधुर सुरन या कोयल बोलै, पन्छिन फगुआ गायो,
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर कीच मचायो ।। आज ये……

बाजत बीन, मृदंग झांझ, ढफ, मंजीरा ठनकायो,
गावत फाव ओ, ढोल बजावत, अति आनंद मनायो ।। आज ये……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार (कहरवा)

स्थाई

ऩी	—	ऩी	—	ऩी	—	ऩी	ऩी	सा	रे	रे	रे	रे	रे	सा	ऩी
आ	ऽ	यो	ऽ	रे	ऽ	रि	तु	रा	ऽ	ज	आ	ऽ	ज	ये	ऽ
×				×				×				×			
सा	रे	रे	ग॒	रे	सा	सा	रे	ऩी	सा	सा	—	रे	म	म	रे
हो	ऽ	री	ऽ	खे	ऽ	ल	न	आ	ऽ	यो	ऽ	आ	ऽ	यो	ऽ
×				×				×				×			
रे	—	रे	ग॒	रे	सा	सा	रे	ऩी	सा	सा	—	—	—	—	—
हो	ऽ	री	ऽ	खे	ऽ	ल	न	आ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नी़	नी़	नी़	नी़	नी़	—	नी़	नी़	सा	रे	रे	रे	रे	रे	सा	नी़
ब	न	ब	न	बा	ऽ	ग	बा	ऽ	ग	ग	लि	य	न	मैं	ऽ
×				×				×				×			
सा	रे	रे	ग॒	रे	सा	सा	रे	नी़	सा	सा	—	रे	म	म	रे
म	धु	र	सु	गँ	ऽ	ध	उ	ड़ा	यो	अ	रे	हाँ	ऽ	हाँ	ऽ
×				×				×				×			
रे	रे	रे	ग॒	रे	सा	सा	रे	नी़	सा	सा	—	—	—	—	—
म	धु	र	सु	गँ	ऽ	ध	उ	ड़ा	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
रे	रे	रे	रे	रे	म	म	म	म	प	प	—	प	—	प	प
ह	रि	य	र	पा	ऽ	त	पि	छौ	ऽ	री	ऽ	ऊ	ऽ	प	र
×				×				×				×			

⊙ यह कड़ी दो बार गायी जायेगी ।

– शेष अगले पृष्ठ पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ध	ध	ध	–	ध	प	प	म	रे	रे	रे	रे	प	प	म
अ	मि	त	रं	ऽ	ग	ढ	र	का	ऽ	यो	आ	ऽ	ज	ये	ऽ
×				×				×				×			
म	रे	रे	—	रे	—	सा	रे	नी़	सा	सा	—	—	—	—	—
हो	ऽ	री	ऽ	खे	ऽ	ल	न	आ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी ।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४

धमार

जमुना तट श्याम खेलें होरी ।। जमुना तट……

जमुना तीर भीर सखियन की,
कोई साँवर कोई है गोरी ।। जमुना तट……

बाजत बीन, मृदंग, झांझ ढफ,
नाचत कृष्ण राधे गोरी ।। जमुना तट……

चंदन, कुम-कुम, कीच मची है,
कुश पाग केसर बोरी ।। जमुना तट……

ताकि ताकि पिचकारी चलावत,
अबीर गुलाल भरे झोरी ।। जमुना तट……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार (कहरवा)

स्थाई

			नी़ नी़
			ज मु
प़ — नी़ नी़	सा — सा सा	रे सा रे प	म ग रे सा
ना ऽ त ट	श्या ऽ म खि	लैं ऽ हो ऽ	री ऽ ज मु
×	×	×	×
रे — सा सा	— — म म	म — म म	म — म ग
ना ऽ त ट	ऽ ऽ ज मु	ना ऽ त ट	श्या ऽ म खि
×	×	×	×
रे सा रे प	म ग रे सा	रे — सा सा	— — नी़ नी़
लैं ऽ हो ऽ	री ऽ ज मु	ना ऽ त ट	ऽ ऽ ज मु
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे	रे	म	—	प	—	प	प	म	म	प	प	प	प	म	गरे
ज	मु	ना	ऽ	ती	ऽ	र	भी	ऽ	र	स	खि	य	न	की	ऽ
×				×				×				×			
नी	नी	नी	नी	नी	नी	ध	प	रे	—	रे	प	म	ग	रे	सा
को	ई	साँ	ऽ	व	र	को	ई	हैं	ऽ	गो	ऽ	री	ऽ	ज	मु
×				×				×				×			

रे	—	सा	सा	—	—	ऩी	ऩी
ना	ऽ	त	ट	ऽ	ऽ	ज	मु
×				×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार [अवधी]

बाजै बाजै बंसी, मुरचंग संख–
धुन छाय रही बृन्दावन मां ॥

काहे की तोरी बांसुरी रे बांसुरी,
काहे की मुरचंग संख ॥ धुन छाय रही……

सोनै की मोरी बांसुरी रें बांसुरी,
रूपे की मुरचंग संख ॥ धुन छाय रही……

का मुख सोहै बांसुरी रे बांसुरी,
ओ, काके मुख मुरचंग संख ॥ धुन छाय रही……

कान्हा मुख सोहै बांसुरी रे बांसुरी,
ओ, राधे मुख मुरचंग संख ॥ धुन छाय रही……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार (कहरवा)

स्थाई

			प प
			बा जै
प प प —	नी म प नी	सां — सां नी	— प म प
बा जै बं ऽ	सी ऽ मु र	चं ऽ ग सं	ऽ ख घु न
×	×	×	×
रे — रे म	म नी प —	रे म रे रे	सा — — —
छा ऽ य र	ही ऽ वृं ऽ	दा ऽ ब न	मैं ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म — प —	नी — नी नी	— सां — नी	सां रें रें —
का ऽ हे ऽ	की ऽ तो री	ऽ बां ऽ सु	री ऽ रे ऽ
×	×	×	×
— सां रें नी	सं मं रे —	— सां रे नी	सां — — —
ऽ बां ऽ सु	री ऽ रे ऽ	ऽ बां ऽ सु	री ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

⊙ उपरोक्त कड़ी दो बार गायी जायेगी।

नी — प —	नी म प नी	सां — सां नी	— प म प
का ऽ हे ऽ	की ऽ मु र	चं ऽ ग सं	ऽ ख धु न
×	×	×	×
रे — रे म	म नी प —	रे म रे रे	सा — — —
छा ऽ य र	ही ऽ बूं ऽ	दा ऽ ब न	मै ऽ बा जे
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डेढ़ताल (स्वर्निमित)

यह गीत भी 'चौताल' की तरह होता है, और होली के अवसर पर ही गाया जाता है। धुन 'चौताल' से कुछ अलग है, मगर गाने का ढ़ंग बहुत कुछ चौताल से मिलता है, अतः इसे 'चौताल' का ही एक रुप कहा जा सकता है। इसका छन्द 'चौताल' से बड़ा है। इसमें मात्राएं भी ज्यादा होती हैं।

डेढ़ताल गीत सहगान के रूप में गाया जाता है। इसे स्त्री-पुरुष मिलकर गाते हैं। इसमें ढफ़, ढ़ोल, झाँझ, मंजीरा, चिकारा, बांसुरी इत्यादि वाद्य-यंत्र बजाये जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डेढ़ताल [स्वनिर्मित]

सखी फागुन मास नियराये,
अरे, मोर प्रियतम नाहीं घर आये, हमैं तरसाये ॥

टेसू फूल आम बौराने, गेंदा फूल फूल हरसाने,
सरसों फूल सुहाये ॥ अरे, मोरे प्रियतम……

सीतल मन्द सुगन्ध बयरिया, मनमा हूक उठावै कोयलिया,
मोहे पलछिन बिरह सताये ॥ अरे, मोरे प्रियतम……

सब सखियाँ मिल रास रचावैं, प्रियतम संग मिल फगुवा गावैं,
मोर जिया अकुलाये ॥ अरे, मोरे प्रियतम……

मैं कहिके संग होरी खेलों, नित अपनें मनमा बिस घोलौं,
मोहे निसदिन बिरह सताये ॥ अरे, मोरे प्रियतम……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डेढ़ताल (चांचर)

स्थाई

			सा — ऩी —
			स ऽ खी ऽ
			३
सा — —	रे — रे —	ग म ग	(स)रे — सा सा
फा ऽ ऽ	गु ऽ न ऽ	मा ऽ ऽ	स ऽ नि य
×	२	०	३
सा — —	सा — ग —	ग — —	ग — ग रे
रा ऽ ऽ	ये ऽ अ ऽ	रे ऽ ऽ	मो ऽ रे ऽ
×	२	०	३
म म —	म — म पम	ग ग रे	स — रे —
प्रि य ऽ	त ऽ म ऽऽ	न हीं ऽ	घ ऽ र ऽ
×	२	०	३
ऩी — —	सा — म —	ग ग रे	सा — रे —
आ ऽ ऽ	ये ऽ ह ऽ	मैं ऽ ऽ	त ऽ र ऽ
×	२	०	३
ऩी — —	— — — —	सा — —	सा — ऩी —
सा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ	स ऽ खी ऽ
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा (कहरवा)

म — म —	ग — म ग	— ग ग रे	सा — रे —
टे ऽ सू ऽ	फू ऽ ल आ	ऽ म बौ ऽ	रा ऽ ने ऽ
×	×	×	×
म — म —	म – म ग	— ग ग रे	सा – रे –
गैं ऽ दा ऽ	फू ऽ ल फू	ऽ ल ह र	सा ऽ ने ऽ
×	×	×	×

⊙ उपरोक्त दोनों कड़ियां दो बार गायी जायेंगी।

रे ग ग म	ग रे सा रे	नी़ — — —	सा — — —
स र सौ ऽ	फू़ ऽ ल सु	हा ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

चांचर

नी़ सा —	रे — ग —	सा रे —	म — म —
सी ऽ ऽ	त ऽ ल ऽ	म ऽ ऽ	द ऽ सु ऽ
×	२	०	३
म ग —	रे — ग —ग	सा सा —	सा — — —
गं ऽ ऽ	ध ऽ ब ऽऽ	य रि ऽ	या ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नी̣	सा	—	रे	—	ग	—	सा	रे	—	म	—	म	—
म	न	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	हू	ऽ	ऽ	क	ऽ	उ	ऽ
×			२				०			३			
म	ग	—	रे	—	ग	मग	सा	सा	—	सा	—	—	—
ठा	ट	ऽ	बैं	ऽ	को	ऽऽ	य	लि	—	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

⊙ उपरोक्त दोनों कड़ियाँ दो वार गायी जायेंगी ।

सा	—	नी	—	सा	सा	—	रे	—	रे	—	ग	म	ग
मो	ऽ	हे	ऽ	प	ल	ऽ	छि	ऽ	न	ऽ	चैं	ऽ	ऽ
२				०			३				×		
रे	—	सा	—	सा	—	—	सा	—	ग	—	ग	—	—
न	ऽ	न	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	अ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
२				०			३				×		
ग	—	ग	रे	म	म	—	म	—	म	मप	ग	ग	रे
मो	ऽ	रे	ऽ	प्रि	य	ऽ	त	ऽ	म	ऽऽ	ना	ही	ऽ
२				०			३				×		

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा — रे —	ऩी — —	सा — म —	ग ग रे
घ ऽ र ऽ	आ ऽ ऽ	ये ऽ ह ऽ	मे ऽ ऽ
२		३	×
सा — रे —	ऩी — —	— — — —	सा — —
त ऽ र ऽ	सा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ
२	०	३	×

टीप: शेष अंतरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे। मध्यम को स्वर मान कर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

जब स्त्रियाँ गंगा स्नान को अथवा किसी मेले में जाती हैं, तब राह काटने एवं श्रम भुलाने के लिए, झुंड के झुंड आपस में मिलकर, समवेत स्वर में इन गीतों को गाती हैं। ये गीत ढोलक-मंजीरे के साथ अथवा उनके बिना भी राह चलते गाये जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

आज मोहे रघुबर की सुधि आयी।

घर के रथवा रामघर ही छोड़त है,
पायन चलत हुइहैं दोऊ भाई ॥

घर के जेउना रामघर ही छोड़त है।
भूखन रहुत हुइहैं दोऊ भाई ॥

घर के गड़ुआ रामघर ही छोड़त है।
प्यासन रहुत हुइहैं दोऊ भाई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेलागीत (कहरवा)

स्थाई

सा सा रे ग॒	रे सा रे ग॒	रे ग॒ रे सा	सा — सा —
आ जा मो हे	र घु व र	की ऽ सु ध	आ ऽ यी ऽ
×	×	×	×

अंतरा

ग म — म	म म म म	गग रे — ग॒	रे रे सा —
घर को ऽ र	थ वा रा ऽम	घर ही ऽ छो	ड़ त है ऽ
×	×	×	×
सा सा रे ग॒	रे सा रे ग॒	रे ग॒ रे सा	सा — सा —
पा य न च	ल त म्हु रें	हैं ऽ दो ऊ	भा ऽ ई ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

मैया की ऊँची नीची सुन्दर लहरिया ।। चलो री सखी ना
करै गंगा असननवा ।। चलो री सखी ना
करि असनान हम करबै पुजनिया ।। चलो री सखी ना
भोले बाबा से अरिजया ।। चलो री सखी ना
ऐ भोले बाबा तोहका जलवा चढ़ंबै ।। चलो री सखी ना
कँदै पिया ते मिलनवाँ ।। चलो री सखी ना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेलागीत (कहरवा)

— सा सा प	प प प धप	म म ग रे	रे ग म म
ऽ मै या की	ऊँ ची नी चीऽ	सु न्द र ल	ह रि या च
×	×	×	×
ग मग रे सा	सा सा सा सा	ग ग ग सा	रे ग म म
लो रीऽ स खी	ना ऽ क रैं	गं गा अ स	न न वा च
×	×	×	×
ग मग रे सा	सा — — —		
लो रीऽ स खी	ना ऽ ऽ ऽ		
×	×		

टीप : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

मैं तो चली बद्रीनाथ,
डुरिया लगैयो भगवान जी।

पहली चढ़ाई चन्डी देवी की।
जहाँ बसै मोरी माय ॥ डुरिया···

एक तो चलत पग थाके ॥
दुजे नाहीं कोऊ साथ,
अब तो मैं शरण तिहारी,
मोरा धर लेऊ हाथ ॥ डुरिया····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेलागीत (कहरवा)

स्थाई

नी़ सा	रे ग सा रे	— ग — रे	सा सा नी़ नी़
मै तो	च, ली ब द्री	ऽ ना ऽ थ	डु रि या ल
×	×	×	×
सा सा रे ग	रे — सा —	— — नि़ सा	
गै यो भ ग	वा न जी ऽ	ऽ ऽ मै तो	
×	×	×	

अन्तरा

— — ग ग	म — — म	ग सा‿रे ग गम	ग — सा सा
ऽ ऽ पै ह	ली ऽ ऽ च	ढ़ा ईऽ च न्डी	दे वी की च
×	×	×	×
रेग सारे ग म	ग ग स —	— — नी़ सा	रे ग सा रे
ढऽ ईऽ च न्डी	दे वी की ऽ	ऽ ऽ ज हाँ	ब सै मो री
×	×	×	×
— ग — रे			
ऽ मा ऽ य			
×			

डुरिया लगैयो भगवान जी

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त स्वरों में गायी जायेंगी ।
मध्यम को स्वर मानकर इस गाने को गाना चाहिए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

रघुबर संग जाब, हम ना अवध मा रहिवै।

जो रघुबर रथ चढ़ जैहैं,
पैदल चलि जाब ।। हम ना अवध मा रहिवै

जो रघुबर पात बिछैहैं,
भुइयाँ हम सोई जाब ।। हम ना अवध मा रहिवै

जो रघुबर बन फल खैहैं,
फोकली बिन खाब ।। हम ना अवध मा रहिवै

जो रघुबर कै लगि है पियसिया,
हम जल भर लाब ।। हम ना अवध मा रहिवै

जो रघुबर कै लगिहै गरिमिया,
हम बेनिया डुलाब ।। हम ना अवध मा रहिवै

जो रघुबर करिहैं सैनियां,
हम चरण दबाब ।। हम ना अवध मा रहिबैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेलागीत (कहरवा)

स्थाई

नी̣	सा
र	घु

रे	(म) ग	सा	रे	—	ग	—	रे	सारे	नी̣	—	नी̣	सा	सा	रे	ग
ब	र	सं	ग	ऽ	जा	ऽ	व	हम	ना	ऽ	अ	व	ध	मा	ऽ
×				×				×				×			

रे	रे	सा	—	—	—
र	हि	वँ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

			ग —
			जो ऽ
म म म म	ग सा रे गम	ग सा — सा	रेग सारे ग म
र घु व र	र थ च ढ़ऽ	जं हैं ऽ हाँ	रऽ थऽ च ढ़
×	×	×	×
ग — सा —	— — ऩी सा	रे (म)ग सा रे	— ग ऽ रे
जँ ऽ हैं ऽ	ऽ ऽ पैं ऽ	द ल च लि	ऽ जा ऽ ब
×	×	×	×
सारे ऩी — ऩी	सा सा रे ग	रे रे सा —	— —
हुम ना ऽ अ	व ध मा ऽ	र हि बै ऽ	ऽ ऽ
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी ।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

'रसिया' ब्रजभूमि का सबसे अधिक लोकप्रिय गीत है। यों तो ब्रज में और भी लोकगीत गाये जाते हैं। जैसे ढोला, मल्हार, हिंडोला, फाग इत्यादि। परन्तु, 'रसिया' की लोकप्रियता ने उन सबको ढक लिया है। शायद, इसीलिए ब्रज में रसिया बारहों महीने गाया जाता है।

रसिया अनेक धुनों में गाया जाता है और अनेकानेक कथानक इसमें जुड़े हुए हैं। जैसे, दधिलीला, लिलिहारी लीला, गोवर्धन लीला इत्यादि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

अपनौं बृज देखन कौ आय जैयो,
गिरधारी कुंवर कन्हैया ।
गिरधारी कुंवर कन्हैया,
ओ बलदाऊ के भैया ॥ अपनौं····

अब गाँव गाँव मैं कुंजै,
कुंजन मैं भंवरा गुंजै ।
अरे नैक बिन मैं रास रचाय जैयौ ॥
गिरधारी कुंवर कन्हैया, अपनौं····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

म म म प	ग॒ ग॒ ग॒ रे	सा सा सा नी़	सा सा रे —
अ प नो ऽ	बू ज दे ऽ	ख न को ऽ	आ य जै ऽ
×	×	×	×
ग॒ — ग॒ रे	सा — सा रे	नी़ नी़ नी़ नी़	सा — सा —
यो ऽ गि र	धा ऽ री ऽ	कुं व र क	न्है ऽ या ऽ
×	×	×	×
— — सा सा	रे — रे —	म म म म	प — प —
ऽ ऽ गि र	धा ऽ री ऽ	कुं व र क	न्है ऽ या ऽ
×	×	×	×
— — प —	प ग ध नीध	म — प धप	ग॒ — ग॒ रे
ऽ ऽ ओ ऽ	ब ल दा ऽऽ	ऊ ऽ के ऽऽ	मै ऽ या ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा सा
अ ब

रे — रे रे	म म म —	प — प —	— — प —
गाँ S व गाँ	S व मैं S	कुं S जैं S	S S कुं S
×	×	×	×
प प ध नीध	म म प धप	ग॒ — ग॒ रे	रे म म म
ज न मैं SS	भ व रा SS	गुं S जै S	अ रे नै क
×	×	×	×
ग॒ ग॒ ग॒ रे	सा — सा नी़	सा — रे —	ग॒ — ग॒ रे
बि न मै S	रा S स र	चा S जैं S	यो S गि र
×	×	×	×
सा — सा रे	नी़ नी़ नी़ नी़	सा — सा —	
धा S री S	कुं व र क	न्है S या S	
×	×	×	

टीप : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

आज बिरज मैं होरी है, रे रसिया।
होरी है रे रसिया, बरजोरी है रे रसिया ॥ आज ....

इत सैं श्याम सखा संग निकसे,
उत ब्रखभानु दुलारी है रे रसिया ॥ आज ....

उड़त गुलाल लाल भये बादर, ।
केसर की पिचकारी है रे रसिया ॥ आज....

बाजत बीन, मृदंग, पखावज, ।
गावत दै दै तारी है रे रसिया ॥ आज....

श्याम श्याम मिल होरी खेलैं,
तन मन धन बलिहारी है रे रसिया ॥ आज....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

— ध़ ध़ नी़	सा सा सा —	सारे रेम म मग	रे रे सा —
ऽ आ ज वि	र ज मैं ऽ	होऽ रीऽ है रेऽ	र सि या ऽ
×	×	×	×
म म म म	म म म मग	सा रे म ग	रे रे सा —
हो री है रे	र सि या बर	जो री है रे	र सि या ऽ
×	×	×	×

⊙ उपरोक्त दोनों कड़ियाँ हमेशा साथ-साथ गायी जायेंगी।

अन्तरा

— प प धप	म — म मग	सा रें म ग	रे रे सा —
ऽ इ त सैंऽ	श्या ऽ म सऽ	खा ऽ सं ग	नि क से ऽ
×	×	×	×
— ध़ ध़ नी़	सा — सा सा	सारे रेम म मग	रे रे — सा
ऽ उत ब्र ख	भा ऽ नु दु	लाऽ रीऽ है रेऽ	र सि या ऽ
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (बाल लीला)

छूम छूम छुन नन छुन नन ननन,
प्यारै की पैंजनिया बाजै रे।
लाला की पैंजनिया बाजै रे॥

जसुमति सुत कौ नचन सिखावत,
अंगुरी पकर बिचकनिया॥ प्यारै की ····

अंग अंग राजत आभूषण,
कटि सोहै करधनिया॥ प्यारै की ····

पीत झंगुलिया कटि पै सोहै,
सिर टोपी लटकनिया॥ प्यारै की ····

तीन लोक जाके उदर बसत हैं,
ताहि नचावै नवरनिया॥ प्यारै की ····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

रसिया [कहरवा]

स्थाई

नी़	—	नी़	नी़	सा	सा	रे	म	ग	ग	सा	नी़	सा	सा	सा	रे
छू	ऽम	छू	ऽम	छ	न	न	न	छ	न	न	न	न	न	न	प्या
×				×				×				×			
रे	रे	रे	ग	सा	रे	सा	नी़	सा	—	रे	ग	रे	—	—	रे
रे	की	पै	ऽ	ज	नि	या	ऽ	बा	ऽ	जै	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ल
×				×				×				×			
रे	रे	रे	ग	सा	रे	सा	नी़	सा	—	रे	ग	रे	—	—	—
ला	की	पै	ऽ	ज	नि	या	ऽ	बा	ऽ	जै	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रें	रें	म	प	प	प	प	—	म	म	प	प	मप	धप	म	गरें
ज	सु	म	त	सु	त	को	ऽ	त	च	न	स	खाऽ	ऽऽ	व	तऽ
×				×				×				×			
म	म	म	म	म	म	म	मग	रेग	ग	—	रे	रें	रें	रें	ग
अँ	गु	री	प	क	र	बि	चऽ	कनि	या	ऽ	ल	ला	की	पैं	ऽ
×				×				×				×			
सा	रे	सा	ऩी	ऩी	सा	रे	ग	रे	—	—	—				
ज	नि	या	ऽ	बा	ऽ	जै	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ				
×				×				×							

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

जसोदा तेरे लाला नें माटी खायी ॥
अद्भुत खेल सखिन खेलौ,
छोटौ सौ बृजरज कौ डेलौ,
तुरत श्याम नें मुख में मेलौ,
मटक—मटक मटकायौ ॥ जसोदा ····

चौं लाला तैंने खायौ माटी,
माखन कूं, कबहूं नहीं नाटी,
धमकावै जसुदा जै सांटी,
नैंक दया नहिं लायौ ॥ जसोदा ····

मुख के माहि आँगुरी मेली,
निकर परौ बृजरज कौ डेलौ,
भौर बड़ौ सखियन कौ मेलौ,
देखो लोग लुगायौ ॥ जसोदा ····

मोहन कौ मुखड़ौ खुलवायो,
तब बिस्वास जसोदे आयौ,
तीनौं लोक भुवन दिखरायौ,
पूरण ब्रह्म कहायो ॥ जसोदा ····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया [कहरवा]

स्थाई

ग
ज

गम	प,धप	म	गम	गम	रेग	ग	गम	रेग	सा	सारे	गम	ग	ग	—	—
सोऽ	दा,ऽऽ	ते	रेऽ	ऽऽ	लाऽ	ला	नेऽ	माऽ	ऽ	टीऽ	ऽऽ	खा	यी	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
मप	मग	रे	गम	प	प	प	पध	मप	मग	रे	गम	पप	प	प	पध
अद्	भुत	खे	लस	खिन	सँग	खेऽ	लोऽ	छोऽ	टोऽ	सो	बृज	रज	कौंऽ	डऽ	लोऽ
×				×				×				×			
मप	मग	रे	गम	पप	प	प	प	—	पसां	सां	सांरे	नी	धप	प	धप
तुर	तय्या	ऽम	नेऽ	मुख	मैं	मेऽ	ली	ऽ	भेंट	क	मऽ	ट	कऽ	म	टऽ
×				×				×				×			

म	गरे	ग	ग
का	यीऽ	ऽ	ज
×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ भी उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

तेरी अधिक अनोखी चाल, नंद के छल बलिया ॥

जा दिन जनम्यौ कारागृह मैं, ता दिन पड़ौ अकाल,
राधे रानी के प्रताप सैं, है गयो मालामाल ॥ नंद के····

राजा ओढ़ै साल दुसाला, और मुतियन की माल,
कारी कामर देई है माय नै, समुझ बिरानौ लाल ॥ नंद के····

राजघरन की रीत न जानै, तू गैयन को ग्वाल,
बाप मरे पै, कंस राजा कौ, पूत भयो भूपाल ॥ नंद के····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया [कहरवा]

स्थाई

														सा	रे
														ते	री
नी	नी	ध	प	पध	नीसा	नी	नी	सा	—	सा	सा	सा	ग	ग	रे
अ	धि	क	अ	नोऽ	ऽऽ	खी	ऽ	चा	ऽ	ल	नं	ऽ	द	के	ऽ
×				×				×				×			
रे	म	ग	रे	सा	—	सा	रे		अधिक अनोखी चाल						
छ	ल	ब	लि	यो	ऽ	ते	री								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

सा	सा	सा	नीसा	ग	ग	ग	गरे	म	म	मम	मप	ग	—	रेग	सा
जा	दिन	जन	मोऽ	का	रा	गृह	मेऽ	ता	दिन	पड़ो	ऽअ	का	ऽ	ऽऽ	ल
×				×				×				×			
प	प	प	प	प	धप	म	म	—	म	म	म	म	ध	प	म
रा	धे	रा	नी	के	प्रता	ऽप	ते	ऽ	है	ग	यो	मा	ऽ	ला	ऽ
×				×				×				×			
ग	—	सा	सा	—	ग	ग	रे	रे	म	ग	रे	सा	—	सा	रे
मा	ऽ	ल	नं	ऽ	द	के	ऽ	छ	ल	ब	लि	या	ऽ	ते	री
×				×				×				×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया [लिलहारी लीला]

बन गये नंदलाल लिलहारी, लीला गुदवालेउ प्यारी,

जाय गलियन मैं करि पुकार,
गोदना गुदवा लेउ बृज नार,
गुदना लेउ गुदाय, नयी आयी गोदनहारी ॥ बन गये....

शीश पै शीश फूल गहना,
लगाम लियो काजर दोऊ नैना,
पैहर लिये नख-शिख से,
हाथ मैं फूलन के कंगना ॥
नख शिख गहना पैहर, कर सोलह श्रंगार,
बलिहारी नंद नंद के नर से बन गये नार ॥
कि झोली कांधे पै डाली ॥ बन गये....

माथे पै लिख दे मदन मुरारि,
कपोलन लिख दै कान कुँआरि,
श्रवण पै लिख दै श्री बृजलाल,
नासिका पै लिखि दै नये लाल,
ठोड़ी पै ठाकर लिखो, रोम रोम पै राम ॥
धन्य धन्य घनश्याम कै हो जाऊँ बलिहार,
कि मुरली अधर धरी प्यारी ॥ बन गये....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया—लिलहारी लीला [कहरवा]

स्थाई

प	ध	म	—	ग	—	ग	सां	—	रे	नीं	नीं	सां	—	सां	—
व	न	ग	ये	नं	ऽ	द	ला	ऽ	ल	लि	ल	हा	ऽ	री	ऽ
×				×				×				×			
रे	प	म	—	ग	—	ग	सा	सा	रे	नी़	—	सा	—	—	—
ली	ऽ	ला	ऽ	गु	द	वा	ऽ	ले	ऊ	प्या	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×											

अंतरा—१

सा

जा

—	सा	नी़	सा	ग	ग	—	—	ग	ग	—	सा	रे	—	—	स
ऽ	य	ग	लि	य	न	मैं	ऽ	क	री	ऽ	पु	का	ऽ	र	गो
×				×				×				×			
—	सा	नी़	सा	ग	ग	ग	—	ग	ग	—	सा	रे	—	—	रे
ऽ	द	ना	ऽ	गु	द	वा	ऽ	ले	उ	बू	ब	ना	ऽ	ऽ	र
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे रे रे —	म — म म	प — प प	धनी पध सा (सां)
गु द ना ऽ	ले ऽ उ गु	दा ऽ य न	यीऽ ऽऽ आ ऽ
×	×	×	×

नी — ध प	प ध म —	म ग रे —
यी ऽ गो ऽ	द न ह्वा ऽ	री ऽ ऽ ऽ
×	×	×

अन्तरा—२

स

शी

— स नी सा	ग ग ग ग	ग ग सा —	रे — — —
ऽ श पे ऽ	शी ऽ श फू	ऽ ल ग ह	ना ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

⊙ इस अंतरे की शेष कड़ियाँ इसी प्रकार गायी जायेंगी।

रे रे रे रे	म म म —	— प प प	प — — —
न ख शि ख	ग ह ना ऽ	ऽ पै ऽ र	कै ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

ध ध ध —	ध ध म —	म प — —	— — — प
क र सो ऽ	ज ह शृं ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध ध ध —	ध — प प	— प ध प	म ग रे —
ब लि हा ऽ	री ऽ नं द	ऽ नं ऽ द	के ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×
रे प म ग	रे ग सा सा	सा — सा सा	सा — नो़ सा
न र से ऽ	ब न ग ये	ना ऽ ऽर कि	झो ऽ ली ऽ
×	×	×	×
ग — ग —	रे ग सा —	रे — — —	
काँ ऽ धे ऽ	पै ऽ डा ऽ	ली ऽ ऽ ऽ	
×	×	×	

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

बिन विद्या भारत देस,
लुट गयो सुन सजनी ॥

विद्या गयी अविधा आयी जब सै भारत देस,
घर घर मै भाई भाई मैं नित उठि होय कलेस ॥ बिन····

रहौ न कोई विद्या कौ धनी,
हेल मेल के पौधा कटि गये ॥ बिन ·· ··

घर घर उपजी फूट,
फूट खाय कै भये बावरे ॥ बिन ·· ···

लै गये बिदेसी धन लूट,
रहौ न कोई विद्या कौ धनी ॥ बिन ··· ···

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

														म	म
														वि	न
गम	सारे	म	—	गम	गरे	रेग	गरे	सा	—	नीध़	प	ध़सा	स	रेग	गरे
विऽ	ऽऽ	द्या	ऽ	भाऽ	ऽऽ	रऽ	तऽ	दे	ऽ	ऽऽ	स	लुऽ	टि	गऽ	योऽ
×				×				×				×			
सारे	मग	गरे	रेस	सा	—	म	म								
सुऽ	नऽ	सऽ	जऽ	नी	ऽ	बि	न								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नी	नी	धध	धप	धसा	सा	रेग	गसा	सारे	मग	रे	रेसा	सा	—	—	सा
वि	द्या	गयी	ऽअ	विऽ	द्या	आऽ	यीऽ	जब	सँऽ	भा	रत	दे	ऽ	ऽ	स
×				×				×				×			
रेरे	रेम	म	म	रे	रेम	म	म	—	रेम	म	म	म	मप	प	पम
घर	घर	मैं	भा	ई	भाऽ	ई	मैं	ऽ	नित	उ	ठि	हो	ऽऽ	य	कऽ
×				×				×				×			
ग	—	सा	सा	सा	साग	ग	गरे	रे	रेम	मग	गरे	सा	—	म	म
ले	ऽ	स	र	हो	नऽ	को	ईऽ	वि	द्याऽ	कोऽ	धऽ	नी	ऽ	बि	न
×				×				×				×			

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (नारायण स्वामी)

मति मारौ दृगन की चोट रसिया,
होरी मै मेरै लगि जायेगी ॥

अबकी चोट बचाय गयी हूँ लाला,
करि घुंघटा की ओट रसिया ॥ मति ···

मैं तो लाज भरी, भरे घर की,
तुम हो बड़े निगोट रसिया ।। मति ···

नारायण तुम वहीं जाय खेलौ,
जहाँ मिले तिहारो जोट रसिया ॥ मति ···

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

			सा रे
			म ती
नि़ सा — सा	सा सा सा रे	नि़ सा — सा	सा ग रे सा
मा रो ऽ भ	ला जी म ती	मा रो ऽ दृ	ग न की ऽ
×	×	×	×
सारे नि़स धनि़ नि़	नि़ सा नि़स रेग	— ग — ग	ग — ग गरे
चोऽ ऽऽ ऽऽ ट	र सि याऽ ऽऽ	ऽ हो ऽ री	मैं ऽ मे रेऽ
×	×	×	×
सा म- ग रे	सा — सा रे		
ल ग जा य	गो ऽ म ती		
×	×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

— ग ग ग	ग — ग गरे	म — म पम	ग ग रे सा
ऽ अ ब की	चो ऽ ट वऽ	चा ऽ य गऽ	यी हूँ ला ला
×	×	×	×
नी़ नी़ सा सा	सा म ग रेस	सारे नी़स धनी़ नी़	नी़ सा नी़सा रेग
क र घुं घ	टा ऽ की ऽऽ	ओऽ ऽऽ ऽऽ ट	र सि याऽ ऽऽ
×	×	×	×
— ग — ग	ग — ग गरे	सा म ग रे	सा — सा रे
ऽ हो ऽ री	मैं ऽ मे रेऽ	ल ग जा य	गी ऽ म ती
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी ।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

मोसौं मोहन प्यारे बोल, खोल मुख धीरे-धीरे से ।
खोल मुख धीरे-धीरे से, खोल मुख धीरे-धीरे से ।।

टटकौ माखन तोहि खवाऊँ,
मधुबन के मीठे फल लाऊँ,
अपने हाथन भोग लगाऊँ, धीरे-धीरे से ।। मोसौं

तोकू लैकै गोद गुदैयाँ,
जमुना तट लौं जाऊँ कन्हैया,
हँस दै नैक नंद के छोरा, धीरे-धीरे से ।। मोसौं

फूले-फूले फूल बीन के,
सुन्दर माला गूँध गूँध के,
अपने हाथन सैं पहराऊँ, धीरे-धीरे से ।। मोसौं

कुँवर कान्ह तुम बुरा न मानौ,
हम सब कूँ अपनौ करि जानौं,
प्रीत पुरानी नयी बनैंगी, धीरे-धीरे से ।। मोसौं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

	म		
ऩी सा रे —	ग — ग गसा	सा रे सा ऩी	सा — सा सा
मो ऽ सौं ऽ	मो ऽ ह नऽ	प्या ऽ रे ऽ	बो ऽ ल खो
×	×	×	×
ऩी सा रे रे	ग — ग गसा	सा रे सा ऩी	सा — — प
ऽ ल मु ख	धी ऽ रे ऽऽ	धी ऽ रे ऽ	से ऽ ऽ खो
×	×	×	×
प प प ध	पध नी नी धप	प ध म ग	म — — ग
ऽ ल मु ख	धीऽ ऽ रे ऽऽ	धी ऽ रे ऽ	से ऽ ऽ खो
×	×	×	×
रे ग सा रे	ग — ग गसा	सा रे सा ऩी	सा — — —
ऽ ल मु ख	धी ऽ रे ऽऽ	धी ऽ रे ऽ	से ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ऩी ऩी ऩी —	ऩी — ऩी ऩी	सा — सा सा	सा — सा —
ट ट को ऽ	मा ऽ ख न	तो ऽ हि ख	बा ऽ ऊँ ऽ
×	×	×	×
ग॒ ग॒ ग॒ ग॒	ग॒ — ग॒ —	रे ग॒ रे सा	सा ग॒ रे —
म धु ब न	के ऽ मी ऽ	ठे ऽ फ ल	ला ऽ ऊँ ऽ
×	×	×	×
म म म —	म — म ग	रे ग ग म	रे — सा रे
अ प ने ऽ	हा ऽ थ न	भो ऽ ग ल	गा ऽ ऊँ ऽ
×	×	×	×
ग॒ — ग॒ ग॒सा	सा रे सा ऩी	सा — — —	ऩी सा रे —
धी ऽ रे ऽऽ	धी ऽ रे ऽ	से ऽ ऽ ऽ	मो ऽ-सौं ऽ
×	×	×	×

टीप : गीत के शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

मोपै कैसी रे मोहनी डारी रे,
चितचोर छैल गिरधारी नै ॥

गृह कारज मै जी न लगत है,
खान पान लगै खारी,
रही न लाज सकुच गुरुजन की,
तन तम सुरति बिसारी बनवारी ॥ मोपै कैसी ...

नारायण मोह समझ बावरी,
हँसत सकल ब्रजनारी ।
चैन न आवै बिरह सतावै,
सूरत देखि तिहारी बनवारी ॥ मोपै कैसी ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

सारे गम म म	गम सारे म म	गम गरे रेग गरे	सा — नी —
हाँऽ ऽऽ मो पै	कैंऽ सीऽ रे मो	ऽऽ हुऽ नीऽ ऽऽ	डा ऽ री ऽ
×	×	×	×
ध़ ध़नी़ प़ प़	प़ध़ ध़सा सा सा	रे ग रे (ग)	सा — सा —
रे ऽऽ चि त	चोऽ ऽऽ र छै	ऽ ल गि र	धा ऽ री ऽ
×	×	×	×
सारे गम म म			
नैंऽ ऽऽ मो पै			
×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नी नी नी —	ध़ ध़ प़ —	ध़ सा सा सा	रे ग ग रे
गृ हु का ऽ	र ज मैं ऽ	जी ऽ न ल	ग त है ऽ
×	×	×	×
रे म म म	ग ग रे ग	सा — सा —	रे म म म
खा ऽ न पा	ऽ न ल गैं	खा ऽ री ऽ	अ रे मो कौं
×	×	×	×
म ग ग ग	रे रे रे ग	सा — — —	सा — — —
खा ऽ न पा	ऽ न ल गैं	खा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

⊙उपरोक्त कड़ियाँ दो बार गायी जायेंगी ।

रे रे — रे	म — म म	प प प प	प प प —
र ही — न	ला ऽ ज स	कु च गु रु	ज न की ऽ
×	×	×	×
— — प सां	सां — सां —	नी — ध —	प — म —
ऽ ऽ त न	म ऽ न ऽ	सु ऽ र ऽ	त ऽ बि ऽ
×	×	×	×
ग — ग रे	म — म —	ग — ग रे	म — म —
सा ऽ री ऽ	ब ऽ न ऽ	वा ऽ री ऽ	मो ऽ पै —
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी और दुगुन में गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

राधा की छवि देख मचल गयो साँवरिया ॥

हँस मुसकाय प्रेम रस चाखूँ,
तोय नैनन बिच ऐसैं राखूँ।
ज्यौं काजर की रेख परैगी तोतें भाँवरिया ॥ राधा

मैं राधा तेरे घट आऊँ,
अँगना मैं बाँसुरी बजाऊँ।
नृत्य करूँ मन खोल कँवल पर पाँवरिया ॥ राधा

बरसाने की राधा प्यारी,
वृन्दावन के कृष्ण मुरारी।
सुख सागर मैं खेल तू राधे बावरिया ॥ राधा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

—	रे	—	रे	रे	म	ग॒	रे	सा	—	सा	म	ग॒	रे	सा	नी़
ऽ	रा	ऽ	धा	फी	ऽ	छ	वि	दे	ऽ	ख	म	च	ल	ग	यो
×				×				×				×			
सा	—	रे	रे	सारे	ग॒	रे	ग॒	सा	रे	—	रे	रे	म	ग	रे
साँ	ऽ	व	रि	याऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	धा	की	ऽ	छ	वि
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

— रे म म	प — प प	म म प प	मप धप म गर
ऽ हँस मु स	का ऽ य प्रे	ऽ म र स	चाऽ ऽऽ खूं ऽऽ
※	×	×	×
— रे म म	प — प प	म — प प	मप धप म गरे
ऽ तोय नैं ऽ	न न बि च	ऐ ऽ सैं ऽ	राऽ ऽऽ खूं ऽऽ
×	×	×	×
— रे — रे	रे म ग रे	सा — स म	ग रे सा नी
ऽ ज्यौं ऽ का	ज र की ऽ	रे ऽ ख प	रैं गी तो तैं
×	×	×	×
सा — रे रे	सारे ग रे ग	स	
भां ऽ व रि	याऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ	
×	×	×	

टीप : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लंगुरिया

'लंगुरिया' भी 'रसिया' का ही एक प्रकार है। यह ब्रज और बुंदेलखंड में गाया जाता है। इसकी और धुनें उपलब्ध नहीं हैं। केवल यही धुन प्रचलित है। 'लंगुरिया' में विभिन्न प्रकार के विषय समाहित रहते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लंगुरिया

फिर कबहू न मैली होय लंगुरिया,
ऐसी रंग रंग दै चुनरी ॥

अरे हाँ रे लंगुरिया, कौन घाट चुनरी धुई,
और कौन रंग दई बोर ॥ लंगुरिया ऐसी… …

अरे हाँ रे लंगुरिया, रामघाट चुनरी धुई,
और श्याम रंग दी बोर ॥ लंगुरिया ऐसी….

अरे हाँ रे लंगुरिया काहे को कलफ लगायो,
और रंगी कौन बिध बोर ॥ लंगुरिया ऐसी…

अरे हाँ रे लंगुरिया नेह कौ कलफ लगायो,
और खूब रंगी झकझोर ॥ लंगुरिया ऐसी….

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

लंगुरिया (कहरवा)

स्थाई

			सा सा
			फि र
प़ ऩी ऩी ऩी	ऩी सा सा —	सा गरे सा ऩी	स ग रे —
क ब हूँ भ	मैं ऽ ली ऽ	हो ऽऽ य लं	गु रि या ऽ
×	×	×	×
रे रे रे म	ग रे सा रें	ऩी सा — सा	सा — सा सा
ऐ से रं ग	रं ग दै ऽ	चू ऽ ऽ न	री ऽ फि र
×	×	×	×

अन्तरा

			ग ग
			अ रे
ग — सा नी	सा ग रे —	रे — रे म	ग रे सा रे
हाँ ऽ रे लं	गु रि या ऽ	कौ ऽ न घा	ऽ ट चु न
×	×	×	×
नी़ सा — सा	सा — सा सा	प नी़ नी़ नी़	सा सा सा सा
री ऽ ऽ धु	ई ऽ औ र	कौ ऽ न रं	ऽ ग द ई
×	×	×	×
सा गरे सा नी़	स ग रे —	रे रे रे म	ग रे सा रे
बो ऽऽ र लं	गु रि या ऽ	ऐ से रं ग	रं ग दै ऽ
×	×	×	×
नी़ सा — सा	सा — सा सा		
चू ऽ ऽ न	री ऽ फि र		
×	×		

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

'होली' एक उत्सव गीत है। हिंदुओं के प्रमुख त्योहार होली के अवसर पर यह गाया जाता है। रंग खेलती, घूमती टोलियों में लोग मस्त होकर इस गीत को गाते हैं। इसमें, रंग खेलने की विभिन्न भंगिमाओं का रोचक वर्णन मिलता है। ब्रज की 'होली' में कृष्ण और गोपियों की रास-लीला का भी वर्णन मिलता है। प्रायः सभी स्थानों के 'होली' गीतों में झांझ, मृदंग, मंजीरा, ढफ आदि वाद्यों का प्रयोग होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

डगर मोरी छोड़ो श्याम,
बिंध जाउगे नैनन में ॥

जो तेरे मन मैं होरी खेलन की,
तौ चले चलौ कुंजन मैं ॥ डगर····

भूल जाउगे सब चतुराई,
मारूँगी सैनन मैं ॥ डगर····

चोवा चंदन अतर अरगला,
छिड़कोंगी आँगन मैं ॥ डगर····

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

होली (रूपक)

स्थाई

												सा	—
												ह	ऽ
धऩी	प़ध़	—	सा	—	रे	—	ग	म	—	ग	—	सा	—
गऽ	रऽ	ऽ	मो	ऽ	री	ऽ	छो	ऽ	ऽ	ड़ो	ऽ	श्या	ऽ
×			२		३		×			२		३	
धऩी	प़ध़	—	सा	—	रे	—	ग	—	—	ग	—	म	—
ऽऽ	मऽ	ऽ	बिं	ऽ	ध	ऽ	जा	ऽ	ऽ	उ	ऽ	गे	ऽ
×			२		३		×			२		३	
ग	ग	रे	रे	ग	सा	—	रे	—	—	—	—	सा	—
नै	ऽ	ऽ	न	ऽ	न	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ह	ऽ
×			२		३		×			२		३	

अन्तरा

टीप : अन्तरे की पहली कड़ी ताल रहित होगी और दूसरी कहरवा ताल में गायी जायेगी। सम आने पर फिर रूपक ताल में आ जायेंगे। यही क्रम शेष अंतरों में भी चलता रहेगा।

सा — ग मपमप - - — ग — प ध पनी धनी (प) ··

जो ऽ ते रे म न मै ऽ ऽ ऽ हो ऽ री खे लऽ नऽ की ऽऽऽ

म ग

ऽ ऽ

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरवा

ग

तो

ग	ग	ग	म	ग	रे	ग	सा	रे	—	—	स	धनी	पध	सा	रे
च	ले	च	लो	कुं	ऽ	ज	न	मैं	ऽ	ऽ	श्या	ऽऽ	मऽ	तु	म
×				×				×				×			
ग	ग	ग	म	ग	रे	ग	सा	रे	—	—	सा	धनी	पध	सा	रे
च	ले	च	लो	कुं	ऽ	ज	न	मैं	ऽ	ऽ	ड	गऽ	रऽ	मो	री
×				×				×				×			
ग	म	ग	सा	धनी	पध	सा	रे								
छो	ऽ	ड़ो	श्या	ऽऽ	मऽ	बिं	ध								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (भोजपुरी धुन में)

बृज में हरि होरी मचायी ॥
राधे सैन दयी सखियन कौं झुंड झुंड मिल धायीं ॥ बृज....

लपट झपट गयीं श्याम सुन्दर सौं,
करि गहि पकर मंगायी, लाला जी कौ नाच नचायी ॥ बृज....

बाजत बीन, मृदंग, झांझ, ढफ, मजीरा, शहनाई,
उड़त गुलाल लाल भये बादर,
रहे सकल बृज छायी, मनौ मेघवा झर लायी ॥ बृज....

छीन लियो मुख मुरली पीताम्बर, सिर से चुनरी उढ़ायी
बिंदी भाल, नैन बिच काजर, नक बेसर पैहरायी,
लाला जी को नार बनायी ॥ बृज में....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (चांचर)

स्थाई

										म	—	ग	—
										ब्र	ऽ	ज	ऽ
रे	ग	—	म	—	म	—	प	—	—	प	—	म	ग
मैं	ऽ	ऽ	ह	ऽ	रि	ऽ	हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	म	ऽ
×			२				०			३			
म	नी̱	नी̱	ध	—	नी̱	नी	प	ध	—	म	—	ग	—
चा	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बृ	ऽ	ज	ऽ
×			२				०			३			
रे	ग	—	म	—	म	—	प	—	—	प	—	—	—
मैं	ऽ	ऽ	ह	ऽ	रि	ऽ	हो	ऽ	ऽ	री	—	—	—
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा	—	—	रे	—	—	—	रे	ग	—	म	—	प	—
रा	ऽ	ऽ	धे	ऽ	ऽ	ऽ	सै	ऽ	ऽ	न	ऽ	द	ऽ
×			२				०			३			
प	प	ध	ग	—	म	—	रे	ग	—	रे	—	ग	रे
यी	ऽ	ऽ	स	ऽ	खि	ऽ	य	न	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

⊙उपरोक्त दोनों कड़ियां दो बार गायी जायेंगी।

सा	—	—	रे	—	रे	—	रे	ग	—	म	—	प	—
झुं	ऽ	ऽ	ड	ऽ	झुं	ऽ	ऽ	ड	ऽ	मि	ऽ	ल	ऽ
×			२				०			३			
म	—	—	प	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
धां	ऽ	ऽ	यीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
प	प	—	प	—	प	ध	नी	नी	—	सां	—	सां	—
ल	प	ऽ	ट	ऽ	झ	ऽ	प	ट	ऽ	ग	ऽ	यीं	ऽ
×			२				०			३			
रें	गं	—	रें	—	सां	—	नीं	(सां)	—	नी	नी	ध	नी
श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	सु	ऽ	न्द	र	ऽ	सों	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	प	—	प	—	प	ध	नी	नी	—	सा	—	नी	—
ल	प	ऽ	ट	ऽ	क्ष	ऽ	प	ट	ऽ	ग	ऽ	यीं	ऽ
×			२				०			३			
सां	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	नी	सां
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ
×			२				०			३			
रे	गं	—	रें	—	सां	—	नी	सां	—	नी	—	प	ध
श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	सु	ऽ	न्द	र	ऽ	सों	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
नी	नी	—	नी	—	नी	—	सां	सां	—	ध	नी	प	ध
क	र	ऽ	ग	ऽ	हि	ऽ	प	क	ऽ	र	ऽ	म	ऽ
×			२				०			३			
नी	—	—	ध	—	—	प	प	प	—	सां	—	सां	—
गा	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ला	ऽ	जी	ऽ	कीं	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	—	—	सां	—	नी	—	ध	—	—	प	—	—	—
ना	ऽ	ऽ	च	ऽ	न	ऽ	चा	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

प	ध	—
ऽ	ऽ	ऽ
×		

टीप : इस गीत की स्थायी और पहला अन्तरा चांचर ताल में गाये जायेंगे। शेष, अन्तरे कहरवा ताल में गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

मैं तो खेलूँगी, मैं तो खेलूँगी,
मैं तो खेलूँगी कान्हा तोसैं होरी बरजोरी ।। मैं तो……

हम घनश्याम बनब मथुरा मा,
तोहि नवल ब्रज बनिता बनायी ।
क्रीट मुकुट कुंडल हम पहिरब,
तोहका लाल बेनुली पहिरायी ।। मैं तो……

मुरली मधुर लेबि हम हथवा,
चूड़ी पहिराइब कान्हा तोहरी कलाई,
विश्वनाथ धर मुरली अधर पै,
लेहु विपिन कान्हा गरवा लगायी ।। मैं तो……

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (कहरवा)

स्थाई

														सा	रे
														मैं	तो
नी़	सा	सा	—	—	—	सा	रे	नी़	सा	सा	—	सा	प़	म़	प
खे	लूं	गी	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	तो	खे	लूं	गी	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	तो
×				×				×				×			
नी़	नी़	नी़	नी़	सा	—	सा	सा	रे	रेम	म	मग	रे	रे	सा	रे
खें	लूं	गी	का	न्हा	ऽ	तो	सै	हो	रीऽ	ब	रऽ	जो	री	मैं	तो
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प प प ध	म म म मग	सा रे म ग	रे — सा —
हु म घ न	श्या ऽ म बऽ	न व म थु	रा ऽ मा ऽ
×	×	×	×
— म म म	म म म मग	सा रे म ग	रे — सा —
ऽ तो हि न	व ल ब्र जऽ	ब नि ता ब	ना ऽ यी ऽ
×	×	×	×
— प़ नी़ नी़	नी़ नी़ नी़ —	सा सा रे ग	रे रे सा सा
ऽ क्री ट मु	कु ट कुं ऽ	ड ल हु म	प हि र व
×	×	×	×
— म म म	म म म मग	सा रे म ग	रे रे सा रे
ऽ तोहु का ला	ऽ ल बे नुऽ	ली ऽ प हि	रा यी मैं तो
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी।
मध्यम को स्वर मानकर इस गाने को गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

मोरी भीजै रेशम चूनर हो,
मैं कैसे खेलौं होरी ॥

जाओ जाओ मोरी लतपथ सारी,
रँग डारी मोरी चूनर सारी।
सास रिसैहै जब जैहौं घर, मत करौ बाराजोरी रे।
मत करो बाराजोरी रे ॥

श्याम सखा संग खेल मचावत,
बुक्क अबीर गुलाल उड़ावत।
बातन बात भूली ब्रज नागरि, बिहँसि खोरी खोरी रे।
हाँ बिहंसत खोरी खोरी रे ॥

हर्षित नर नारी सब गावत,
श्याम सलौने खूब नचावत।
देव, दनुज, मुनि, किन्नर, हरि के मुख मंडित है रोरी रे।
हाँ मुख मंडित है रोरी रे ॥

राधा श्याम, श्याम भये राधा,
हो गये एक, एक कै आधा।
सराबोर भये आनन्द रंग में, जीवै जोरी जोरी रे।
हाँ जीवै जोरी जोरी रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (कहरवा)

स्थाई

														ऩी	सा
														मो	री
ग	—	ग	—	ग	—	रे	ग	सा	—	सा	रे	सारे	गम	ग	म
भी	ऽ	जै	ऽ	रे	ऽ	ण	म	चू	ऽ	न	र	होऽ	ऽऽ	मै	ऽ
×				×				×				×			
ग	—	ग	—	रे	ग	सा	—	सा	—	सा	—	—	—	ऩी	सा
कै	ऽ	से	ऽ	खे	ऽ	लौं	ऽ	हो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	मो	री
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

ग — ग ग	— ग ग रे	सा सा ग रे	सा ऩी सा —
जा ऽ ओ जा	ऽ ओ मो री	ल त प थ	सा ऽ री ऽ
×	×	×	×
रे ग ग रे	रे म म ग	रे ग ग रे	सा ऩी सा —
रं ग डा ऽ	री ऽ मो री	चू ऽ न र	सा ऽ री ऽ
×	×	×	×
प नी नी नी	नी — नी ध	ध सां सां —	सां — सां सां
सा ऽ स रि	सैं ऽ है ऽ	ज ब जैं ऽ	हों ऽ घ र
×	×	×	×
सां सां सां सां	सां — सां रें	सां नी नी ध	ध प प —
म ति क रो	बा ऽ रा ऽ	जो ऽ री ऽ	रे ऽ हो ऽ
×	×	×	×
प ध ध प	म प पं म	रे म ग रे	सा — ऩी सा
म ति क रो	बा ऽ रा ऽ	जो ऽ री ऽ	रे ऽ मो री
×	×	×	×

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

रंग डारी गिरधारी चुनरिया।
भीज गयी मोरी सारी, चुनरिया ।। रंग डारी

बाराजोरी कर रंग डार दियो है,
ऐसो निपट अनारी, सँवरिया ।। रंग डारी

उड़त गुलाल लाल भये बादर,
केसर की पिचकारी, चुनरिया ।। रंग डारो

बाजत बीन, मृदंग, झाँझ, ढफ,
गावत दै दै तारी, चुनरिया ।। रंग डारी

श्यामा श्याम मिल होरी खेलें,
तन मन धन बलिहारी, चुनरिया ।। रंग डारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (दादरा)

स्थाई

ग	मं	ग̲	रे	म	म	प	प	धप	म	ग	म
रं	ग	डा	री	गि	र	धा	री	चुऽ	न	रि	या
×			×			×			×		
ध	ध	ध	नी̲	प	ध	(सां)	नी̲	धप	म	ग	म
भी	ज	ग	यी	मो	री	सा	री	चुऽ	न	रि	या
×			×			×			×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

टीप—अन्तरे की प्रथम कड़ी ताल में नहीं गायी जायेगी । दूसरी कड़ी कहरवे में गायी जायेगी । यही क्रम सब अन्तरों में होगा ।

ग	म	प	ध	नी	सां	नी	सां	—	—	—	—
बा	रा	जो	री	क	र	रं	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

नी	—	नी	सां	सां	(सां)	नी	ध	—	—	—	—
डा	ऽ	र	दि	यो	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

कहरवा

—	ध	—	ध	ध	नी	प	ध	पध	नी	ध	प	म	ग	म	—
ऽ	ऐ	ऽ	सो	नि	प	ट	अ	नाऽ	ऽ	री	सं	व	रि	या	ऽ
×				×				×				×			

—	ग	म	ग	रे	रे	म	म
ऽ	रं	ग	डा	ऽ	री	गि	र
×				×			

धारी चुनरिया

टीप : गीत की शेष पंक्तियाँ उपरोक्त प्रकार से ही गायी जायेंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

लाला तुम रोको न बाट हमारी।

बरबस मत तकरार मचाओ,
पिचकारी हम पर न चलाओ।
हम ब्रज की ब्रजनारी, हो नारी ॥ लाला

बात सुनौ मोर मन बसिया,
हमका गाय सुनाओ रसिया।
हम तुम पर बलिहारी, हो नारी ॥ लाला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (चांचर)[1]

स्थाई

												ग	—
												ला	ऽ
गम	रेग	—	म	—	प	ध	म	—	—	ग	—	सा	—
लाऽ	ऽऽ	ऽ	तु	ऽ	म	ऽ	रो	ऽ	ऽ	को	ऽ	न	ऽ
×			२				०			३			
सा	—	—	ग रे	—	ग	—	म	—	—	म	—	ग	—
बा	ऽ	ऽ	ट	ऽ	ह	ऽ	मा	ऽ	ऽ	री	ऽ	ला	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म —	रे — ग —	सा रे —	ऩी — सा —
ब र ऽ	ब ऽ स ऽ	म त ऽ	त ऽ क ऽ
×	२	०	३
रे ग —	म — प ध	म ग —	म — — —
रा ऽ ऽ	र ऽ म ऽ	चा ऽ ऽ	ओ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
ग म —	रे — ग —	सा रे —	ऩी — सा —
पि च ऽ	का ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ	ह ऽ म ऽ
×	२	०	३
रे ग —	म — प ध	म ग —	म — — —
प र ऽ	न ऽ च ऽ	ला ऽ ऽ	ओ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
नी नी —	नी — नी —	सां (सां) —	नी ध प ध
ह म ऽ	ब्र ऽ ज ऽ	की ऽ ऽ	ब्र ऽ ज ऽ
×	२	×	३
म ग —	ग म रे ग	म धप ध	म — ग —
ना ऽ ऽ	री ऽ हो ऽ	ना ऽऽ ऽ	री ऽ ला ऽ
×	२	×	३

टीप : गीत का दूसरा अन्तरा भी इसी प्रकार गाया जायेगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ
भरती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi